सम्पादक :—
श्री० रामरखसिंह सहगल

'भविष्य' का चन्दा

वार्षिक चन्दा ... ... ६) रु०
छः माही चन्दा ... ... ५) रु०
तिमाही चन्दा ... ... ३) रु०
एक प्रति का मूल्य ... ≡)
Annas Three Per Copy

सचित्र राष्ट्रीय साप्ताहिक

आध्यात्मिक स्वराज्य हमारा ध्येय, सत्य हमारा साधन और प्रेम हमारी प्रणाली है। जब तक इस पावन अनुष्ठान में हम अविचल हैं, तब तक हमें इसका भय नहीं, कि हमारे विरोधियों की संख्या और शक्ति कितनी है।

तार का पता :—
'भविष्य' इलाहाबाद

एक प्रार्थना

वार्षिक चन्दे अथवा फ़्री कॉपी के मूल्य में कुछ भी नुक़ताचीनी करने में पहिले मित्रों को 'भविष्य' में प्रकाशित अलभ्य सामग्री और उसके प्राप्त करने के असाधारण व्यय पर भी दृष्टि-पात करना चाहिए !

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—वृहस्पतिवार: ८ जनवरी, १९३१ | संख्या ३, पूर्ण संख्या १५

राष्ट्रीय संग्राम की नई क़ुर्बानियाँ

सत्याग्रह अस्त्र ले, अहिंसा का कवच कसे,
राष्ट्र-धर्म-ध्वजा फहरातीं आसमान पर !
बढ़तीं समर में, मिटातीं मानियों का मान;
होतीं क़ुरबान एक देश-अभिमान पर !
विश्व है चकित आज साहस महान पर;
आन पर, शान पर, इन बलिदान पर !
झेल जातीं आपदा; दुरापदाएँ ठेल जातीं,
हँस-हँस जेल जातीं, खेल जातीं जान पर !!

बम्बई की श्रीमती भिखारबाई, जिन्हें विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देने के अपराध में ४½ मास का दण्ड मिला है।

कालीकट की सुप्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्य-कर्त्री—कुमारी ई० नारायणकुट्टी, बी० ए०, जिन्होंने हाल ही में जेल-यात्रा की है।
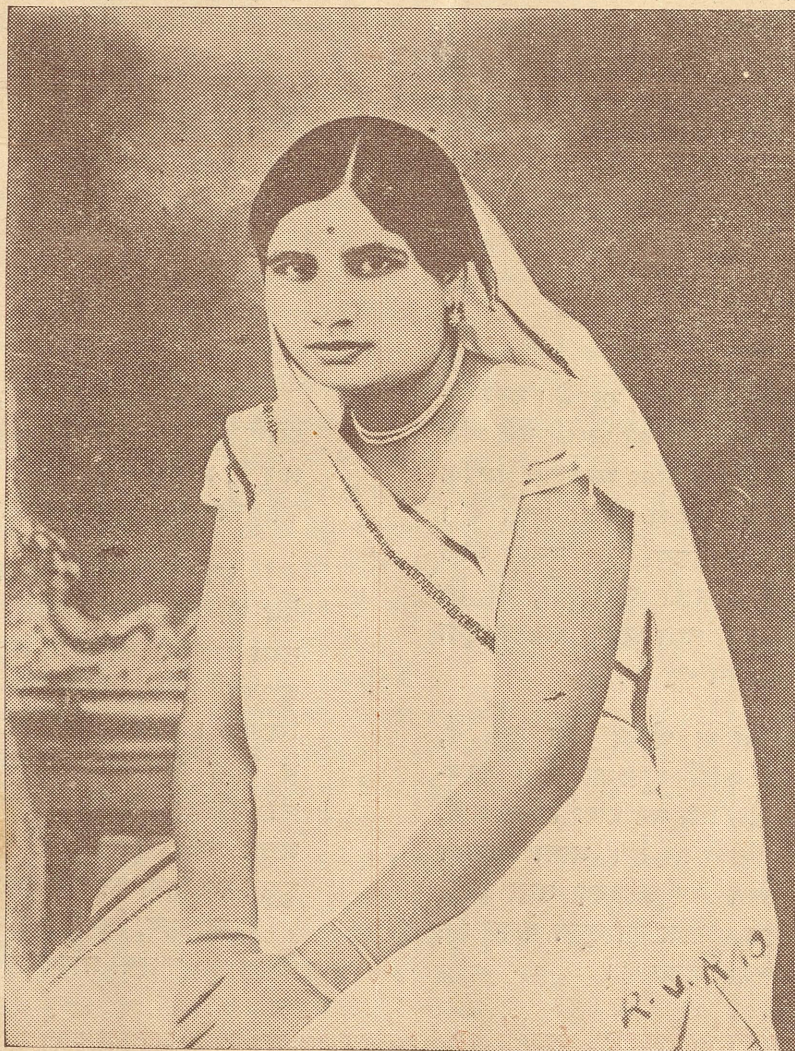
तीरूपुर (मद्रास) 'युद्ध-समिति' की सर्वप्रथम सदस्या श्रीमती पद्मावती अशर—आप बम्बई की सुप्रसिद्ध गुजराती महिला हैं। झण्डा-अभिवादन दिवस को सरकारी आज्ञा का तिरस्कार करने के कारण आपको ६ सप्ताह का कारावास दण्ड दिया गया है।

दक्षिण कनारा महिला-सङ्घ की मन्त्रिणी—श्रीमती रत्नबाई, जो हाल ही में जेल गई हैं।
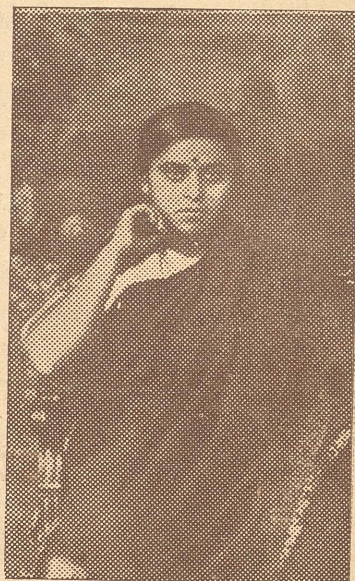
गाँवों में घूम-घूम कर स्वदेशी का प्रचार करने वाली—धारवाड़ की श्रीमती कृष्णाबाई पञ्जीकर, जो इस समय जेल में हैं।

'चाँद' कार्यालय की विख्यात पुस्तकें

निर्वासिता वह मौलिक उपन्यास है, जिसकी चोट से क्षीणकाय भारतीय समाज एक बार ही तिलमिला उठेगा। अन्नपूर्णा का नैराश्यपूर्ण जीवन-वृत्तान्त पढ़ कर अधिकांश भारतीय महिलाएँ आँसू बहावेंगी। कौशलकिशोर का चरित्र पढ़ कर समाज-सेवियों की छातियाँ फूल उठेंगी। उपन्यास घटना-प्रधान नहीं, चरित्र-चित्रण-प्रधान है। निर्वासिता उपन्यास नहीं, हिन्दू-समाज के वक्षस्थल पर दहकती हुई चिता है, जिसके एक-एक स्फुलिङ्ग में जादू का असर है। इस उपन्यास को पढ़ कर पाठकों को अपनी परिस्थिति पर घण्टों विचार करना होगा, भेड़-बकरियों के समान समझी जाने वाली करोड़ों अभागिनी स्त्रियों के प्रति करुणा का स्रोत बहाना होगा, आँखों के मोती बिखेरने होंगे और समाज में प्रचलित कुरीतियों के विरुद्ध क्रान्ति का झण्डा बुलन्द करना होगा; यही इस उपन्यास का संक्षिप्त परिचय है। मूल्य ३) रु०

अनाथ पत्नी

इस पुस्तक में बिछुड़े हुए दो हृदयों—पति-पत्नी—के अन्तर्द्वन्द्व का ऐसा सजीव चित्रण है कि पाठक एक बार इसके कुछ ही पन्ने पढ़ कर करुणा, कुतूहल और विस्मय के भावों में ऐसे ओत-प्रोत हो जायँगे कि फिर क्या मजाल कि इसका अन्तिम पृष्ठ तक पढ़े बिना कहीं किसी पत्ते की खड़खड़ाहट तक सुन सकें।

अशिक्षित पिता की अदूरदर्शिता, पुत्र की मौन-व्यथा, प्रथम पत्नी की समाज-सेवा, उसकी निराश रातें, पति का प्रथम पत्नी के लिए तड़पना और द्वितीय पत्नी को आघात न पहुँचाते हुए उसे सन्तुष्ट रखने को सचेष्ट रहना, अन्त में घटनाओं के जाल में तीनों का एकत्रित होना और द्वितीय पत्नी के द्वारा, उसके अन्तकाल के समय, प्रथम पत्नी का प्रकट होना—ये सब दृश्य ऐसे मनमोहक हैं, मानो लेखक ने जादू की क़लम से लिखे हों!! शीघ्रता कीजिए, केवल थोड़ी ही प्रतियाँ शेष हैं। छपाई-सफ़ाई दर्शनीय; मूल्य केवल लागत मात्र २) स्थायी ग्राहकों से १।)

सन्तान-शास्त्र

पुस्तक का नाम ही उसका परिचय दे रहा है। गृहस्थाश्रम में प्रवेश करने वाले प्रत्येक नवयुवक को इसकी एक प्रति अवश्य रखनी चाहिए। इसमें काम-विज्ञान सम्बन्धी प्रत्येक बातों का वर्णन बहुत ही विस्तृत रूप से किया गया है। नाना प्रकार के इन्द्रिय-रोगों की व्याख्या तथा उनसे त्राण पाने के उपाय लिखे गए हैं। हज़ारों पति-पत्नी, जो कि सन्तान के लिए लालायित रहते थे तथा अपना सर्वस्व लुटा चुके थे, आज सन्तान-सुख भोग रहे हैं।

जो लोग झूठे कोकशास्त्रों से धोखा उठा चुके हैं, प्रस्तुत पुस्तक देख कर उनकी आँखें खुल जायँगी। काम-विज्ञान जैसे गहन विषय पर हिन्दी में यह पहिली पुस्तक है, जो इतनी छान-बीन के साथ लिखी गई है। भाषा अत्यन्त सरल एवं मुहावरेदार; सचित्र एवं सजिल्द तथा तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से मण्डित पुस्तक का मूल्य केवल ४); तीसरा संस्करण अभी-अभी तैयार हुआ है।

मालिका

यह वह मालिका नहीं, जिसके फूल मुरझा जायँगे; इसके फूलों की एक-एक पङ्खुरी में सौन्दर्य है, सौरभ है, मधु है, मदिरा है। आपकी आँखें तृप्त हो जायँगी। इस संग्रह की प्रत्येक कहानी करुण-रस की उमड़ती हुई धारा है।

इन कहानियों में आप देखेंगे मनुष्यता का महत्व, प्रेम की महिमा, करुणा का प्रभाव, त्याग का सौन्दर्य तथा वासना का नृत्य, मनुष्य के नाना प्रकार के पाप, उसकी घृणा, क्रोध, द्वेष आदि भावनाओं का सजीव चित्रण। आप देखेंगे कि प्रत्येक कहानी के अन्दर लेखक ने किस सुगमता और सचाई के साथ ऊँचे आदर्शों की प्रतिष्ठा की है। पुस्तक की भाषा अत्यन्त सरल, मधुर तथा मुहावरेदार है। शीघ्रता कीजिए, अन्यथा दूसरे संस्करण की राह देखनी होगी।

सजिल्द, तिरङ्गे प्रोटेक्टिङ्ग कवर से सुशोभित; मूल्य केवल ४); स्थायी ग्राहकों से ३)

व्यवस्थापिका 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

वर्ष १, खण्ड २ | इलाहाबाद—बृहस्पतिवार—८ जनवरी, १९३१ | संख्या ३, पूर्ण संख्या १५

इङ्गलैण्ड को १८ करोड़ पाउण्ड का भयङ्कर घाटा !

प्रेज़िडेण्ट-पटेल रिहा हुए :: सर्दार-पटेल को ६ मास का दण्ड !

पेशावर का खद्दर-भण्डार ज़ब्त कर लिया गया !!

मौलाना मोहम्मद अली की शोकजनक मृत्यु !

लाहौर के नए षड्यन्त्र केस का उद्घाटन :: लाहौर में ३ क्रान्तिकारियों का अनशन

क्या सर सप्रू "लॉर्ड" बनाए जायँगे :: भारतीय किसानों में भयङ्कर असन्तोष

(८ तारीख के प्रातःकाल तक आए हुए 'भविष्य' के खास तार)

—बम्बई का गत ६ वीं जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत सरदार पटेल पर १७ (१), और १७ (२) धाराओं के अनुसार अभियोग उपस्थित किए गए। प्रत्येक अभियोग के लिए उन्हें ६-६ मास की क़ैद की सज़ा दी गई। दोनों सज़ाएँ साथ ही साथ चलेंगी। मैजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में कहा, कि श्रीयुत पटेल कॉङ्ग्रेस के अध्यक्ष हैं, और इस हैसियत से वे कॉङ्ग्रेस की कार्यकारिणी कमिटी के भी अध्यक्ष हैं, जो ग़ैर-क़ानूनी क़रार दी गई है।

सरदार पटेल ने अपने स्थान पर बिहार के गाँधी—बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी को स्थानापन्न राष्ट्रपति चुना है।

सरदार वल्लभ भाई पटेल ने अपने देशवासियों को निम्नलिखित सन्देशा दिया है :—

"जेल जाने के पहले गुजरात के वीर किसानों से मिल लेने की प्रबल इच्छा थी; बम्बई की जनता से भी, जो भारतीय संग्राम में सब से आगे रही है, मिलने की इच्छा थी; किन्तु ईश्वर की मर्ज़ी कुछ दूसरी ही थी।

"मैं नहीं समझता, कि मुझे कोई नया सन्देशा देना है। पिछले ९ महीनों में हम लोगों ने जो कुछ किया है, उस पर हम गर्व कर सकते हैं; किन्तु हमें अभी बहुत काम करना है। किसी जाति की स्वतन्त्रता-प्राप्ति के लिए बड़ा से बड़ा त्याग भी तुच्छ है; किन्तु हमें यह भूल नहीं जाना चाहिए, हमारे संग्राम का तीन चौथाई हिस्सा अहिंसात्मक है, और चौथाई भाग में त्याग और कष्ट है। यदि हम अहिंसा पर अड़े रहें, और जब तक दम रहे अहिंसा व्रत का पालन करते हुए कष्ट सहन करते रहें, तो विजय अवश्यम्भावी है। विशुद्ध हृदय से जितना अधिक त्याग हम करेंगे, उतनी ही शीघ्र विजय भी हमें प्राप्त होगी; क्योंकि ईश्वर को न्याय करना ही पड़ेगा। वन्देमातरम्।"

—"पायोनियर" को अपने विशेष-सम्वादाता द्वारा ख़बर मिली है, कि भारत में आने वाली कमेटी में श्रीयुत वेजवुड बेन तथा लॉर्ड सेन्की, सर तेज बहादुर सप्रू को भी नियुक्त करेंगे। सुना जाता है वे हाल ही में "प्रिवी कौन्सिल" के मेम्बर बनाए जावेंगे। यह भी सुना जाता है कि जब भारत की नवीन शासन-प्रणाली का प्रस्ताव "हाउस ऑफ़ लॉर्ड्ज़" के सामने पेश होगा, उस समय भी ब्रिटिश सरकार को इनकी सहायता की आवश्यकता पड़ेगी।

—इङ्गलैण्ड की सरकार को वर्तमान औद्योगिक शिथिलता के कारण बहुत बड़ा घाटा उठाना पड़ रहा है। इस साल ख़र्च से कुछ ज़्यादा आमदनी होने की आशा की जाती थी, परन्तु गत ९ महीनों में वहाँ की सरकार को १८ करोड़ पाउण्ड घाटा हो गया है! आगे भी वर्तमान दशा सुधरने की कोई उम्मीद नहीं है, क्योंकि बेकारी दिन पर दिन बढ़ती ही जा रही है।

—ख़बर है कि बेलगाँव के ज़िला मैजिस्ट्रेट ने, वहाँ की प्रभातफेरियों के लिए १४४वीं धारा के अनुसार एक निषेधाज्ञा प्रकाशित की है।

वहाँ के वकीलों ने मैजिस्ट्रेट से उक्त आज्ञा को वापिस ले लेने की प्रार्थना की, किन्तु मैजिस्ट्रेट ने साफ़ इनकार कर दिया। १६०० व्यक्तियों द्वारा हस्ताक्षरित ३४ प्रार्थना-पत्र भी दिए गए हैं।

—नागपुर ६ जनवरी—बुलढाना ज़िले की घटनाओं के सम्बन्ध में मध्यप्रान्तीय सरकार ने एक विज्ञप्ति निकाली है। उसका कहना है कि, वहाँ के ज़मींदारों और महाजनों ने मज़दूरों को उनकी मज़दूरी के लिए पैसे न देकर, अनाज देने की प्रथा जारी करना चाहा था। मज़दूरों ने इसका घोर विरोध किया और अनेक स्थानों पर खेतों से ग़ल्ले की चोरी की गई। यहाँ की जनता भद्र-अवज्ञा-आन्दोलन के द्वारा सार्वजनिक आन्दोलन के महत्व से परिचित हो चुकी है। ये मज़दूर अब स्वयं ऐसा ही सङ्गठन करना चाहते हैं।

मारवाड़ी और ब्राह्मण महाजनों के यहाँ कई डाके डाले गए हैं। पुलिस ने १०० से अधिक गिरफ़्तारियाँ इस सम्बन्ध में की हैं। कहा जाता है कि "परिस्थिति हाथ में आ गई है।"

—लाहौर में पञ्जाब यूनीवर्सिटी के उपाधि-वितरण उत्सव के अवसर पर वहाँ के गवर्नर पर गोलियाँ चलाने के अभियोग में जो गिरफ़्तारियाँ हुई थीं, उनमें से श्री० रणवीरसिंह, वीरेन्द्रनन्द और अहसान इलाही तीन अभियुक्तों ने अधिकारियों के दुर्व्यवहार के विरोध में ५ वीं जनवरी से अनशन प्रारम्भ कर दिया है।

—फ़्री प्रेस जर्नल के सम्पादक श्री० सदानन्द को, कॉङ्ग्रेस बुलेटीन के कुछ अंश प्रकाशित करने के अभियोग में तीन माह की सादी क़ैद और २५० रुपया जुर्माने की सज़ा दी गई है। जुर्माना न देने पर, उन्हें एक माह की सज़ा और भोगनी पड़ेगी।

—मौलाना मुहम्मदअली का, जो कुछ दिनों से लन्दन में अस्वस्थ थे, ४ थी जनवरी को प्रातःकाल साढ़े नौ बजे स्वर्गवास हो गया! आपकी मृत्यु के समय आपकी धर्मपत्नी, आपके भाई मौलाना शौकतअली, आपकी पुत्री तथा दो दामाद आपके पास थे। आपका शरीर अन्त्येष्टिक्रिया के लिए भारत में लाया जायगा। लन्दन का ६वीं जनवरी का समाचार है, कि उनकी लाश भारत भेजने का प्रबन्ध गवर्नमेण्ट की ओर से किया गया है। पेलिस्टाइन के मुसलमानों के नेता ई० आई० हुसेन ने मौ० शौकतअली को इस आशय का तार भेजा है, कि मौ० मुहम्मदअली की लाश जेरूसेलम की अक़्सा की सुप्रसिद्ध मस्जिद में दफ़नाने के लिए भेज दी जाय। गवर्नमेण्ट इस सम्बन्ध में भी परामर्श कर रही है। अपनी मृत्यु के कुछ घण्टे पहिले तक मौलाना साहब ने हिन्दू-मुस्लिम समस्या हल करने का प्रयत्न किया। रात में उन्होंने अपने पुराने वक्तव्य को फिर से ठीक किया और भारत के हिन्दू और मुसलमानों को एक होकर भारत की स्वतन्त्रता की चेष्टा करने का उपदेश दिया। आपकी आलोचनात्मक एवं सचित्र जीवनी "भविष्य" के आगामी अङ्क में प्रकाशित की जायगी।

—एसेम्बली के भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट श्री० विट्ठल भाई पटेल बिना किसी शर्त के आज सवेरे कोइम्बटूर जेल से रिहा कर दिए गए। जनता ने धूमधाम से उनका स्वागत किया। वे आज शाम को मद्रास के लिए रवाना हो जायँगे। शुक्रवार को बम्बई पहुँचेंगे।

—डेरा इस्माईल ख़ाँ का ४थी जनवरी का समाचार है, कि पिछले दिनों सीमा प्रान्त में कॉङ्ग्रेस कमिटियों को क़ानून-विरुद्ध ठहराया गया था। पेशावर कॉङ्ग्रेस कमिटी पर हाल ही में धावा किया गया और साथ ही खद्दर भण्डार पर भी क़ब्ज़ा कर लिया गया था। मैनेजर खद्दर भण्डार से पूछताछ करने पर पता चला है, कि १०००) रु० का खद्दर और ८०) रु० नक़द भी पुलिस ने ज़ब्त कर लिए। चीफ़ कमिश्नर के पास कई प्रार्थना-पत्र भेजे गए हैं, कि खद्दर-भण्डार का कॉङ्ग्रेस से कोई सम्बन्ध न था, परन्तु वहाँ कोई सुनता ही नहीं।

—जेकोबाबाद में ६वीं जनवरी को मौलाना मुहम्मद अली की शोक-सभा में सिन्ध के डिक्टेटर निचलदास, स्थानीय डिक्टेटर डॉ० गोविन्दराम और दो वालण्टियर गिरफ़्तार कर लिए गए।

श्रीमती कमला नेहरू पति के पथ पर !

राष्ट्रपति जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी को छः मास की क़ैद !

स्थानीय 'डिक्टेटर' और राष्ट्रपति पण्डित जवाहरलाल नेहरू की धर्मपत्नी श्रीमती कमला नेहरू १ली जनवरी को प्रातःकाल आनन्द-भवन में गिरफ़्तार कर ली गईं ।

पता चला है कि कमला जी की गिरफ़्तारी क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की धारा १७ (१) तथा भड़काने वाले दूसरे ऑर्डिनेन्स की धारा ३ के अनुसार, गत २६ दिसम्बर को इलाहाबाद ज़िले के कर्मा नामक गाँव में होने वाली एक सार्वजनिक सभा में दिए गए व्याख्यान के कारण हुई । आपको गिरफ़्तार करके ज़िला जेल में रक्खा गया था ।

सुना है, आप शङ्करगढ़ जाने वाली थीं । आपके शङ्करगढ़ जाने की ख़बर पाकर पुलिस ने सब नाके पहले ही से रोक रक्खे थे ।

प्रातःकाल अभी लोग अपने-अपने काम पर जा ही रहे थे कि गिरफ़्तारी का समाचार शहर में बिजली की तरह फैल गया । लोगों ने ख़बर पाते ही अपना कारबार बन्द कर दिया । सन्ध्या-समय स्थानीय खद्दर-भण्डार से एक बड़ा भारी जुलूस निकाला गया, जो शहर की सभी प्रधान-प्रधान सड़कों पर से होता हुआ पुरुषोत्तमदास पार्क में समाप्त हुआ ।

पुरुषोत्तमदास पार्क में श्रीमती उमा नेहरू के सभापतित्व में एक विराट सभा हुई, जिसमें प्रान्तीय 'डिक्टेटर' श्री० पुरुषोत्तमदास जी टण्डन ने यह घोषित किया कि कमलाजी के स्थान पर श्रीमती उमा नेहरू को स्थानीय 'डिक्टेटर' बनाया गया है ।

श्रीमती कमला जी का सन्देश

श्रीमती कमला जी ने गिरफ़्तारी से पहले निम्नलिखित सन्देश दिया—"मुझे आज इस बात का बहुत उल्लास है, कि मैं आज अपने पतिदेव का अनुसरण कर रही हूँ । मुझे आशा है कि लोग झण्डा ऊँचा रक्खेंगे ।"

२री जनवरी को श्रीमती कमला जी मलाका जेल के कोर्ट-रूम में बुलाई गईं और उनको वे धाराएँ बताई गईं, जिनके अनुसार उन पर अभियोग चलाया गया है । ३री जनवरी को कमला जी का मामला फिर श्री० मुहम्मद इशहाक़ मैजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ । मुक़द्दमे की कार्रवाई शीघ्र ही समाप्त हो गई और आपको दोनों जुर्मों में ६-६ मास की सादी क़ैद की सज़ा दे दी गई ।

शुरू से अन्त तक आपने मुक़द्दमे में भाग नहीं लिया । आप मौन रहीं । यद्यपि मैजिस्ट्रेट ने आपको 'ए' क्लास में रक्खे जाने की सिफ़ारिश की है, किन्तु अभी आपके साथ 'बी' श्रेणी के क़ैदियों का सा ही व्यवहार हो रहा है । बाद के समाचार से मालूम हुआ है, कि आप लखनऊ जेल में रक्खी जायँगी ।

—लखनऊ, २री जनवरी का समाचार है, कि कल शाम को १२ स्वयंसेवक हाफ़िज़ अब्दुल रज़्ज़ाक अब्दुल समद की दूकान पर पिकेटिङ्ग करते हुए गिरफ़्तार कर लिए गए । गत सप्ताह में कुल १४० स्वयंसेवक गिरफ़्तार किए जा चुके हैं ।

—बम्बई, ३री जनवरी का समाचार है, श्रीयुत दीक्षित ने (जोकि कॉङ्ग्रेस के एक प्रमुख कार्यकर्ता हैं और जिनको पुलिस गत २५ दिसम्बर से ढूँढ रही थी) अपने आप पुलिस के पास जाकर आत्म-समर्पण कर दिया । उनका मामला २४ और सज्जनों के साथ १० जनवरी को पेश होगा ।

इलाहाबाद में गिरफ़्तारियों की भरमार

इलाहाबाद, २री जनवरी का समाचार है, कि आज मि० मुहम्मद ईशहाक़, मैजिस्ट्रेट ने इलाहाबाद ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी की सहायता करने के अपराध में ३५ सज्जनों को छः-छः मास की कड़ी क़ैद का हुक्म दिया । यह भी सुना गया है कि चालीस सज्जन अभी और ज़िला जेल में बन्द पड़े हैं । उन पर भी इसी अपराध में शीघ्र ही मामला चलाया जायगा ।

कानपुर में बानर-सेना का सत्याग्रह

कानपुर, १ली जनवरी का समाचार है, कि बानर-सेना के छोटे-छोटे लड़के पिछले एक सप्ताह से फूलबाग़ में सत्याग्रह कर रहे हैं । वह किसी प्रकार से फूलबाग़ में घुस जाते हैं और वहाँ जाकर निज को गिरफ़्तारी के लिए पेश कर देते हैं । आज तक ८६ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं । इनमें से आधे छोड़ दिए गए हैं, बाक़ी को जेल भेज दिया गया है ।
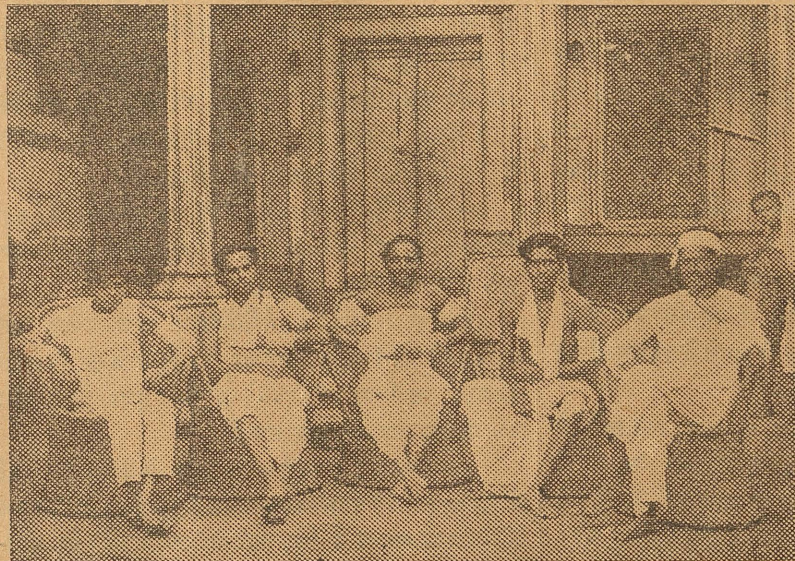
नदियाद के कुछ प्रसिद्ध राष्ट्रीय कार्यकर्ता, जो हाल ही में लाठियों की वर्षा के शिकार हुए थे ।

स्थानीय कॉङ्ग्रेस के मन्त्री गिरफ़्तार

इलाहाबाद, ३री जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत मङ्गलप्रसाद वकील, सेक्रेटरी इलाहाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी को पुलिस ने इलाहाबाद डिस्ट्रिक्ट जेल में गिरफ़्तार कर लिया, जब कि वह श्रीमती कमला नेहरू का मामला सुनने वहाँ गए थे । ज्योंही श्री० मङ्गलप्रसाद जेल के दरवाज़े से बाहर निकले, कि ख़ुफ़िया-विभाग के श्री० भृगुप्रकाश ने उनको गिरफ़्तार कर लिया । श्री० मङ्गलप्रसाद ने वारण्ट देखना चाहा, परन्तु उत्तर मिला कि वारण्ट दिखाने की कोई आवश्यकता नहीं ; गिरफ़्तार करने वाला पुलिस अफ़सर अपनी वर्दी में नहीं था इस कारण से श्री० मङ्गलप्रसाद ने कहा कि मुझे कैसे पता चले, कि आप पुलिस-अफ़सर हैं । परन्तु इसका भी उन्हें कोई उत्तर न मिला ।

बाद का समाचार है, कि ६ठो तारीख़ को ज़िला-जेल में आपके मुक़द्दमे की पेशी हुई, जिसमें आपको बतलाया गया, कि आप भी श्रीमती कमला नेहरू के साथ कर-बन्दी आन्दोलन में भाग लेने के लिए गिरफ़्तार हुए हैं । सरकारी गवाहियाँ हुईं, किन्तु आपने अपने केस में कोई भाग नहीं लिया । आपने केवल अपने बयान में इतना ही कहा कि 'सरकारी गवाहों ने जो कुछ भी बयान किया है, इससे स्पष्ट झूठ हो ही नहीं सकता ! फ़ैसला नहीं सुनाया गया !

देहली जेल में एक बूढ़े स्वयंसेवक का बलिदान

नई देहली, १ली जनवरी का समाचार है, कि चीफ़ कमिश्नर देहली ने अपना एक वक्तव्य छपवाया है, जिस में यह कहा गया है, कि देहली-जेल में लखना गाँव, ज़िला मेरठ के निवासी श्री० तोता के पुत्र श्रीयुत सगवा, जिन पर कि पिकेटिङ्ग के सम्बन्ध में अभी मामला चल रहा था, गत २६ दिसम्बर को न्यूमोनिया से बीमार हुए । पाँच दिन की बीमारी के पश्चात् श्रीयुत सगवा, गत ३० दिसम्बर की रात्रि को नौ बजे स्वर्ग सिधार गए ।

उसके सम्बन्धियों ने उसके मृत-देह पाने के लिए जेल के अधिकारियों से प्रार्थना की, किन्तु पुलिस स्वयं अस्पताल की गाड़ी में लाश ले गई और यमुना के किनारे, कहा जाता है, मृतक देह को 'दफ़न' कर दिया ।

मुज़फ़्फ़रपुर में ३०० गिरफ़्तारियाँ

मुज़फ़्फ़रपुर का १ली जनवरी का समाचार है, कि आज प्रातःकाल स्वतन्त्रता-दिवस के उपलक्ष में स्वयंसेवकों के कई दल बड़े-बड़े तिरङ्गे झण्डे लिए तथा राष्ट्रीय गीत गाते हुए शहर में घूम रहे थे ।

समाचार पाते ही पुलिस के सिपाही चारों ओर भेजे गए और ३०० स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया गया । परन्तु उनमें के अधिकांश कुछ समय के पश्चात् छोड़ दिए गए । केवल २२ स्वयंसेवक जेल में रह गए हैं ।

—लखनऊ, ३१ दिसम्बर का समाचार है कि अमीनाबाद में पिकेटिङ्ग ख़ूब उत्साह से जारी है । पुलिस ने आज दोपहर को इसी सम्बन्ध में ६ सज्जनों को गिरफ़्तार किया है ।

—लखनऊ, २री जनवरी का समाचार है, कि लखनऊ कॉङ्ग्रेस कमिटी के नए 'डिक्टेटर' श्रीयुत चन्द्रभान गुप्त और श्रीयुत जगदम्बाप्रसाद नायक को पुलिस ने कल अमीनाबाद पार्क में स्वतन्त्रता-दिवस सम्बन्ध में राष्ट्रीय झण्डाभिवादन कराने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिया है ।

डॉ० हार्डीकर गिरफ़्तार

बम्बई, १ली जनवरी का समाचार है कि हिन्दुस्तानी सेवा-दल के सञ्चालक, श्रीयुत डॉ० हार्डीकर धारा १७ (१) क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के अनुसार हुबली में गिरफ़्तार कर लिए गए । आपको मुक़द्दमे के लिए बम्बई लाया गया है । पाठकों को स्मरण होगा कि, गत दिसम्बर मास में पुलिस ने हिन्दुस्तानी सेवा-दल के कैम्प पर धावा करके उसके कप्तान सहित ३२ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया था । उसी समय सुना है कि डॉ० हार्डीकर का वारण्ट भी पुलिस ने जारी किया था ।

२ री जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने डॉ० हार्डीकर के १० जनवरी तक हिरासत में रखने की आज्ञा कोर्ट से ले ली है । मैजिस्ट्रेट ने कहा, कि यदि डॉक्टर साहब चाहें, तो एक सौ की ज़मानत देकर छूट सकते हैं, परन्तु डॉक्टर साहब ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया ।

जेल का क़ानून भङ्ग

सत्याग्रही क़ैदियों को कड़ी सज़ाएँ

इलाहाबाद, ३ जनवरी । आज नैनी सेन्ट्रल जेल में मि० मुहम्मद इशहाक़ मैजिस्ट्रेट के सामने जेल क़ानून को तोड़ने के अपराध में, सात सत्याग्रही क़ैदियों का मामला पेश हुआ । अभियुक्तों के नाम यह हैं :—

श्री० अब्दुल मुहम्मद ज़ैदी, मुज़फ़्फ़र हुसेन, गुरु नारायण खन्ना, ओङ्कारनाथ, बन्शीधर, रूपनरायण और यूसुफ़ हुसेन । पाठकों को स्मरण होगा, ये पाँचों अभियुक्त सत्याग्रह के सम्बन्ध में कड़ी क़ैद भोग रहे हैं ।

मैजिस्ट्रेट ने अपने फ़ैसले में कहा कि अभियुक्तों ने भूख-हड़ताल स्वयं भी की और जेल के दूसरे क़ैदियों से भी करवाई, इसके अलावा उन्होंने क्रान्तिकारी नारे लगाए तथा गिनती के समय उपस्थित होने से साफ़ इन्कार कर दिया ।
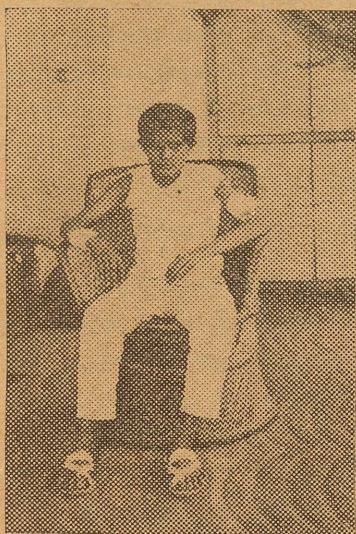
नदियाद बानर-सेना का १४ वर्षीय नेता—श्री० मनीभाई ; जिस पर राष्ट्रीय झण्डे की मान-रक्षा के अपराध में लाठियों का प्रहार हुआ था ।

सभी अभियुक्त, चूँकि जेल में सर्वप्रिय हो गए थे और इनका बड़ा मान होता था, इसी कारण से अभियुक्त शरारत करने में ख़ूब सफल होते रहे । जेल के अधिकारियों की बार-बार चेतावनी देने पर भी अभियुक्त अपने कृत्यों से बाज़ न आए ।

अभियुक्तों का कहना है, कि चूँकि उनकी शिकायतें गिनती के समय सुनी नहीं जाती थीं, इसी कारण से उन्होंने जेल क़ानून को भङ्ग किया । दूसरा कारण था एक छोटे बच्चे को, जो क़ैद में बन्द था, कोड़े लगाने की अमानुषिक सज़ा । तीसरा कारण यह था, कि जब दारोग़ा-जेल से यह शिकायत की गई, तो उत्तर मिला कि जो कोई जेल में इन्सपेक्टर जनरल के आने पर शरारत करेगा, उसको भी बेतों की सज़ा मिलेगी । मैजिस्ट्रेट ने फ़ैसले में कहा है, कि चूँकि यह साबित हो चुका है कि ये अभियुक्त जेल-नियम तोड़ने पर तुले हुए थे, इसलिए मैं इनको अधिक से अधिक सज़ा देता हूँ ।

सातों अभियुक्तों को एक-एक साल की कड़ी क़ैद की सज़ा सुनाई गई । श्री० गुरुनारायण खन्ना की पहिली सज़ा समाप्त हो चुकी थी और इस नए अभियोग में वे ज़मानत पर छोड़ दिए गए थे, किन्तु अब वे फिर पकड़ लिए गए हैं ।

—मद्रास का ३री जनवरी का समाचार है, कि दो और स्वयंसेवक विदेशी कपड़े की दूकान पर धरना देने के अपराध में गिरफ़्तार कर लिए गए ।

—बनारस का ९वीं जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने गाँजे की दूकान पर धरना देने के अपराध में छः स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार कर लिया ।

नागपुर में ८ देश-सेविकाएँ गिरफ़्तार

नागपुर का ३री जनवरी का समाचार है कि विदेशी कपड़े की दूकानों पर पिकेटिङ्ग करने के अपराध में ८ देश-सेविकाएँ गिरफ़्तार कर ली गईं ।

—धारवाड़, ३१ दिसम्बर का समाचार है कि गदग के एक वकील श्रीयुत दत्तात्रेय नागदिर को क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट के आधार पर गिरफ़्तार करके उन पर अभियोग चलाया गया । उन्होंने अदालत की कार्यवाही में भाग लेने से इन्कार कर दिया । मैजिस्ट्रेट ने आपको छः मास की कड़ी क़ैद और २००) रु० जुर्माना की सज़ा दी है ।

—सूरत का ९वीं जनवरी का समाचार है कि सूरत कॉङ्ग्रेस कमिटी के 'डिक्टेटर' श्री० रामचन्द्र विद्यानन्द पाण्डेय आज प्रातःकाल गिरफ़्तार कर लिए गए ।

—इटावा का ९वीं जनवरी का समाचार है, कि कॉङ्ग्रेस तथा हिन्दू-सभा के प्रसिद्ध कार्यकर्ता पं० रामकुमार त्रिपाठी, कल भड़काने वाले दूसरे ऑर्डिनेन्स के अनुसार गिरफ़्तार कर लिए गए ।

—नई दिल्ली, ३री जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने कॉङ्ग्रेस-दफ़्तर पर धावा किया और ३२ स्वयंसेवकों को गिरफ़्तार किया, पर पीछे सब छोड़ दिए गए ।

—मुज़फ़्फ़रपुर, ९वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० शिवकुमार को एक साल की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है ।

कॉङ्ग्रेस कमिटी के दूसरे कार्यकर्ता को भी ४ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई ।

—मेरठ, ४थी जनवरी का समाचार है, कि यहाँ निम्न-लिखित सज्जन गिरफ़्तार कर लिए गए :—

श्री० किशनचन्द, मुरलीधर, महेश और राघोप्रसाद । श्रीमती वासोदेवी भी, जो कि महिला सत्याग्रह-समिति की एक प्रधान कार्यकर्त्री हैं, आज गिरफ़्तार कर ली गईं । सब कोई ज़िला-जेल में रक्खे गए हैं ।

—कानपुर के विदेशी कपड़े की दुकानों पर, जिनके मालिकों ने पेटियों पर कॉङ्ग्रेस-मुहर लगवाने से इन्कार कर दिया है, पिकेटिङ्ग आरम्भ कर दी गई है ।

मैजिस्ट्रेट की आज्ञा न मानने के अपराध में १७ महिलाओं को सज़ा

बम्बई का ६ठीं जनवरी का समाचार है कि बान्द्रा के मैजिस्ट्रेट ने जवाहर-दिवस के अवसर पर मैजिस्ट्रेट की आज्ञा भङ्ग करने के अभियोग में १७ महिलाओं को ३०)-३०) रु० जुर्माने की सज़ा, अथवा १-१ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी है । महिलाओं ने जेल जाना ही ठीक समझा ।

देश-सेविकाओं को सज़ा

नागपुर का ६ठीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ के एक मुसलमान विदेशी कपड़े के व्यापारी की दूकान पर धरना देने के अभियोग में जिन ८ महिलाओं को गिरफ़्तार किया गया था, उनमें ६ को ग़ैर-क़ानूनी संस्था की सदस्या होने के अपराध में ४-४ मास की सादी क़ैद की सज़ा दी गई है । बक़ीया दो को १-१ मास की सादी सज़ा हुई है । एक स्वयंसेवक को भी उक्त अभियोग में ४ मास की कड़ी क़ैद की सज़ा दी गई है ।

महिला ने जुर्माना देने की अपेक्षा जेल भोगना स्वीकार किया

सूरत का ९वीं जनवरी का समाचार है कि श्रीयुत विनायक आपटे की पत्नी श्रीमती शारदा आपटे को, जो अदालत के कमरे में गिरफ़्तार की गई थीं, १००) रु० जुर्माने अथवा ३ माह की सादी क़ैद की सज़ा दी गई । श्रीमती जी ने जेल ही जाना पसन्द किया ।

विलापार्ले के 'डिक्टेटर' को सज़ा

बम्बई का ९वीं जनवरी का समाचार है कि विलापार्ले के 'डिक्टेटर' भाई साहब कोतवाल को, जो कि स्वतन्त्रता-दिवस के अवसर पर गिरफ़्तार किए गए थे, १ साल की कड़ी क़ैद की सज़ा और २००) रु० जुर्माने की सज़ा अथवा ४ मास की अतिरिक्त क़ैद की सज़ा दी गई है ।

कानपुर में गिरफ़्तारियाँ

गत ९वीं जनवरी का समाचार है कि कानपुर में सवेरे ९ बजे ४ बङ्गाली युवक गिरफ़्तार कर लिए गए ।

६ठीं जनवरी को श्रीयुत जयनारायण गोयनका क्रिमिनल लॉ एमेण्डमेण्ट एक्ट की १७वीं धारा के अनुसार गिरफ़्तार किए गए ।

हुबली के राष्ट्रीय कार्यकर्ता श्री० नारायण राव आपटे—जो हाल ही में लाठी-प्रहार के शिकार हुए हैं, आपकी दशा चिन्ताजनक बतलाई जाती है ।

फ़रीदपुर की भद्र अवज्ञा-समिति के अध्यक्ष फिर गिरफ़्तार किए गए

फ़रीदपुर का ६ ठीं जनवरी का समाचार है कि फ़रीदपुर की ज़िला भद्र अवज्ञा-समिति के अध्यक्ष बाबू सतीशचन्द्र राय चौधरी जो हाल ही में दमदम स्पेशल जेल से छोड़े गए थे, फिर गिरफ़्तार कर लिए गए हैं ।

* * *

(८वें पृष्ठ का शेषांश)

अमृतसर षड्यन्त्र केस

अमृतसर ९वीं जनवरी का समाचार है कि षड्यन्त्र केस के पाँच अभियुक्तों को मि० एण्डर्सन सेशन जज के सामने पेश किया गया ।

सरकारी वकील ने प्रारम्भिक वक्तव्य में कहा, कि अभियुक्तों ने कई स्थानों पर डाका डालने के लिए षड्यन्त्र रचा तथा शस्त्र-संग्रह किया । श्री० बोस, इक़बाली गवाह, ने गवाही में कहा, कि मैं अमृतसर नौकरी के लिए बनारस से आया था । यहाँ सुशीलकुमार से मेरा परिचय हो गया, हम लोगों ने कई स्थानों पर डाका डालने का विचार किया, परन्तु किसी न किसी कारण से सफलता नहीं हुई ।

—अहमदाबाद का २री जनवरी का समाचार है, कि पुलिस गत शनिवार को बम फटने के सम्बन्ध में बड़े परिश्रम से खोज कर रही है । पूना से स्पेशल सी० आई० डी० के कई अफ़सर स्थानीय पुलिस की सहायता के लिए बुलाए गए हैं । अभी तक ७ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं ।

* * *
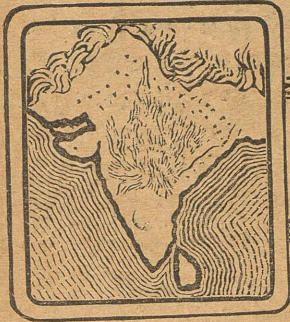
बम्बई में पूर्ण हड़ताल

फ़ौज की परेड तक बन्द

गत १ली जनवरी का समाचार है कि ३१वीं दिसम्बर को लाठी और गोली के प्रहार के विरोध में, बम्बई में पूर्ण हड़ताल मनाई गई। छोटे-बड़े सभी व्यापारियों ने इसमें योग दिया।

शहर की चिन्ताजनक अवस्था देख कर अधिकारियों ने नए साल की फ़ौजी क़वायद तक रोक दी।

—अमृतसर का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ के व्यापारी मेसर्स फ़तहचन्द मदनगोपाल ने, जिनकी दूकान पर पिकेटिङ्ग शुरू की गई थी, अपने विदेशी कपड़े की दूकानों को बन्द कर, उन कपड़ों की गाँठों पर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाना स्वीकार कर लिया है। उन्होंने बॉयकॉट-कमिटी को दान भी दिया है।

श्रीमती गाँधी का भ्रमण

अहमदाबाद का १ली जनवरी का समाचार है कि श्रीमती गाँधी बोरसद तालुक़े में भ्रमण कर रही हैं। वहाँ लगानबन्दी का आन्दोलन बड़े ज़ोरों से जारी है। लोग उनके दर्शनों के लिए बड़ी संख्या में आते हैं। वे सबों से उत्साहपूर्वक कठिनाइयों को झेलने के लिए कहती हैं। आपका कहना है—"जितना अधिक त्याग हम लोग करेंगे, उतना ही शीघ्र हमें स्वराज्य मिलेगा।"

अलीगढ़-समाचार

अलीगढ़ का २री जनवरी का समाचार है, कि वहाँ के अरौली शहर में कुछ व्यापारियों के विदेशी कपड़ों की गाँठों पर से कॉङ्ग्रेस की मुहर तोड़ देने के कारण, वहाँ की तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी ने उनकी दूकानों पर पिकेटिङ्ग जारी कर दी है। तीन को छोड़ कर, सभी व्यापारी उन गाँठों पर फिर कॉङ्ग्रेस की मुहर लगवाने के लिए तैयार हैं।

एक कपड़े के व्यापारी ने पुलिस से सहायता के लिए प्रार्थना की। पुलिस ने गत १ली जनवरी को क़रीब २५ व्यक्तियों को इस सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया। गिरफ़्तार होने वालों में प्रमुख व्यक्ति हैं—डॉक्टर शिवदयाल, श्री० मदनमोहन, श्री० बनारसीदास, श्री० वासुदेव सहाय, श्री० श्यामलाल सर्राफ़, और श्री० ओ३म्प्रकाश।

अलीगढ़ की ज़िला कॉङ्ग्रेस कमिटी ने वहाँ फ़रवरी के दूसरे सप्ताह में होने वाले मेले का बहिष्कार करने का विचार किया है। प्रदर्शनी के बहिष्कार के लिए, वहाँ स्वयंसेवकों की भर्ती ज़ोरों से हो रही है। सभी दूकानदारों को इस बहिष्कार के विषय में चेतावनी दे दी गई है। उक्त मेले के सेक्रेटरी से भी इस साल देश की परिस्थिति को ध्यान में रखते हुए, मेला बन्द रखने के लिए कहा गया है।

खैर नामक तहसील इस समय, कॉङ्ग्रेस-कार्यों में अन्य स्थानों की अपेक्षा अधिक भाग ले रही है। हाल ही में सरकार ने खैर तहसील कॉङ्ग्रेस कमिटी को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है। इस आन्दोलन को दबाने के लिए वहाँ बड़ी सख़्ती की जा रही है।

बम्बई में ५ महिलाएँ घायल हुईं!

प्रेस-रिपोर्टर पर भी लाठी पड़ी

गत १ली जनवरी को, बम्बई में 'स्वतन्त्रता-दिवस' के अवसर पर, जो लाठियाँ चली थीं, उसका विस्तृत विवरण पाठक १६वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम में देखेंगे।

बाद का एक समाचार है कि माण्डवी में जुलूस पर जो मार पड़ी थी, उसमें ५ महिलाएँ भी घायल हुई हैं। ख़बर है कि प्रेस-रिपोर्टरों के साथ भी बुरा व्यवहार किया गया। कुछ प्रेस-रिपोर्टरों ने अधिकारियों से घटनास्थल पर (चौपाटी पर) ऐसी जगह खड़े होने की अनुमति माँगी थी, जहाँ से वे सारी घटनाएँ देख सकें। किन्तु अधिकारियों ने साफ़ इन्कार कर दिया, और उन्हें फ़ौरन उस स्थान को छोड़ देने की आज्ञा दी।

कहा जाता है 'टाइम्स ऑफ़ इण्डिया' के एक रिपोर्टर पर भी, जो अधिकारियों से इसी बात की आज्ञा माँगने जा रहा था, लाठी पड़ी!
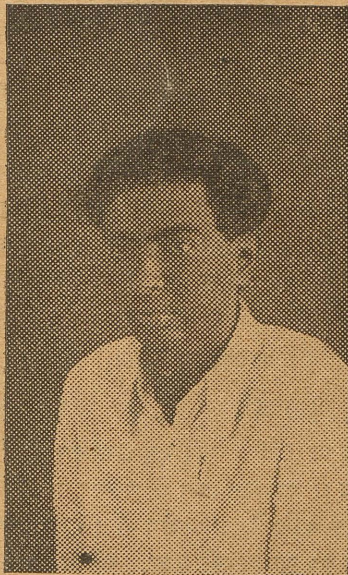
हुबली के प्रसिद्ध चित्रकार श्री० गणेशराव, जो हाल ही में लाठी-प्रहार से सख़्त ज़ख़्मी हो गए थे।

—ख़बर है कि सपरिषद् गवर्नर ने, मेरठ के स्वयंसेवकों की सभी संस्थाओं को ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दिया है।

—ख़बर है कि मनकापुर के राजा के पुत्र श्री० कुँवर राघवेन्द्र प्रतापसिंह तथा बहराइच के सरदार योगेन्द्रसिंह जेल से छूट गए। गत ३१वीं दिसम्बर को गोंडा में आप लोगों का बड़े धूमधाम से स्वागत किया गया।

बिजनौर जेल में अनशन

बिजनौर का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है, कि वहाँ के ज़िला जेल के राजनैतिक क़ैदियों ने अनशन कर दिया था। उन्हें साधारण क़ैदियों के साथ भोजन दिया गया था, जो वहाँ के राजनैतिक क़ैदियों के लिए एक नई बात थी। इसीके विरोध में उन्होंने कई दिनों तक अनशन जारी रक्खा। ज़िला मैजिस्ट्रेट के कहने-सुनने पर जेल के अधिकारियों ने फिर पहले का नियम जारी कर दिया। इससे क़ैदियों ने अब अनशन तोड़ दिया है।

बिहार-समाचार

पिछले सप्ताह बिहार प्रान्त में ४०९ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं, जिनका ज़िलेवार ब्योरा इस प्रकार बताया जाता है:—

चम्पारन २३५, मुङ्गेर ७४, मुज़फ़्फ़रपुर ३५, सारन ३०, भागलपुर १३, पटना ११, दरभङ्गा ७, राँची ३, शाहाबाद १—कुल जोड़ ४०९।

इस प्रकार इस प्रान्त में अब तक की गई गिरफ़्तारियों का नम्बर ११,६४९ तक पहुँच चुका है, ज़िलेवार ब्योरा इस प्रकार है:—

(१) मुङ्गेर २,०३४ (२) भागलपुर १,९३९ (३) पटना १,५१२ (४) चम्पारन १,३३८ (५) सारन १,१५९ (६) दरभङ्गा ७९१ (७) मुज़फ़्फ़रपुर ६१८ (८) शाहाबाद ६०४ (९) गया ४९४ (१०) पूर्णिया ३४६ (११) सन्थाल परगना २९३ (१२) मानभूम २३२ (१३) हज़ारीबाग़ १३८ (१४) सिंहभूम ९७ (१५) राँची ५७ (१६) पलामू १—कुल जोड़ ११,६४९।

मादक द्रव्यों के प्रचार को रोकने का काम जारी है। बिहपुर के ज़ब्त शिविर के सम्बन्ध में भी सत्याग्रह जारी है। अनेक ज़िलों में पञ्चायतों का सङ्गठन हो रहा है। ख़बर है कि इन पञ्चायतों द्वारा फ़ौजदारी मुक़द्दमों के भी फ़ैसले हो रहे हैं।

अहमदाबाद तालुक़े में लगानबन्दी आन्दोलन!

किसानों ने गाँव छोड़ दिया!!

अहमदाबाद का २री जनवरी का समाचार है, कि दसकरोई तालुक़ा के उत्तर की ओर के कुछ गाँवों के किसानों ने लगानबन्दी का आन्दोलन बड़े ज़ोरों से आरम्भ कर दिया है! कहा जाता है, कि भदाज गाँव के किसान गाँव छोड़ कर बड़ोदा राज्य में चले गए हैं, और वहीं झोपड़ी बना कर बसे हुए हैं। उनका निश्चय है, कि जब तक महात्मा जी और सरदार पटेल उन्हें लौटने के लिए न कहेंगे, तब तक वे न लौटेंगे।

जुलूस भङ्ग किया गया

सौदागर पीटे गए

अहमदाबाद का १ली जनवरी का समाचार है कि गत ३१वीं दिसम्बर को वहाँ 'बानर-सेना-दिवस' के उपलक्ष में बानर-सेना का एक जुलूस निकाला गया। पुलिस ने इसे तितर-बितर कर दिया और बानर-सेना के नायक श्री० पुञ्जाभाई और उनके भाई को गिरफ़्तार कर लिया, जिन्हें बाद में चेतावनी देकर छोड़ दिया गया। बानर-सेना का दूसरा जुलूस शाम को निकाला गया, किन्तु पुलिस ने कुछ छेड़छाड़ नहीं की। कहा जाता है, कि जब जुलूस भङ्ग होगया, तब पुलिस ने कुछ राह-चलतों और दूकानों पर बैठे हुए कुछ व्यापारियों को पीटा। क़रीब ७ व्यापारी, जिनमें एक मर्चेण्ट्स एसोसिएशन के अध्यक्ष भी थे, गिरफ़्तार कर लिए गए, किन्तु पीछे छोड़ दिए गए। मर्चेण्ट्स एसोसिएशन इस विषय में पुलिस के विरुद्ध क़ानूनी कार्रवाई करना चाहती है।

पुलिस का धावा

दरभङ्गा का एक समाचार है कि गत २७वीं दिसम्बर को पुलिस ने वहाँ की कॉङ्ग्रेस कमिटी पर ९ बजे सुबह धावा किया। उसने ८ स्वयंसेवकों को, जो उस समय भोजन कर रहे थे, गिरफ़्तार किया, और वहाँ की प्रत्येक वस्तु को उठा कर वह साथ लेती गई।

लखनऊ में नया जेल

लखनऊ का १ली जनवरी का समाचार है कि, वहाँ 'सी' श्रेणी के क़ैदियों के लिए जो नया जेल कुछ दिनों से बन रहा था, आज खुल गया है। इसमें 'सी' श्रेणी के सभी क़ैदी रक्खे जायँगे।

बर्मा में भयङ्कर उपद्रव

३०० मरे :: २०० घायल

"परिस्थिति हाथ में है"

रङ्गून का समाचार है, कि थारावड्डी के सिरकवीन नामक स्थान के समीप गत ३०वीं दिसम्बर को १८ विद्रोहियों का एक पञ्जाबी सेना से मुक़ाबला हुआ। ३ बाग़ी मारे गए।

इन्सीन ज़िले में पुलिस ने कुछ बाग़ियों को गिरफ़्तार किया, जिनसे कहा जाता है, दङ्गाइयों के विषय में कुछ महत्वपूर्ण रहस्य की बातें मालूम हुई हैं।

जङ्गल में ठहरी हुई फ़ौज पर भी विद्रोहियों ने आक्रमण किया था। विद्रोहियों का प्रधान अड्डा पेशवेगाँ नामक स्थान के समीप जङ्गलों में बतलाया जाता है।

गत ३१वीं दिसम्बर की ख़बर है, कि विद्रोहियों ने एक पुल और इनीवा स्टेशन के तीन क्वार्टर उड़ा देने की कोशिशें कीं, किन्तु उन्हें सफलता नहीं मिली। रेलवे-विभाग के अधिकारियों ने उस ओर रात में ट्रेनें चलाना बन्द कर दिया है।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार विद्रोहियों ने पुलिस-स्टेशन पर धावे डालना बन्द कर दिया है। किन्तु हथियारों की प्राप्ति के लिए वे गाँवों पर धावे करते हैं।

सरकारी रिपोर्ट के अनुसार विद्रोहियों ने ३०वीं दिसम्बर की रात में मेजर हेयर के कैम्प पर आक्रमण किया था, किन्तु मैशीनगनों से क़रीब १०० विद्रोही मारे गए। दो पुङ्गी (धर्म-गुरु) विद्रोही दल के जासूस होने के सन्देह में गिरफ़्तार किए गए हैं!

१ली जनवरी का समाचार है, कि बर्मी सैनिकों ने रात्रि में दङ्गाइयों के प्रधान अड्डे पर धावा किया। वह स्थान घने जङ्गलों से घिरा हुआ अलान्तुङ्ग नामक पहाड़ पर है। कहा जाता है, कि यह स्थान केवल विद्रोहियों के नेताओं का अड्डा था। सैनिकों को उस स्थान तक पहुँचने में अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा। स्थान-स्थान पर विद्रोहियों के सन्तरी पहरा दे रहे थे। उन्होंने सैनिकों पर गोलियाँ चलाईं। अनेक स्थानों पर उन्हें विद्रोहियों के दलों से सामना करना पड़ा। सभी विघ्न-बाधाओं को पार करते सैनिक उस स्थान पर पहुँचे, जहाँ उन्हें पहाड़ की चोटी पर एक 'महल' मिला। वही विद्रोहियों के नेता का प्रधान वास-स्थान था, जहाँ वह अपने अफ़सरों के साथ रहता था।

सैनिकों के उस 'महल' पर धावा करने पर वहाँ कुछ विद्रोही मिले। कुछ औरतें भी वहाँ थीं। कहा जाता है कि सैनिकों को देख कर एक औरत भय के मारे पहाड़ से नीचे लुढ़क पड़ी, जिससे उसकी मृत्यु हो गई। पुलिस ने फ़ायरें शुरू कीं, जिससे ३० विद्रोही मारे गए। इनमें १७ उनके अफ़सर भी थे; बाक़ी भाग गए। सैनिकों में से केवल एक को थोड़ी सी चोट आई। 'महल' के अन्दर घुसने पर एक विद्रोही की लाश मिली, जिसे दो विद्रोही ले भागने का प्रयत्न कर रहे थे। सैनिकों ने गोली से उन्हें मार दिया। पता चला है, कि वह व्यक्ति वास्तव में, यदि उन लोगों का प्रधान नेता नहीं, तो एक भारी अफ़सर तो ज़रूर ही रहा होगा। उसकी पगड़ी में सफ़ेद चूने का निशान लगा हुआ था। उसके हाथ में माला थी।

'महल' के अन्दर मिट्टी का तेल, पेट्रोल, बन्दूक़ की गोलियाँ, डेनामाइट, बारूद आदि वस्तुएँ मिलीं। एक बर्मी घण्टा, एक लाल झण्डा, जिस पर बाज़ चिड़िए का चित्र बना हुआ था, और एक कार्ड, जिस पर नाम और नम्बर छपा हुआ था, पुलिस के हाथ लगे। कहा जाता है, उस मकान में आग लग गई। यह नहीं मालूम कि आग किसने लगाई, वह मकान बाँस का बना हुआ था और अधूरा था। आग से मकान नष्ट हो गया।

जिस समय विद्रोहियों के अड्डे पर सैनिकों ने धावा किया था, उसी समय मेजर हेयर का भी पेशवेगाँ के समीप विद्रोहियों के तीन दलों से सामना हुआ। कहा जाता है, कि विद्रोही शीघ्र ही भाग गए। उनके १० मनुष्य मारे गए और ५ घायल हुए, जो क़ैद कर लिए गए।

विद्रोहियों के अड्डे में छपा हुआ जो कार्ड मिला था, कहा जाता है वह इनीवा के छापेख़ाने का छपा हुआ था।

५वीं जनवरी का समाचार है कि ८० विद्रोहियों ने एक चीनी के मिल पर धावा किया। पुलिस के घटना-स्थल पर पहुँचने पर उन्होंने गोलियाँ चलाईं। पुलिस ने भी फ़ायरें कीं। कहा जाता है कि ६ विद्रोही मारे गए और ३६ सजीव गिरफ़्तार किए गए।

पेगू के एक गाँव में विद्रोहियों ने धावा मारा और वहाँ के मुखिया से रिवॉल्वर छीन लिया। जब मुखिया ने अपनी बन्दूक़ से फ़ायरें कीं, तो विद्रोहियों ने उसे भी आकर मार डाला और बन्दूक़ ले ली।

ख़बर है कि अब तक ३०० विद्रोही मारे जा चुके हैं, २०० घायल हुए हैं और ११७ गिरफ़्तार किए जा चुके हैं। केवल थारावड्डी में ७५ गिरफ़्तारियाँ हुई हैं। पुलिस विद्रोहियों को दबाने की भरपूर चेष्टा कर रही है। रेलवे-लाइनों पर सख़्त पहरा है।

एक अफ़वाह है कि यामेथिन ज़िले में भी बलवा हो गया है। कहा जाता है, कि दिन-दहाड़े वहाँ एक गाँव जला दिया गया। किन्तु अभी तक इस घटना के विषय में विश्वस्त रूप से कुछ नहीं मालूम हुआ है। सरकारी अधिकारियों का कहना है कि "परिस्थिति अब हाथ में आ गई है।" गिरफ़्तारियाँ जारी हैं। कहा जाता है कि विद्रोहियों का प्रधान अड्डा पेशवेगाँ ही के आस-पास के जङ्गलों में छिपा हुआ है। बर्मी सेना उसका अनुसन्धान कर रही है। इस दुर्घटना से समस्त बर्मा में सनसनी फैली हुई है।

गत ६वीं जनवरी का समाचार है कि गत शनिवार की रात को १०० से अधिक विद्रोहियों ने किम्पत पुलिस आउट-पोस्ट पर धावा किया, और सन्तरी को घायल किया। कहा जाता है कि उन्होंने एक मकान में आग लगाने की चेष्टा की, किन्तु पुलिस-इन्सपेक्टर के यह कहने पर कि उस मकान में डिनामाइट है, उन लोगों ने उस मकान पर फ़ायरें शुरू कीं। किन्तु पुलिस ने उन लोगों को खदेड़ दिया। कहा जाता है, कि पुलिस की गोली से ७ विद्रोही मारे गए और अनेक घायल हुए। ख़बर है कि पेगू ज़िले में जो विद्रोही छिपे हुए थे, वे गिरफ़्तार कर लिए गए हैं। अब इस समय विद्रोहियों को, भिन्न-भिन्न स्थानों में घेरने का प्रयत्न किया जा रहा है। ख़बर है कि वे गाँवों से भाग रहे हैं और छोटे-छोटे दल बना कर छिपने की चेष्टा कर रहे हैं। इस समय परिस्थिति शान्त-सी जान पड़ती है। ख़बर है कि एक पञ्जाबी सेना को पेशवेगाँ से लौटते समय रास्ते में एक बौद्ध-मठ में दो छोटे-छोटे बम मिले।

—कलकत्ते का १ली जनवरी का समाचार है कि श्रीमती कमला नेहरू की गिरफ़्तारी की ख़बर से पं० मोतीलाल नेहरू को बड़ी ख़ुशी हुई। किन्तु अपनी पौत्री के लिए वे चिन्तित थे, क्योंकि माँ की गिरफ़्तारी हो जाने से बेचारी अकेली रह गई थी। कुमारी कृष्णा नेहरू को उन्होंने इसीलिए यहाँ भेज दिया है। पण्डित जी स्वयं भी अब अच्छे हो चले हैं, सम्भवतः ७ जनवरी को पण्डित जी पञ्जाब मेल से यहाँ पहुँच जायँ।

—बम्बई का २री जनवरी का समाचार है, कि गत वृहस्पतिवार को सवेरे कालबादेवी में जो गोली चली थी, उससे घायल, श्री० लक्ष्मीदास नामक एक पञ्जाबी युवक का अस्पताल में स्वर्गवास हो गया। आपका शव एक बड़े जुलूस के साथ निकाला गया। सोनापुर पहुँचने पर 'युद्ध-समिति' के अध्यक्ष श्री० जे० सी० मित्र ने मृत व्यक्ति के विषय में एक भाषण दिया। शहर में पूर्ण हड़ताल मनाई गई।

संयुक्त-प्रान्त-समाचार

ख़बर है, कि गत सप्ताह में संयुक्त प्रान्त के अनेक ज़िलों ने विदेशी वस्त्र के बहिष्कार में अच्छी उन्नति की। शहरों के कुछ व्यापारियों ने अपने विदेशी कपड़ों की गाँठों पर लगी हुई कॉङ्ग्रेस की मुहर को तोड़ डाला है। फिर मुहर लगाने की कोशिशें की जा रही हैं। जिन दूकानदारों ने विदेशी कपड़े बेचना बन्द नहीं किया है, उनकी दूकानों पर धरना दिया जा रहा है। ख़बर है कि मादक द्रव्यों की दूकानों पर भी धरना जारी है। बाँदा ज़िले के अछूतों में इसके बहिष्कार के लिए, उनकी पञ्चायतों द्वारा कोशिश की जा रही है। पता चलता है कि मादक द्रव्यों की बिक्री दिन-ब-दिन कम होती जा रही है।

मर्दुमशुमारी-बहिष्कार का आन्दोलन भी जारी है। ख़बर मिली है, कि कर-बन्दी के सम्बन्ध में भी सङ्गठन जारी है। कहा जाता है कि ज़मींदारों की सख़्ती किसानों के प्रति बढ़ती जा रही है। इस विषय में इलाहाबाद ज़िले के कुछ ज़मींदारों की शिकायत विशेष रूप से सुनने में आ रही है।

खादी की बिक्री दिन-ब-दिन बढ़ती जा रही है। जौनपुर में १५ से २१ दिसम्बर तक खादी-सप्ताह मनाया गया था। वहाँ लगभग ७००) की बिक्री हुई। इलाहाबाद में खादी-सप्ताह में लगभग ४,३००) की खादी बिकी।

ख़बर है कि हाथरस (अलीगढ़) में विदेशी चीनी का भी बहिष्कार किया गया है। अन्य ज़िलों में भी यह बहिष्कार जारी है।

पता चला है कि गत सप्ताह तक इस प्रान्त में १०,६२२ गिरफ़्तारियाँ हो चुकी हैं!

लगानबन्दी आन्दोलन

किसान गाँव छोड़ रहे हैं

अहमदाबाद का ६वीं जनवरी का समाचार है कि पञ्चमहाल ज़िले के हलाल तालुक़े में भी लगानबन्दी आन्दोलन जारी किया गया है। किसान गाँवों को छोड़ कर देशी राज्यों में जा रहे हैं। सरकार ने अनेक पुलिस स्टेशनों पर अतिरिक्त पुलिस तैनात की है।

कमिश्नरी पर राष्ट्रीय झण्डा

मुज़फ़्फ़रपुर का एक समाचार है कि वहाँ की कमिश्नरी अदालत पर से किसी व्यक्ति ने गत २६वीं दिसम्बर को 'यूनियन जैक' उतार कर राष्ट्रीय झण्डा फहरा दिया। पुलिस उस व्यक्ति का पता लगाने की कोशिश कर रही है, किन्तु अभी तक इस सम्बन्ध में कोई गिरफ़्तार नहीं किया जा सका है।

अलीगढ़ की कॉङ्ग्रेस कमिटियाँ भी ग़ैर-क़ानूनी क़रार दे दी गईं

अलीगढ़ का ५वीं जनवरी का समाचार है कि वहाँ की ज़िला, तहसील और शहर की कॉङ्ग्रेस कमिटियों को ग़ैरक़ानूनी क़रार दे दिया गया है। कहा जाता है कि सिटी कॉङ्ग्रेस कमिटी से पुलिस कुछ चीज़ें भी उठा कर ले गई है। सहयोगी 'लीडर' के सम्वाददाता का अनुमान है कि शहर के प्रत्येक भाग से पुलिस राष्ट्रीय झण्डे भी उठा ले गई है।

* * *

हिंसात्मक क्रान्ति की लहर

पञ्जाब के क्रान्तिकारी-दल का मनोरञ्जक इतिहास

पुलिस वालों को मारने के लिए आप से आप फटने वाले बम रक्खे गए !

सरदार भगतसिंह का छुड़ाने का निष्फल-प्रयत्न

सरकारी ख़ज़ानों पर डाका डालने की चेष्टा :: लाहौर का नया षड्यन्त्र-केस शुरू हो गया

लाहौर के सेण्ट्रल जेल में २ री जनवरी को स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने लाहौर के नए षड्यन्त्र केस के २६ अभियुक्त पेश किए गए। अभियुक्तों को कचहरी में चोर-दरवाज़े से लाया गया था। कचहरी के बाहर पुलिस का कड़ा पहरा था। कचहरी के भीतर भी बहुत सी पुलिस बन्दूक़ इत्यादि से सुसज्जित नियुक्त थी। सड़क पर पुलिस मोटरों में बैठ कर पेटरोल कर रही थी, आने-जाने वालों पर बड़ी कड़ी निगाह रक्खी जाती थी।

कचहरी में जाने के लिए अभियुक्तों के सम्बन्धियों तक को पास दिए गए थे। प्रेस के प्रतिनिधियों तथा सम्बन्धियों की तलाशी लेकर कचहरी में जाने दिया जाता था। कई सज्जनों की पगड़ी तथा पाजामे तक उतरवा कर तलाशी ली गई !

सरकारी गवाह

इस केस में पाँच सरकारी गवाह (Approvers) हैं। श्री० इन्द्रपाल, ख़ैरातीलाल, शिवराम, सरनदास, और मदनगोपाल।

भागे हुए अभियुक्त

पिछली पेशी पर बताया गया था, कि इस केस में १२ अभियुक्त भागे हुए हैं; परन्तु आज एक और का नाम बढ़ा दिया गया है। १३ फ़रार अभियुक्तों के नाम ये हैं:—

(१) श्री० चन्द्रशेखर आज़ाद
(२) श्री० यशपाल
(३) श्री० सुखदेवराज, बी० ए०
(४) श्री० प्रोफ़ेसर सम्पूर्णसिंह, एम० ए०
(५) श्री० हंसराज
(६) श्रीमती दुर्गादेवी, धर्मपत्नी श्री० भगवतीचरण
(७) श्रीमती सुशीला देवी
(८) श्रीमती प्रकाश देवी
(९) श्री० लेखराम
(१०) श्री० प्रेमनाथ
(११) श्री० सीताराम
(१२) श्री० विश्वनाथ राव ; और
(१३) श्री० बिहारी छबीलदास

रायबहादुर ज्वालाप्रसाद इस केस में सरकारी वकील नियुक्त हुए हैं ! अभियुक्तों की ओर से लाला श्यामलाल एडवोकेट, श्री० अमोलक राम कपूर और श्री० प्राणनाथ मेहता वकील पैरवी कर रहे हैं।

अभियुक्तों की ओर से लाला श्यामलाल ने ट्रिब्यूनल को एक प्रार्थना-पत्र इस आशय का दिया, कि १२८) रु०, जो दैनिक वकीलों के ख़र्च के लिए दिया जाता है, पर्याप्त नहीं है, अतएव ६४) रु० दैनिक और बढ़ा दिया जाय। हुक्म हुआ कि इस प्रार्थना-पत्र का फ़ैसला लीगल रिमेम्बरैन्सर करेगा।

हमको इकट्ठा रक्खा जाय

इसके पश्चात अभियुक्तों ने कहा कि जेल में हम सबको इकट्ठा रक्खा जाय, क्योंकि हमको अपने केस की सफ़ाई के लिए आपस में मिल कर विचार करना पड़ता है। मि० ब्लेकर प्रेज़िडेण्ट ट्रिब्यूनल ने कहा कि ऐसा कोई प्रबन्ध जेल में नहीं हो सकता।

सरकारी वकील का वक्तव्य

सरकारी वकील ने इसके पश्चात अपना वक्तव्य अङ्गरेज़ी में आरम्भ किया ही था, कि अभियुक्तों के विरोध करने पर उन्हें अपना वक्तव्य हिन्दी में ही देना पड़ा।

अपने वक्तव्य में सरकारी वकील ने कहा, कि यह केस बड़ा महत्वपूर्ण है। इस केस से कुल ३९ व्यक्तियों का सम्बन्ध है, जिनमें से १३ अभी तक गिरफ़्तार नहीं किए जा सके हैं। इस केस के अभियुक्तों ने सरकारी अफ़सरों की हत्या करने के लिए यह षड्यन्त्र रचा था। इस कार्य के लिए इन लोगों ने चन्दा माँग कर और डाके डाल कर धन इकट्ठा किया। यह एक बड़ा भारी षड्यन्त्र है और इस षड्यन्त्र में भाग लेने वाले २६ क्रान्तिकारी आपके सम्मुख खड़े हैं।

भारत की क्रान्ति का इतिहास

भारतवर्ष की क्रान्ति का इतिहास वर्णन करते हुए सरकारी वकील ने कहा:—

भारतवर्ष में क्रान्ति के विचार बङ्ग-भङ्ग (Partition of Bengal) के समय से आरम्भ हुआ है। चूँकि बङ्ग-भङ्ग सरकार ने जनता की सम्मति के प्रतिकूल किया था, इस कारण से हताश-बङ्गालियों में क्रान्ति के अङ्कुर उत्पन्न हुए। यह सब लॉर्ड कर्ज़न के समय में हुआ। षड्यन्त्र का सब से पहला मामला सन्, १९०८ में चला, जिसमें श्रीयुत अरविन्दो घोष तथा उनके भाई और कई दूसरे व्यक्ति सम्मिलित थे। दूसरा मामला सन्, १९१२ में चला, जब लॉर्ड हार्डिञ्ज पर बम फेंका गया। पुलिस ने लाख ढूँढ़ा, परन्तु बम फेंकने वालों का पता न चला। सन्, १९१३-१४ में पञ्जाब में भी क्रान्ति की आग फैल गई और अङ्गरेज़ों की हत्या के लिए षड्यन्त्र रचे जाने लगे। सन्, १९१५ में देहली में एक बड़ा भारी षड्यन्त्र-केस चला।

यूरोपीय महायुद्ध के समय केलिफ़ोर्निया इत्यादि से सहस्रों क्रान्तिकारी लौटे। उनके आते ही देश में आग-सी लग गई। चूँकि उनमें अधिकतर पञ्जाबी सिक्ख थे, इस कारण से पञ्जाब पर इसका विशेष प्रभाव पड़ा। सरकार को एक स्पेशल ट्रिब्यूनल भारत-रक्षा-क़ानून (Defence of India Act) के अनुसार बनाने की आवश्यकता प्रतीत हुई। इस स्पेशल ट्रिब्यूनल ने अपने फ़ैसले में कई व्यक्तियों को फाँसी और कइयों को कालापानी की सज़ा दी। इस दमन के पश्चात कुछ समय तक क्रान्ति की लहर दब गई।

विप्लववाद का पुनर्जन्म

सन् १९२५ में काकोरी षड्यन्त्र चला, जिसमें चार क्रान्तिकारियों को फाँसी लगी। इस मामले से पता चला कि भारतवर्ष में एक नया विप्लववादी-दल का निर्माण हुआ है, जिसका नाम "हिन्दुस्तान रिपब्लीकन एसोसिएशन" रक्खा गया है। पं० चन्द्रशेखर आज़ाद काकोरी षड्यन्त्र-केस का एक भागा हुआ अभियुक्त है, जिसका सम्बन्ध कि इस वर्तमान केस से भी है।

काकोरी के पश्चात लाहौर का विख्यात षड्यन्त्र-केस चला, जिसमें सरदार भगतसिंह, श्रीयुत दत्त, राजगुरु, सुखदेव इत्यादि अभियुक्त थे। पं० चन्द्रशेखर आज़ाद, श्रीयुत भगवतीचरण तथा श्री० यशपाल इस केस के भागे हुए अभियुक्त हैं, जिनका वर्तमान केस से भी सम्बन्ध है। श्रीयुत भगवतीचरण का बम के फट जाने से रावी के किनारे पर देहान्त हो गया। वर्तमान षड्यन्त्र में पञ्जाब तथा संयुक्त-प्रान्त के व्यक्ति भी सम्मिलित हैं।

वर्तमान केस में इन्द्रपाल एक महत्वपूर्ण सरकारी गवाह (Approver) है। इन्द्रपाल कोई एक वर्ष विप्लव-दल में रहा। इस विप्लव-दल के चन्द्रशेखर आज़ाद और भगवतीचरण मुख्य कार्यकर्त्ता थे। सितम्बर, १९२८ में विप्लव-दल का नाम "हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आरमी" रक्खा गया। चन्द्रशेखर सेना-विभाग का मुखिया था।

जब पहले लाहौर षड्यन्त्र-केस का पुलिस को पता चला, तो बहुत से गिरफ़्तारी के वारण्ट जारी किए गए। भगवतीचरण तथा यशपाल, लाहौर से भाग गए। उन्होंने इन्द्रपाल को देहली बुलाया। इन्द्रपाल को बताया गया, कि वाइसराय की गाड़ी को बम से उड़ाने की योजना हो रही है। इन्द्रपाल को साधु बना कर रेलवे लाइन पर रक्खा गया, कि वह स्थिति का निरीक्षण करता रहे।

कई कारणों से उन दिनों वाइसराय पर आक्रमण न हो सका। फिर २३ दिसम्बर को वाइसराय की गाड़ी को बम से उड़ाने का प्रयत्न किया गया। परन्तु वाइसराय बच निकला।

महात्मा गाँधी का विरोध

गाँधी जी ने वाइसराय पर बम चलाने वालों की निन्दा लाहौर कॉङ्ग्रेस में की तथा एक लेख, जिसका शीर्षक 'बम' था, अपने पत्र 'यङ्ग-इण्डिया' में लिखा। इसके उत्तर में एक लेख, जिसका शीर्षक "बम की विशालता" (Philosophy of Bomb) था, इस पार्टी की ओर से बाँटा गया।

भगतसिंह को छुड़ाने का उद्योग

इसके पश्चात लाहौर षड्यन्त्र-केस के विख्यात अभियुक्त सरदार भगतसिंह को छुड़ाने की योजना की गई। हंसराज ने एक ऐसी गैस बनाने का प्रबन्ध किया, जिसके छोड़ने से सारे लोग बेहोश हो जायँ। परन्तु उसको सफलता न हुई। इस कारण से हंसराज फिर बम बनाने लग गया।

यशपाल ने इसी काम के लिए बहावलपुर रोड पर एक कोठी किराए पर ली। वहाँ पर भगवतीचरण, यशपाल, चन्द्रशेखर, दुर्गा देवी व सुशीला रहा करते थे।

भगवतीचरण का देहान्त

उन्हीं दिनों २८ मई, १९३० को भगवतीचरण, सुखदेवराज तथा शिव बमसाज़ी का अभ्यास करने के लिए रावी के किनारे पर गए। परन्तु अचानक बम फट गया, जिससे कि भगवतीचरण तथा सुखदेव घायल हुए। भगवतीचरण का कुछ ही समय के पश्चात स्वर्गवास हो गया। मरते समय भगवतीचरण ने कहा—"मैं मर रहा हूँ। मेरे पश्चात काम करते रहना।" यशपाल ने पीछे इन्द्रपाल को बताया कि भगवतीचरण के शरीर को वहीं ज़मीन खोद कर धन्वन्तरि तथा चन्द्रशेखर ने दबा दिया।

इसके एक ही दो दिन पश्चात कोठी में एक बम फटा, जिससे कि इनके काम में बहुत बाधा पड़ी। सब लोगों को लाहौर छोड़ कर भाग जाना पड़ा।

इसके पश्चात लाहौर के क्रान्तिकारियों ने चन्द्रशेखर की सलाह से एक 'आतशी चक्कर' नामी दल की स्थापना की। कई शहरों में अपने आप फटने वाले बम रक्खे गए, जिससे कि गुजराँवाला में अहमददीन हेड कॉन्स्टेबिल मर गया! सफ़दरअली सब-इन्स्पेक्टर अस्पताल में मरा। सन्तसिंह इन्स्पेक्टर घायल हुआ, इत्यादि।

दूसरा दिन

३री जनवरी का समाचार है कि रायबहादुर ज्वाला-प्रसाद सरकारी वकील ने लाहौर षड्यन्त्र केस में अपना प्रारम्भिक भाषण आज समाप्त किया। सरकारी वकील ने कहा, कि २३ जुलाई को देहली में एक विप्लव-दल की मीटिङ्ग हुई। इसमें यह तय पाया कि सहारनपुर के सरकारी ख़ज़ाने पर डाका डाला जाय। यह प्रस्ताव श्री० चन्द्रशेखर का था। इस समय श्री० यशपाल, सुखदेवराज, गुलाबसिंह, अमरीकसिंह, हरनामसिंह, अमीरचन्द तथा इन्द्रपाल उपस्थित थे। गुलाबसिंह लाहौर से रिवॉल्वर लेकर सहारनपुर गया, परन्तु वहाँ पर डाका इस कारण न डाला जा सका, क्योंकि वहाँ पुलिस बहुत थी।

२५ अगस्त को पार्टी ने यह तय किया, कि लाहौर के ख़ज़ाने पर डाका डाला जाय। इस मीटिङ्ग में इन्द्रपाल, गुलाबसिंह, जहाँगीरीलाल, रूपचन्द, अमीरचन्द, तथा दयानतराय थे। यह प्रस्ताव पास हो गया, परन्तु हंसराज ने कुछ सन्देह प्रकट किया और कार्य न हो सका। रावलपिण्डी में भी डाका डालने का प्रयत्न किया गया, परन्तु सफलता न हुई। इसके पश्चात लाहौर के क्रान्तिकारियों ने थानों में बम रखने की योजना की। हंसराज ने बम तैयार किए, परन्तु बम ठीक समय पर फटे नहीं।

इसके पश्चात सरदार हरदयालसिंह मैजिस्ट्रेट, रावलपिण्डी, को बम से उड़ा देने का प्रयत्न किया गया, परन्तु सफलता न हुई। इसी प्रकार से अभियुक्तों ने सरकाली गाँव तथा चकवाल में डाका डालने का निष्फल-प्रयत्न किया।

१ली सितम्बर को पुलिस को इस षड्यन्त्र का पता चला। इसी सम्बन्ध में जहाँगीरीलाल, रूपचन्द, कुन्दनलाल, इन्द्रपाल तथा गुलाबसिंह गिरफ़्तार हुए। कृष्णगोपाल के कहने पर एक घर की तलाशी ली गई, जहाँ से दो बम और एक पिस्तौल मिली।

भागे हुए अभियुक्त

इसके पश्चात सरकारी वकील ने कहा कि इस केस में १३ अभियुक्त फ़रार हैं। बहुत तलाश करने पर भी उनकी गिरफ़्तारी नहीं हो सकी। इसलिए उनके विरुद्ध धारा ५१२ के अनुसार कार्यवाही की जानी चाहिए।

लाला काशीराम इन्सपेक्टर सी० आई० डी० ने कहा कि मैंने श्री० सुखदेवराज बी० ए०, सम्पूर्णसिंह एम० ए०, प्रेमनाथ, श्रीमती दुर्गादेवी, सुशीला तथा प्रकाशो की बहुत तलाश की, परन्तु कुछ पता नहीं चला।

मि० सलीम के पूछने पर गवाह ने कहा कि मैं श्री० सुखदेव की तलाश में लाहौर, अमृतसर, दीनानगर, पठानकोट, गुरुदासपुर में गया, परन्तु कुछ भी पता न चला। प्रोफ़ेसर सम्पूर्णसिंह की तलाश कई स्थानों पर की गई, परन्तु कोई पता न चला। श्री० प्रेमनाथ की खोज काङ्गड़ा, लाहौर तथा अमृतसर में की। इसी ने प्रकाशवती को भी भगाया है। श्रीमती सुशीला की तलाश लाहौर, अमृतसर तथा गुजरात में की गई। श्रीमती दुर्गादेवी—पत्नी श्री० भगवतीचरण—की तलाश कई स्थानों पर की गई। आप श्री० सुखदेव के साथ चली गई हैं। मैं इन सबको ख़ूब अच्छी तरह से पहचानता हूँ।

इन्सपेक्टर ग़ुलाम मुहम्मद ने कहा, कि मैंने श्री० हंसराज की तलाश लायलपुर, चन्योट, झङ्ग, मुलतान, जालन्धर, पेशावर इत्यादि स्थानों में की, परन्तु कुछ पता नहीं चला।

सब-इन्सपेक्टर मन्सफ़अली ने कहा कि मैं श्री० लेखराम को खोज रहा हूँ।

हेड-कॉन्स्टेबिल इच्छनबेग ने कहा कि मैंने श्री० चन्द्रशेखर आज़ाद को सारे भारतवर्ष में ढूँढ़ा है, परन्तु कोई पता ही नहीं चलता। मैं काकोरी-षड्यन्त्र के समय से इसकी खोज कर रहा हूँ, परन्तु सब बेकार। श्री० शिव, श्री० चन्द्रशेखर के साथ रहते हैं।

हेड-कॉन्स्टेबिल रामसरनदास ने कहा कि मैं श्री० यशपाल को पहचानता हूँ, परन्तु मुझे अभी तक उसकी कोई खोज नहीं मिली है।

पण्डित दीवानचन्द सब-इन्सपेक्टर तथा बख़्शी सम्पूर्णसिंह इन्सपेक्टर श्री० छबीलदास तथा सीताराम की खोज करते रहे।

भागे हुए अभियुक्तों के विरुद्ध धारा ५१२ के अनुसार कार्यवाही होगी। कहा जाता है सरकार की ओर से ३२ गवाह पेश किए जायँगे।

पुलिस इन्सपेक्टर का बध

कलकत्ते का ३री जनवरी का समाचार है, कि इन्सपेक्टर तारिणी मुकर्जी को गोली से मार देने के अपराध में रामकृष्ण विसवास तथा कालिपादा चक्रवर्ती को अलीपुर में स्पेशल ट्रिब्यूनल के सामने पेश किया गया। अभियुक्तों की ओर से कोई वकील नहीं था। सरकारी वकील रायबहादुर एन०-एन० बैनर्जी ने अपने भाषण में कहा, कि अभियुक्तों के विरुद्ध धारा ३०२ आई० पी० सी०, १९ एफ़ आर्म्स एक्ट, और १२० बी०, आई० पी० सी० के अनुसार अभियोग चलाया जाएगा।

सरकारी वकील ने इन्सपेक्टर के बध की कहानी बताते हुए कहा कि गत १ली दिसम्बर को, २ बजे सबेरे इन्सपेक्टर तारिणी मुकर्जी, चाँदपुर स्टेशन पर इन्स्पेक्टर जनरल-पुलिस से मिलने गए। ४॥ बजे गाड़ी चाँदपुर स्टेशन पर पहुँची तो इन्सपेक्टर-जनरल के साथ वाले डिब्बे से दो बङ्गाली युवकों ने निकल कर इन्सपेक्टर तारिणी मुकर्जी पर गोलियाँ चलाईं। इन्सपेक्टर घायल होकर धरती पर गिर पड़ा।

अभियुक्त गोली चला कर वहाँ से भाग गए। इन्सपेक्टर-जनरल तथा उसके अरदली ने गोली चलाई, परन्तु वह ख़ाली गई। इन्सपेक्टर को अस्पताल भेजा गया, जहाँ उसका देहान्त हो गया।

सबेरे स्टेशन पर तलाशी लेने पर कई गोलियाँ मिलीं। हमला करने वालों का हुलिया तार द्वारा चारों ओर भेज दिया गया था और पुलिस अभियुक्तों की खोज कर रही थी। मेहर कालीबारी स्टेशन के समीप दो नवयुकों पर पुलिस को शक हुआ और उनको गिरफ़्तार कर लिया गया। अभियुक्तों के पास दो रिवॉल्वर तथा एक बम मिला।

दोनों अभियुक्तों का सम्बन्ध चिटगाँव केस से भी बतलाया जाता है।

गवर्नर गोली-काण्ड केस

लाहौर में मुक़दमा आरम्भ हो गया

८ अभियुक्त क़िले की जेल में

लाहौर का ३री जनवरी का समाचार है, कि पञ्जाब यूनिवर्सिटी के उपाधि-वितरण (कन्वोकेशन) के अवसर पर गवर्नर पर गोली चलाने के सम्बन्ध में पुलिस ने जिन १० व्यक्तियों को गिरफ़्तार किया था, उनके नाम यह हैं :—

(१) श्री० हरिकृष्ण, (२) श्री० गिरधारी लाल, (३) श्री० रणवीरसिंह, (४) श्री० दुर्गादास, (५) श्री० इहसान इलाही, (६) श्री० वीरेन्द्र, (७) श्री० चमनलाल, (८) श्री० जयदयाल, (९) श्री० मुहम्मद तुफ़ैल, (१०) श्री० दसौन्धा राम

इसके अतिरिक्त पुलिस ने निम्न-लिखित सज्जनों की भी तलाशियाँ लीं :—

श्री० अमीरचन्द, सरदार भगतसिंह के पिता—श्री० किशनसिंह, श्री० धन्वन्तरी के भाई श्री० विद्यानन्द जी, श्री० हीरालाल, २रे अभियुक्त गिरधारी लाल को पुलिस ने छोड़ दिया, श्री० हरिकृष्ण को आज मि० लूइस की अदालत में पेश किया गया। बाक़ी ८ अभियुक्त अभी तक क़िले में बन्द हैं।

मि० पी० एन० दत्त ने गवाही देते हुए कहा, कि २३ दिसम्बर को कन्वोकेशन एक बजे दोपहर में आरम्भ हुआ। गवर्नर सभापति थे। वाइस चान्सलर तथा दूसरे सिण्डीकेट के मेम्बर प्लेटफ़ॉर्म पर विराजमान थे। हॉल में कुल १५०० व्यक्ति थे। लोगों को अन्दर आने के लिए पास दिए गए थे। १ बज कर २० मिनट पर कन्वोकेशन समाप्त हुआ और लोग जुलूस बना कर बाहर निकले। सब से आगे मैं था और मेरे पीछे गवर्नर तथा श्री० ए० सी० वुल्नर, वाइस चान्सलर आ रहे थे। इनके पीछे अन्य व्यक्ति थे। मैंने अभी बरामदे में एक क़दम बढ़ाया ही था, कि मैंने गोली चलने की आवाज़ सुनी। उस समय गवर्नर मुझसे एक गज़ पीछे थे। इसके पश्चात एक और आवाज़ आई। मैंने समझा कि शायद बच्चे बड़े-दिन के उत्सव में पटाख़े छोड़ रहे हैं।

मैंने गवर्नर को 'रोबिङ्ग रूम' में भेज दिया। वहाँ मैंने दो और गोली चलने की आवाज़ सुनी और अभियुक्त हरिकृष्ण को हाथ में रिवॉल्वर लिए देखा। इतने ही में पुलिस वालों ने हरिकृष्ण को गिरफ़्तार कर लिया। फिर मैंने गवर्नर के पास जाकर देखा कि वह घायल हो गए हैं। मैंने करनल हारपर नेलसन को बुलाया और उन्होंने गवर्नर की मरहम-पट्टी की। पीछे मुझे पता चला कि मिस मेकडरमैट के भी चोट लगी है तथा सब-इन्सपेक्टर चननसिंह तथा एक दूसरा पुलिस अफ़सर भी घायल हुए हैं। उनको तुरन्त अस्पताल पहुँचाया गया।

इसके पश्चात रायसाहब जवाहरलाल ने गवाही देते हुए कहा कि उन्होंने हरिकृष्ण को हाथ में रिवॉल्वर लिए "विज़िटर गैलरी" में खड़े देखा। हरिकृष्ण ने छः गोलियाँ चलाईं। जब उसकी गोलियाँ समाप्त हो चुकीं, तो हमने दौड़ कर उसको पकड़ लिया। हरिकृष्ण की तलाशी लेने पर छः गोलियाँ मिलीं। हरिकृष्ण ने पुलिस को बताया कि वह मरदान का रहने वाला है। चननसिंह अस्पताल में मर गया।

इसके पश्चात कई और गवाहियाँ हुईं, जिसमें पहली गवाहियों का ही समर्थन किया गया।

४ थी जनवरी को मुक़दमा फिर आरम्भ हुआ। श्री० हरिकृष्ण ने मैजिस्ट्रेट से कहा, कि मैं चूँकि अनशन कर रहा हूँ, और न मैं मुक़दमे में भाग ही ले रहा हूँ, इसलिए हाज़िरी से मुझे मुक्त कर देना चाहिए। एक दो गवाहियों के पश्चात मैजिस्ट्रेट ने अभियुक्त से पूछा—क्या तुमने बुद्धसिंह सब-इन्सपेक्टर को गोली से घायल किया?

हरिकृष्ण—मुझे पता नहीं, कि वह मेरी गोली से घायल हुआ है। मैंने उसे नहीं देखा।

प्रश्न—क्या तुम्हारे पास रिवॉल्वर का लाइसेन्स है?

उत्तर—नहीं, मैंने रिवॉल्वर अपने गाँव में एक अफ़रीदी से ख़रीदा था।

प्र०—तुम्हें कुछ और कहना है?

उ०—नहीं।

मैजिस्ट्रेट के एक सवाल पूछने पर हरिकृष्ण ने कहा—मैं गवर्नर का बध करने के लिए ही लाहौर आया था। मैंने छः गोलियाँ चलाईं, दो गवर्नर को मारने के लिए और चार आत्म-रक्षा के लिए। मुझे उसी समय गिरफ़्तार कर लिया गया। मैंने क्यों ऐसा किया, इसका कारण मैं नहीं बताना चाहता।

मैजिस्ट्रेट के प्रश्न करने पर, कि आप लाहौर कब और किस लिए आए थे, अभियुक्त ने उत्तर दिया, कि मैं यह सब कुछ नहीं बतला सकता, पर गवर्नर को मारने के उद्देश्य से मैं अवश्य यहाँ आया था।

प्र०—आप लाहौर में कहाँ ठहरे थे?

उ०—मैं इस प्रश्न का उत्तर नहीं देना चाहता।

प्र०—क्या यूनिवर्सिटी में दाख़िल होने के लिए आपके पास टिकट था?

उ०—जी हाँ, मुझे टिकट मिल गया था।

प्र०—आपको टिकट कहाँ से मिला था?

उ०—मैं यह नहीं बतलाना चाहता।

प्र०—आप कुछ और कहना चाहते हैं?

उ०—केवल इतना ही, कि इस सारे काण्ड के लिए मैं ज़िम्मेदार हूँ, इससे अधिक मैं कुछ नहीं कहना चाहता।

अभियुक्त को सेशन्स सुपुर्द कर दिया गया है।

बाद के तार से पता चला है, कि श्री० हरिकृष्ण, मर्दन ज़िला के अन्तर्गत वल्लाधेर नामक स्थान के सुप्रसिद्ध ज़मींदार—लाला गुरुदास राम के १८ वर्षीय पुत्र हैं। कहा जाता है कि श्री० हरिकृष्ण के पिता श्री० गुरुदास राम जी के पिस्तौल का लाइसेन्स ज़ब्त कर लिया गया है।

देहली षड्यन्त्र केस

बनारस में गिरफ़्तारी

देहली का ३री जनवरी का समाचार है कि "देहली षड्यन्त्र" केस के सम्बन्ध में पुलिस बड़ी सरगर्मी से खोज कर रही है। बनारस के एक नवयुवक श्री० विद्याभूषण, एम० ए० को गिरफ़्तार करके लाया गया है। उनको श्री० बाबूराम के साथ (जिनको पुलिस ने देहली से पकड़ा है) देहली-जेल में रक्खा है।

इस मामले में पुलिस ने अभी तक १२ गिरफ़्तारियाँ की हैं। सुना है देहली क़िले में एक ख़ास बैरक बनाई जा रही है। यह मामला इसी बैरक में चलाया जायगा।

अभी तक श्री० विद्याभूषण और श्री० बाबूराम ने कोई बयान पुलिस को नहीं दिया है।

इनके अतिरिक्त पुलिस ने देहली षड्यन्त्र केस के सम्बन्ध में बहुत सी अन्य गिरफ़्तारियाँ भी की हैं। सुना जाता है, श्री० धन्वन्तरि भी (जिनको चाँदनी चौक में गिरफ़्तार किया गया था) इसी केस में अभियुक्त हैं। इस केस में पुलिस दूसरे अभियुक्तों की भी खोज कर रही है। इसी सम्बन्ध में पुलिस ने आनन्द-भोजन-भवन पर भी धावा किया और मैनेजर से कई प्रश्न पूछे। सुना है, इसी केस के एक अभियुक्त श्री० विमलप्रसाद के किसी साथी को भी पुलिस खोज रही है।

—नई देहली का २री जनवरी का समाचार है, कि पुलिस ने महात्मा जी के सेक्रेटरी श्रीयुत प्यारेलाल के छोटे भाई श्री० मोहनलाल को देहली रेलवे-स्टेशन पर बम फटने के सम्बन्ध में गिरफ़्तार किया है। कहा जाता है, देहली में जो नया षड्यन्त्र का मामला चलने वाला है, उसके सम्बन्ध में पुलिस आपकी तलाश कर रही थी।

—कलकत्ते का ४थी जनवरी का समाचार है, कि श्रीयुत दिनेश गुप्ता को, जिनको राइटर-बिल्डिङ्ग में कर्नल सिम्पसन की हत्या के सम्बन्ध में पुलिस ने गिरफ़्तार किया था, आज अस्पताल से अलीपुर जेल में भेज दिए गए। उनके भाई को कुछ शर्तों पर उनसे मिलने की आज्ञा प्राप्त हो गई है। कल अभियुक्त को मैजिस्ट्रेट के सामने पेश किया जावेगा।

—९वीं जनवरी का समाचार है कि आज चिटगाँव शस्त्रागार पर आक्रमण करने वाला मामला, इसलिए पेश नहीं हो सका, क्योंकि ट्रिब्यूनल के जज रायबहादुर नरेन्द्रनाथ लहिरी की धर्मपत्नी का देहान्त हो गया है।

कर्नल सिम्पसन का बध

एक एङ्गलो-इण्डियन गिरफ़्तार

कलकत्ते का ९वीं जनवरी का समाचार है कि मि० आर० ए० जे० हैकरडन नामक एक एङ्गलो इण्डियन महाशय को दक्षिण कलकत्ता के समीप ही गिरफ़्तार किया गया है।

कहा जाता है कि स्वर्गीय कर्नल सिम्पसन की हत्या इन्हीं महाशय के रिवॉल्वर से हुई है। अभियुक्त को ज़मानत पर छोड़ दिया गया है।

कानपुर में अफ़सरों पर गोलियाँ दाग़ी गईं!

क्रान्तिकारी गिरफ़्तार

कानपुर का २री जनवरी का समाचार है कि आज शाम के लगभग ४॥ बजे गाँधी रोड, कानपुर पर मि० जमशेद जी की शराब की दूकान के समीप श्री० अशोक कुमार नामक एक बङ्गाली युवक ने, बा० टीकाराम इन्सपेक्टर सी० आई० डी० और पण्डित अयोध्याप्रसाद पाठक सी० आई० डी० पर, जो वहाँ आपस में बातें कर रहे थे, फ़ायर कर दिया। पर गोली लगी नहीं, फ़ायर की आवाज़ सुनते ही दोनों अफ़सरों ने उधर देखा ही था, कि अशोककुमार लापता हो गया।

कुछ समय पश्चात पुलिस का एक दल सन्देह पर श्री० अशोककुमार के मकान पर पहुँचा। दोनों ओर से गोलियाँ चलीं। अन्त में क्रान्तिकारी पकड़ लिया गया। कहा जाता है, उसके पास ३ कारतूस भी मिले हैं।

लाट-साहब के दफ़्तर के पास पिस्तौल-सहित एक नौजवान पकड़ा गया

लाहौर का ३री जनवरी का समाचार है कि एक नौजवान सेक्रेटेरियट में गिरफ़्तार कर लिया गया। कहा जाता है कि वह गवर्नर के दफ़्तर की ओर जा रहा था। एक सफ़ेद-पोश सिपाही को कुछ सन्देह हुआ और उसने नवयुवक को गिरफ़्तार कर लिया। तलाशी लेने पर नवयुवक के पास एक पिस्तौल मिली।

—पेशावर का ३री जनवरी का समाचार है, कि चारसद्दा में पिछले शुक्रवार को अमीरुल्ला नामक एक "रेड शर्ट" की बम फट जाने के कारण मृत्यु हो गई, पुलिस जाँच कर रही है।

"हमने हार मानना नहीं सीखा"

प्रसिद्ध क्रान्तिकारी श्री० विशेश्वर के साथी सरदार टहलसिंह पर अभियोग

लाहौर का ९वीं जनवरी का समाचार है कि श्री० विशेशर के साथी, सरदार टहलसिंह को आज मि० लुईस की कचहरी में पेश किया गया। अभियुक्त का चालान धारा ३०७ तथा आर्म्स-एक्ट के अनुसार हुआ है।

मि० सैयद अलीशाह इन्सपेक्टर-पुलिस ने गवाही देते हुए कहा, कि ४ नवम्बर को मैं पुलिस का एक दल लेकर धर्मपुर में कुछ सन्देहजनक मकानों की तलाशी लेने गया। हमको पता चला था, कि लाहौर षड्यन्त्र केस के कुछ भागे हुए अभियुक्त वहाँ पर रहते हैं। हमारे आने का पता पाकर श्री० विशेशरनाथ तथा सरदार टहलसिंह मकान छोड़ कर नहर की तरफ़ निकल आए। मैंने सिपाहियों को उनके पीछे लगाया। सिपाहियों ने जाकर श्री० विशेशरनाथ को घेर लिया। पुलिस वालों ने श्री० विशेशरनाथ की ओर राइफ़ल से निशाने बाँध लिए और उसको गिरफ़्तार हो जाने को कहा। परन्तु श्री० विशेशर ने चाक़ू से पुलिस वालों पर प्रहार करने का यत्न किया। पुलिस वालों ने बन्दूक़ चला दी, जिस से वह घायल होकर धरती पर लोटने लगा।

इतने ही में पीछे से फ़ायर की आवाज़ हुई और एक पुलिस वाले के पैर में गोली लगी। पुलिस ने घूम कर देखा, कि सरदार टहलसिंह अभियुक्त गोली चला रहा है।

पुलिस ने श्री० टहलसिंह की ओर बन्दूक़ें तान कर उसे हथियार रख देने को कहा; परन्तु सरदार ने उत्तर दिया, कि 'हमने हार मानना नहीं सीखा है।' इस पर गोली चलाई गई। सरदार टहलसिंह के कोट में गोली लगी जिससे वह धरती पर गिर गया। पुलिस ने उसे गिरफ़्तार किया। उसके पास एक ६२४ बोर की छोटी पिस्तौल तथा कुछ गोलियाँ मिलीं। श्री० विशेश्वरनाथ का देहान्त दूसरे दिन अस्पताल में हुआ।

अभियुक्त ने कोई बयान नहीं दिया। मामला स्थगित रक्खा गया है!

लाहौर षड्यन्त्र केस के 'अभियुक्त' की ज़मानत पर रिहाई

लाहौर का ६ठी जनवरी का समाचार है कि नए षड्यन्त्र केस के 'अभियुक्त' श्री० हरनामसिंह को १०,०००) रु० की ज़मानत पर छोड़ने की आज्ञा स्पेशल ट्रिब्यूनल ने दे दी है।

श्री० सुखदेवराज गिरफ़्तार

लाहौर षड्यन्त्र केस

लाहौर, ९ जनवरी। सहयोगी "ट्रिब्यून" के विशेष सम्वाददाता के कथनानुसार पञ्जाब गवर्नमेण्ट की ओर से एक घोषणा की गई है, कि श्री० सुखदेवराज विद्यार्थी एम० ए० क्लास, जिनकी गिरफ़्तारी के लिए पञ्जाब सरकार की ओर से २,०००) रु० का पुरस्कार घोषित हुआ था, देहली में गिरफ़्तार कर लिए गए हैं।

यह घोषणा ज़िला-कचहरी में लगे हुए एक इश्तिहार में मिली है।

—मदारीपुर का ३री जनवरी का समाचार है कि पुलिस ने एक बङ्गाली नवयुवक अनन्तरञ्जन गङ्गूली को डाका डालने के उद्योग करने में गिरफ़्तार किया है। तलाशी में पुलिस को ११ बम और कुछ बम बनाने का सामान मिला। अभियुक्त का मामला ९ जनवरी को पेश होगा।

(शेष मैटर ३रे पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)
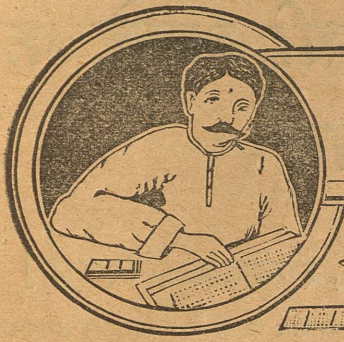
सम्मिलित-चुनाव की असफलता

देश-प्रेमी भारतीयों को यह सुन कर दुख होगा कि भारत के लिबरल-दल के नेताओं ने गोलमेज़ परिषद में, जो भारत में सम्मिलित-चुनाव की प्रथा आरम्भ करने का प्रयत्न किया था, वह असफल हो गया और भविष्य में कोई आशा नहीं है, कि इस शर्त को वहाँ गए हुए मुस्लिम सदस्य क़बूल करेंगे! इस तरह मुसलमानों के जातीय नेताओं की तो विजय अवश्य हुई है, परन्तु भारत के सब मुसलमान इस प्रबन्ध से सन्तुष्ट नहीं हैं। राष्ट्रीयता के भावों को उच्च स्थान देने वाले मुसलमानों की संख्या अब दिनोंदिन बढ़ रही है और वे जातीय चुनाव के ख़िलाफ़ हैं। यह बात नेहरू-रिपोर्ट की रचना के समय में किए गए वाद-विवादों से साफ़ मालूम हो जाती है। विलायत में जो इस सम्बन्ध में बातचीत हुई है, उससे प्रधान-मन्त्री रैमज़े-मैकडॉनेल्ड को साफ़ मालूम हो गया होगा कि मुस्लिम सदस्य इस प्रश्न को न्यायपूर्ण रीति से क्यों नहीं हल करना चाहते। १३ तारीख़ के "स्पेक्टेटर" में डॉक्टर ई० टॉमसन लिखते हैं, कि "कॉङ्ग्रेस के आन्दोलन ने जो एक बहुत ही अच्छी बात की है, वह यह है कि उसने नवयुवक हिन्दू तथा मुसलमानों के हृदय से जातीयता का भाव बिलकुल उठा दिया है। राउण्डटेबिल परिषद में आए हुए मुसलमान सदस्यों को चाहिए, कि वे जातीय भाव रखने वालों से सम्बन्ध तोड़ कर राष्ट्र-प्रेमी नवयुवक दल के भावों को प्रोत्साहित करें।" पर मुस्लिम सदस्यों ने इस बुद्धिमत्तापूर्ण मार्ग पर चलने से इनकार किया है। क्या वे मुस्लिम नेता, जो इस प्रथा के विरुद्ध हैं, इङ्गलैण्ड से लौटने के बाद अपनी जाति को सम्मिलित चुनाव की ओर झुकाने का, प्रयत्न करने का, साहस करेंगे? एङ्ग्लो-इण्डियन समाचार-पत्र तथा यूरोपियन सङ्घ, जोकि जातीय चुनाव के समर्थक थे, इस नई घटना से अवश्य बहुत ख़ुश हुए होंगे। पर भारत की भावी शासन-प्रणाली में इस प्रश्न के महत्व का ख़्याल करते हुए, तथा हिन्दू-मुस्लिम एकता का ध्यान रखते हुए, हम समझते हैं कि यह बहुत आवश्यक है, कि राष्ट्रीयता के भावों की विजय होवे और सम्मिलित चुनाव स्वीकार किया जावे।

—"लीडर" (अङ्गरेज़ी)

* * *

"हमने तो पहिले ही कहा था"

जो भारतवासी यह समझते थे, कि भारतवर्ष के सारे दुखों का निबटारा गोलमेज़ परिषद में हो जावेगा, आज उनकी आशा पर पानी फिर रहा है। 'इण्डियन डेलीमेल' का लन्दन-स्थित सम्वाददाता लिखता है, कि सारी परिस्थिति बहुत ही घृणित और खेदजनक है। स्वराज्य-विरोधी अङ्गरेज़ अब बहुत ख़ुश हैं और साफ़ कहते फिरते हैं कि हमने तो पहिले ही कहा था, कि भारतवासी स्वराज्य देने के योग्य नहीं हैं। गोलमेज़ परिषद में जाने वाले हिन्दू तथा मुस्लिम सदस्यों की मुठभेड़ देख कर इस सम्वाददाता की बुद्धि चक्कर में पड़ गई है और वह कहता है कि "भारतवासियों को यह साफ़-साफ़ कह देना चाहिए, कि जातीयता के तुच्छ झगड़ों में पड़ कर हम राष्ट्रीय कल्याण के मार्ग को नहीं छोड़ सकते।" हमारा तो यह ख़्याल है, कि इन जातीय झगड़ों से भारत की जनता का कोई सम्बन्ध नहीं है। लन्दन की कॉन्फ्रेन्स के लिए सरकार ने जो तैयारी की थी, वह सफल हुई है। मिस्टर वेजवुड बेन तथा लॉर्ड इरविन ने जो गोलमेज़ के प्रतिनिधि चुने हैं, उन्हें वे बहुत अच्छी तरह से जानते हैं, उन्होंने यह चुनाव बहुत सोच-समझ कर किया है। गोलमेज़ परिषद में जातीयता के समर्थन करने वाले सदस्य बहुत बड़ी संख्या में रक्खे गए हैं और वे किसी विशेष उद्देश्य से ही वहाँ बुलाए गए हैं। प्रधान-सचिव मैकडॉनल्ड भी यह अच्छी तरह जानते थे, कि इस तमाशे का अन्त किस तरह होगा। इसीलिए उन्होंने भारत की भावी शासन-प्रणाली के विषय में कोई घोषणा नहीं की। परिषद में हिन्दू-मुस्लिम दङ्गा हो गया है! अब वे संसार के और देशों से कह सकते हैं कि हम क्या करें, हम तो भारत के सुधार के लिए, उसकी उन्नति के लिए हर एक बात करने को तैयार हैं। हम लोगों ने इस परिषद की सफलता के लिए बहुत प्रयत्न किया, पर वह सफल न हो सकी, इस सबके लिए भारतवासी ख़ुद ज़िम्मेदार हैं। भारत की स्वतन्त्रता के विरोधी अङ्गरेज़ यदि ख़ुश हैं, तो वह इसलिए हैं कि मि० मैकडॉनल्ड भी उनकी ही नीति का पूर्ण तौर से अनुकरण कर रहे हैं!

पर इससे भारतवासियों को चिन्तित होने की कोई ज़रूरत नहीं है। इस दशा के लिए वे ज़िम्मेदार नहीं हैं। भारतनिवासी तो शुरू से ही गोलमेज़ परिषद के ख़िलाफ़ हैं; और लिबरल तथा अन्य दलों के नेता, जो इस परिषद में गए हैं, वे जनता की इच्छा के विरुद्ध वहाँ उनके प्रतिनिधि बन कर बैठे हैं। फिर उन पर बीतने वाले कष्टों से भारतनिवासी दुखी क्यों हों? अब रही स्वराज्य-विरोधी अङ्गरेज़ों की बात, जोकि मज़दूर-दल की चालाकी की तारीफ़ कर रहे हैं और ख़ुश हो रहे हैं, तो उनके विषय में हम केवल यह कहेंगे, कि वे ज़्यादा दिन तक इस तरह ख़ुश नहीं रह सकते। "कण्टेम्पोरेरी रिव्यू" ने लिखा था कि "इङ्गलैण्ड के कुछ मूर्ख नेता यह समझते हैं, कि हम दमन तथा तलवार के ज़ोर से ३० करोड़ भारतवासियों पर उनकी इच्छा के विरुद्ध शासन कर सकते हैं, पर यह कभी नहीं हो सकता। जिस दमन-नीति से हम आयर्लैण्ड को अपने क़ब्ज़े में रख सके थे, उस नीति से अब हम भारत को नहीं रख सकते। अब फ़ौज तथा शस्त्र-बल द्वारा दूसरे देशों पर शासन करने के दिन नहीं रहे।"

पर इङ्गलैण्ड के कई नेता अभी इस उपदेश की सचाई में विश्वास नहीं करते। लन्दन के इन राजनीतिज्ञों को, जो कोरी चालाकी से भारत की माँग को टालना चाहते हैं, शीघ्र ही यह मालूम हो जावेगा, कि इन चालाकियों से राष्ट्रीयता की लहर रुक नहीं सकती। हमारे शासक हमसे कहते हैं, कि अपनी दशा को देखो, ठोस बातों का ख़्याल रक्खो! हम कहते हैं, कि ये ही ठोस बातें तो हमारे माँग की समर्थक हैं। भारत विदेशी राज्य के नीचे दबा हुआ है और स्वतन्त्रता पाने के लिए व्याकुल है। यह एक ऐसी ठोस बात है, जिसे एक अन्धा भी जान सकता है। भारत की भावी रचना न जातीयता के समर्थक भारतीय नेताओं के हाथ में है और न स्वराज्य-विरोधी अङ्गरेज़ी शासकों के हाथ में ही! दमन होने पर भी भारतीयों के दबे हुए प्राकृतिक भाव एक दिन उमड़ेंगे और उनके वेग को कोई भी न रोक सकेगा। जब वह मौक़ा आवेगा, तब फिर भारतीय अपने ब्रिटिश शासकों से कह सकेंगे—

"हमने तो आपसे पहिले ही कहा था।"

—"लिबर्टी" (अङ्गरेज़ी)

* * *

विरोध या दमन?

यूरोपियन सङ्घ को वाइसराय के उस भाषण को सुनने का आदर प्राप्त हुआ है, जिसमें उन्होंने अपनी नीति की, जोकि ब्रिटिश सरकार की नीति के अनुकूल है, प्रशंसा की है। वे कहते हैं कि "इस आन्दोलन के आरम्भ होने के पूर्व ही मैंने इस विषय में अपने विचार निश्चित कर लिए थे, जिन पर अनुभव के बाद मेरा विश्वास और भी दृढ़ हो गया है। वह यह है कि इस आन्दोलन को दबाने के लिए बहुत बेढब दमन से काम लिया जाना सम्भव है और फिर कुछ समय के बाद जब समस्त आन्दोलन का विनाश हो जावेगा, हम कह सकेंगे कि अब शान्ति स्थापित हो गई।" प्रत्येक भारतवासी वाइसराय के इन शब्दों की प्रशंसा करेगा। परन्तु क्या वाइसराय यह समझते हैं, कि वे ब्रिटिश सरकार की आज्ञा का ठीक-ठीक पालन कर रहे हैं, जैसा कि उन्होंने कहा है कि मेरा यह दृढ़ विचार है? क्या प्रान्तीय सरकारें, जोकि इनकी आज्ञा-पालन कर रही हैं तथा पुलिस, जिनकी आपने बार-बार मुक्तकण्ठ से प्रशंसा की है, इनके इन विचारों पर ध्यान दे रही है? वाइसराय महोदय को विश्वास है कि वे यह कर रही हैं। यही नहीं, उन्होंने अपने भाषण में इस विषय पर काफ़ी ज़ोर दिया है।

लॉर्ड इरविन ने अपनी नीति का अपने सामर्थ्य भर बहुत ही ज़ोरों में समर्थन किया है। और इस बार भी उन्होंने वर्तमान आन्दोलन तथा राष्ट्रीय माँग से मित्रता दर्शाने का प्रयत्न किया है। इससे उनका उद्देश्य यह दिखलाने का है, कि वर्तमान आन्दोलन महज़ विनाशकारी है, यह रचनात्मक नहीं है। वे कहते हैं कि "यदि इस भयानक दुर्घटना को रोकने का नाम दमन है, तो सरकार गुनहगार अवश्य है। पर दुनिया में कौन ऐसी सरकार है, जो इस नीति का अनुसरण न करती।" यदि वाइसराय महोदय ने गत छः महीनों के इतिहास का ख़्याल करने का प्रयत्न किया होता, तो उन्होंने "रोकना" शब्द का उपयोग न किया होता। वर्तमान आन्दोलन तो केवल उनकी दमन-नीति से बढ़ रहा है।

ऑर्डिनेन्स तथा अन्य असाधारण क़ानून आन्दोलन को "रोक" नहीं रहे हैं, वे सत्याग्रहियों के हाथ में सरकार की सत्ता को "रोकने" का मौक़ा दे रहे हैं। इस दमन-नीति की केवल यही एक ग़लती नहीं है। जेल में सत्याग्रही क़ैदियों के साथ दुर्व्यवहार, हर जगह निःशस्त्र जनता के ऊपर लाठी-वर्षा, ११४ धारा का दुरुपयोग और बारदोली का दमन—इन सब दुर्घटनाओं से वाइसराय महोदय पूर्णतया परिचित हैं। और इन सबके लिए उन्हें श्रीयुत ब्रेल्सफ़र्ड तथा एलेक्ज़ेण्डर

ऐसे पुरुषों की शहादत मिली है, जिन्हें अपने देश की भलाई का पूरा ध्यान है। फिर भी वाइसराय इस नीति—भयङ्कर दमन की नीति को क्या साधारण दमन-नीति तक कहने को तैयार नहीं हैं ? हमें शान्ति और विनाश में कोई भेद ही नज़र नहीं आता। दमन-नीति के विरोधियों को शान्त करने के लिए वे उन्हें भारत-सरकार के करीते की याद दिलाते हैं, जिसे वे अब तक भूल चुके हैं, यह उनकी बड़ी ग़लती है। यदि एक बार यह भी कह दिया जावे, कि उसमें इन्होंने उदारता दिखाई है, तो भी इसमें इन्होंने जो वर्तमान आन्दोलन के सम्बन्ध में अदूरदर्शिता तथा अनुदारता प्रदर्शित की है, उससे लोगों को और भी दुख है ! फिर वाइसराय ने जो यह कहा, कि कॉङ्ग्रेस ने जो अहिंसा का धर्म स्वीकार किया है, वह केवल ढोंग मात्र है, यह बिलकुल ग़लत है। क्या वाइसराय तथा उनके साथी इस बात को भी मानने को तैयार नहीं हैं, कि कॉङ्ग्रेस ने चाहे और जो कुछ किया हो, पर इसने क्रान्तिकारियों को कभी भी प्रोत्साहित नहीं किया है ? केवल यही नहीं, लॉर्ड इरविन को यह अच्छी तरह मालूम है, कि महात्मा गाँधी ने वर्तमान आन्दोलन क्रान्तिकारी तथा ब्रिटिश साम्राज्य दोनों के विरुद्ध लड़ने के लिए उठाया है। यह मत प्रत्येक भारतवासी का है, जोकि भारत के विषय में कुछ भी जानकारी रखता है। यहाँ तक कि वाइसराय द्वारा राउण्डटेबिल कॉन्फ्रेन्स के लिए नियुक्त किए हुए सदस्य श्रीयुत के० टी० पाल तक इस विचार से सहमत हैं। परन्तु लॉर्ड इरविन ने इस पर ध्यान ही नहीं दिया है। यह क्रिसमस का समय है, इसमें शान्ति तथा परोपकार के भावों का राज्य होना चाहिए और इस समय में बेचारी ग़ैर-क़ानूनी ठहराई हुई कॉङ्ग्रेस ऐसी संस्था के विषय में भी लॉर्ड इरविन को इतने ख़राब विचार नहीं रखने चाहिए थे। पर भारत पर तो वे सदा दयालु रहते हैं। अपनी नीति-समर्थक भाषण देने के बाद क्रिसमस-उपहार के बतौर उन्होंने झट से तीन "फ़रमान" जारी कर दिए, जोकि उनके भाषण में कहे हुए विचारों के सर्वथा विरुद्ध हैं।

—"बॉम्बे क्रॉनिकल" (अङ्गरेज़ी)

* * *

ऑर्डिनेन्सों का पुनरागमन

आन्दोलन सम्बन्धी सरकारी रिपोर्टों से तो यह मालूम होता है, कि उनके दृष्टि-कोण से भारत की दशा बेहतर होती जा रही है, परन्तु समाचार-पत्रों पर तथा लगानबन्दी के सम्बन्ध में जो हाल ही में ऑर्डिनेन्स फिर से जारी किए गए हैं, उनसे यह साफ़ मालूम होता है, कि अभी भारत की दशा काफ़ी भयानक है। प्रेस-ऑर्डिनेन्स के अन्त होने के बाद भारत के सम्पादकों को ज़रा खुल कर साँस लेने का मौक़ा मिला था और यह ख़्याल किया जाता था, कि अब वाइसराय को इसको फिर से जारी करने का अधिकार नहीं है। यदि वे इसका फिर से उपयोग करना चाहते हैं, तो उन्हें लेजिस्लेटिव एसेम्बली की अनुमति माँगनी पड़ेगी। पर अब यह साफ़ ज़ाहिर हो रहा है, कि वाइसराय बिना उसकी अनुमति के उसी ऑर्डिनेन्स को फिर से लगा सकता है। यदि यही बात ठीक है, तो फिर वर्तमान शासन-प्रणाली में वाइसराय के ऑर्डिनेन्स जारी करने के अधिकारों पर जो रुकावट रक्खी गई है, वह किस उद्देश्य से रक्खी गई है ? इस तरह तो हर एक ऑर्डिनेन्स फिर से जारी किया जा सकता है और ऑर्डिनेन्स का शासन-काल अनियमित समय तक बढ़ाया जा सकता है। शासन-प्रणाली की रक्षा के

(शेष मैटर ११वें पृष्ठ के तीसरे कॉलम के नीचे देखिए)

गत सात महीनों में विदेशी कपड़े का भारत में आयात

[प्रोफ़ेसर दयाशङ्कर जी दुबे, एम० ए०, एल्-एल्० बी०, इलाहाबाद युनिवर्सिटी]

विदेशी व्यापार के सम्बन्ध में भारत-सरकार प्रति मास एक रिपोर्ट प्रकाशित करती है। अक्टूबर सन् १९३० की रिपोर्ट अभी हाल ही में प्रकाशित हुई है, उसके आधार पर इस लेख में यह बतलाया जाता है कि गत सात महीनों में व ख़ासकर अक्टूबर १९३० में भारत में विदेशी कपड़े के आयात की क्या दशा थी।

भारत में विदेशी कपड़ा कराची, बम्बई, मद्रास, कलकत्ता और रङ्गून के बन्दरगाहों द्वारा ही आता है। नीचे के कोष्ठक में यह बतलाया जाता है कि सन् १९२९ और १९३० के पहली अप्रैल से ३० अक्टूबर तक सात महीनों में प्रत्येक बन्दरगाह में कितना विदेशी कपड़ा जहाज़ द्वारा आया :—

नाम बन्दरगाह	विदेशी कपड़े के आयात का मूल्य (लाख रुपयों में)			विदेशी कपड़े के आयात का परिमाण (लाख गज़ में)		
	सन् १९२९ के सात महीने	सन् १९३० के सात महीने	प्रति सैकड़ा कमी	सन् १९२९ के सात महीने	सन् १९३० के सात महीने	प्रति सैकड़ा कमी
कलकत्ता ...	१,१३४	५५२	५१	४,६५९	२,६८४	४५
बम्बई ...	८७५	३३५	६२	३,१३८	१,३२५	५८
कराची ...	४५२	२८५	३७	१,६७६	१,२१०	२८
रङ्गून ...	२८४	१९५	३२	८३५	६६०	२१
मद्रास ...	२००	११६	४२	६१३	४३१	३०
मीज़ान ...	२,९४५	१,४८३	५०	१०,९२१	६,३१०	४२

इस कोष्ठक से मालूम होता है कि गत सात महीनों में विदेशी कपड़े का आयात क़रीब ६३ करोड़ गज़ था और उसका मूल्य १४ करोड़ ८३ लाख रुपया था। सन् १९२९ के इन्हीं सात महीनों में कपड़े के आयात का परिमाण १०९ करोड़ गज़ और उसका मूल्य २९ करोड़ ४५ लाख रुपया था। अर्थात् गत वर्ष की अपेक्षा सन् १९३० के गत सात महीनों में कपड़े के आयात में ४६ करोड़ गज़ की तथा मूल्य में १४ करोड़ ६२ लाख रुपयों की कमी हुई। मूल्य के हिसाब से यह कमी प्रायः ५० प्रति सैकड़ा है, अर्थात् गत वर्ष की अपेक्षा इस वर्ष सात महीनों में आधे मूल्य का कपड़ा ही भारत में विदेश से आया। आयात की कमी प्रायः सब बन्दरगाहों में हुई, परन्तु सब से अधिक कमी बम्बई में हुई है। वहाँ ६२ प्रति सैकड़ा कमी आयात के मूल्य में हुई है और परिमाण के हिसाब से वह ५८ प्रति सैकड़ा के बराबर है। कपड़े का सब से अधिक आयात कलकत्ता के बन्दरगाह के द्वारा होता है। उसमें क़रीब ५० प्रति सैकड़ा कमी आयात में हुई है। सब से कम कमी रङ्गून के बन्दरगाह में हुई। कराची में कमी मद्रास की अपेक्षा कम है।

विदेशी कपड़े के आयात की कमी प्रति मास बढ़ती जा रही है। अक्टूबर १९२९ और १९३० में प्रत्येक बन्दरगाह से विदेशी कपड़े के आयात का मूल्य और परिमाण नीचे लिखे अनुसार था :—

नाम बन्दरगाह	विदेशी कपड़े के आयात का मूल्य (लाख रुपयों में)			विदेशी कपड़े के आयात का परिमाण (लाख गज़ में)		
	अक्टूबर १९२९ में	अक्टूबर १९३० में	प्रति सैकड़ा कमी	अक्टूबर १९२९ में	अक्टूबर १९३० में	प्रति सैकड़ा कमी
कलकत्ता ...	१३५	२९	७९	५६१	१५३	७३
बम्बई ...	१२७	१८	८६	४८१	७३	८५
कराची ...	४४	१६	६४	१६०	७१	५६
रङ्गून ...	३०	२२	२७	८१	८३	...
मद्रास ...	२०	११	४५	६६	४८	२७
मीज़ान ...	३५६	९६	७३	१,३४९	४२८	६८

इस कोष्ठक से स्पष्ट रूप से मालूम होता है, कि विदेशी कपड़े के आयात की बड़ी तीव्र गति से कमी हो रही है। अक्टूबर १९३० में केवल ९६ लाख रुपयों का कपड़ा भारत में आया, जिसका परिमाण ४ करोड़, २८ लाख गज़ था। अक्टूबर १९२९ में ३ करोड़, ५६ लाख रुपयों का कपड़ा भारत में आया था, इस प्रकार एक मास में ही २ करोड़, ६० लाख रुपए के कपड़ों का आयात कम हो गया। सब से अधिक कमी बम्बई के बन्दरगाह में हुई है। वहाँ पर एक पञ्चमांश से भी कम कपड़ा विदेश से इस मास में आया। केवल रङ्गून का बन्दरगाह ही ऐसा है, जिसमें विदेशी कपड़े के आयात का परिमाण गत वर्ष की अपेक्षा अधिक हो गया है, यद्यपि उसका मूल्य गत वर्ष की अपेक्षा कम है।

विदेशी कपड़ों में बिना धुले सफ़ेद कपड़े, धुले हुए सफ़ेद कपड़े और रङ्गीन कपड़ों की प्रधानता रहती है। नीचे के कोष्ठक में यह बतलाया जाता है कि अक्टूबर सन् १९२९ और १९३० में इन कपड़ों के आयात का मूल्य और परिमाण क्या था :—

'सीमा-प्रान्त के गाँधी—अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ को राष्ट्रपति चुनो'

"उससे सीमा-प्रान्त के लोगों के कष्ट दूर हो जायँगे और आन्दोलन की प्रगति बढ़ जायगी"

'बाम्बे क्रॉनिकल' में एक पारसी सज्जन, श्री० ज़बेरी ने, सीमा प्रान्त के अहिंसा के मूर्तिमान अवतार श्री० ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ को आगामी कॉङ्ग्रेस का सभापति चुनने का प्रस्ताव करते हुए, लिखा है कि :—

"हमें सर्वशक्तिमान नौकरशाही की इस शैतानी-चाल के विरुद्ध, कि इस संग्राम में हर एक जाति के लोग सम्मिलित नहीं हैं, अपना ध्यान आकर्षित करने की अत्यन्त आवश्यकता है। कॉङ्ग्रेस ने यह प्रमाणित कर दिया है, कि इस युद्ध में हिन्दू-मुसलमान, सिक्ख, पारसी आदि सभी जातियों के लोग सम्मिलित हैं। गवर्नमेण्ट दुनिया में इस बात का डङ्का पीट रही है, कि मुसलमानों का इस आन्दोलन में बिलकुल हाथ नहीं है। गवर्नमेण्ट की पदवियों से विभूषित कुछ मुसलमान-पिट्ठू उससे अधिक सम्मान प्राप्त करने और नाम कमाने के लिए देश के हितों पर कुठाराघात तक करने के लिए अवश्य तैयार हैं; किन्तु कॉङ्ग्रेस ने उनका भण्डाफोड़ कर दिया है, फिर भी अभी लाखों मुसलमान किसानों और गाँवों में जीवन व्यतीत करने वाली उस जनता को उचित रास्ते पर लाने का प्रयत्न नहीं किया गया है, जो अभी कॉङ्ग्रेस को अपना सर्वस्व समर्पण करने में हिचकिचाती है। जिस दिन उनके सम्मुख इन नक़ली मुसलमान-नेताओं की देश-भक्ति का भण्डाफोड़ कर दिया जायगा, उसी दिन उन मुसलमानों की स्वतन्त्रता की भावनाओं पर से पर्दा हट जायगा। यह सफलता प्राप्त हो जाने से इस युद्ध में हम शीघ्र ही विजय प्राप्त कर सकेंगे।

परन्तु इस पर्दे को हटाने की शक्ति किस महापुरुष में है? कौन व्यक्ति इस भटकी हुई मुसलमान जनता को सच्चे मार्ग पर ला सकता है? मैं पूर्ण विश्वास के साथ कह सकता हूँ, कि ऐसा व्यक्ति सीमा प्रान्त का गाँधी, और एक लाख देशभक्त ख़ुदाई ख़िदमतगारों का नायक ख़ान अब्दुल ग़फ़्फ़ार ख़ाँ है, जो इस समय जेल की चहारदीवारी के अन्दर अपनी कठिन तपस्या का दण्ड भोग रहा है! उसके मुक्त होते ही या मुक्त न होने पर, उसके प्रतिनिधि, उसके पुत्र, या किसी अन्य निर्वाचित व्यक्ति को देश के सिंहासन पर आरूढ़ कर उसकी बागडोर उसके हाथों में दे देना चाहिए। उस व्यक्ति के हाथों में, जो अहिंसा के अवतार महात्मा गाँधी का सच्चा पुजारी है और जिसने सीमा प्रान्त के ख़ूँख़ार और जल्लाद पठानों तक, उनका सन्देश पहुँचा कर, उन्हें इस अहिंसात्मक आन्दोलन में अग्रसर किया है, भारत भर की भूली-भटकी मुसलमान जनता का और देश का नेतृत्व दे दो! यदि देश को आदर्श गौरव प्रदान करना है, तो उसकी बागडोर ऐसे व्यक्ति के हाथों में दो, जिसे भौतिक सभ्यता छू तक न गई हो। वे गवर्नमेण्ट के अन्यायपूर्ण क़ानूनों का पालन भले ही न करें, परन्तु वे सच्चे ईश्वरीय नियमों का पालन अवश्य करेंगे और उनकी रक्षा में अपना सर्वस्व समर्पण कर देंगे। जो व्यक्ति शेरों को पालने में समर्थ हुआ है, जिसने पठान जैसी जङ्गली और ख़ूँख़ार जाति के घातक शस्त्र फिंकवा कर उसे महात्मा गाँधी के अहिंसात्मक युद्ध में अग्रसर किया है; वह सचमुच में देश के सिंहासन पर आरूढ़ होने के योग्य है। और जब यह देवदूत अपना उज्ज्वल प्रकाश फैलाएगा, उनके आत्म-सम्मान तथा इज़्ज़त के नाम पर अपील करेगा, तब उसके वे सभी धर्मावलम्बी, जो अभी तक सोच-विचार में पड़े हैं, लज्जा से अपना मस्तक झुका लेंगे और इस महायुद्ध में अपना सर्वस्व समर्पण कर अपनी भूत की शिथिलता का प्रायश्चित करेंगे। हमें इस महापुरुष को इस सम्मान के पद पर विभूषित करने दो और स्वतन्त्रता शीघ्र ही दौड़ कर हमारा दरवाज़ा खटखटाने लगेगी।"

* * *

(१०वें पृष्ठ का शेषांश)

कपड़े का भेद	आयात का परिमाण (लाख गज़ में)			आयात का मूल्य (लाख रुपयों में)		
	अक्टूबर सन् १९२९ में (लाख गज़)	अक्टूबर सन् १९३० में (लाख गज़)	कमी प्रति सैकड़ा	अक्टूबर सन् १९२९ में (लाख रुपए)	अक्टूबर सन् १९३० में (लाख रुपए)	कमी प्रति सैकड़ा
बिना धुला सफ़ेद कपड़ा	६७०	१५०	७८	१५४	२७	८३
धुला हुआ सफ़ेद कपड़ा	२६४	१३३	५०	७६	२९	६२
रङ्गीन कपड़ा ...	४८३	१४३	६३	१२१	३९	६८
अन्य कपड़ा ...	३२	२	९४	५	१	८०
मीज़ान...	१,३४९	४२८	६८	३५६	९६	७३

इस कोष्ठक से मालूम होता है कि विदेशी कपड़े के आयात में सब से अधिक कमी बिना धुले सफ़ेद कपड़ों में हो रही है। उनका आयात गत वर्ष की अपेक्षा अब पञ्चमांश ही रह गया है। सब से कम कमी धुले कपड़ों में हुई है, तिस पर भी उनका आयात अब गत वर्ष की अपेक्षा आधे से कम हो गया है। रङ्गीन कपड़े के आयात में भी दो तिहाई कमी हो गई है।

विदेशी कपड़ा अधिकांश में इङ्गलैण्ड और जापान से ही आता है। नीचे के कोष्ठक में यह बतलाया जाता है कि अक्टूबर सन् १९२९ और १९३० में इन देशों से सूती कपड़े के आयात का मूल्य और परिमाण क्या था :—

देश	कपड़े के आयात का मूल्य (लाख रुपए में)			कपड़े के आयात का परिमाण (लाख गज़ में)		
	अक्टूबर १९२९	अक्टूबर १९३०	प्रति सैकड़ा कमी	अक्टूबर १९२९	अक्टूबर १९३०	प्रति सैकड़ा कमी
इङ्गलैण्ड ...	२२२	५४	७६	८१३	२१६	७४
जापान ...	९८	३३	६६	४३२	१८५	५७
अन्य देश ...	३६	९	७५	१०४	२७	७४
मीज़ान ...	३५६	९६	७३	१,३४९	४२८	६८

इस कोष्ठक से विदित होता है कि विदेशी कपड़े के आयात की सबसे अधिक कमी इङ्गलैण्ड से हुई है। इस देश से आयात गत वर्ष की अपेक्षा तीन चौथाई से भी अधिक कम हो गया है। केवल एक महीने में ही इङ्गलैण्ड से १ करोड़, ६८ लाख रुपयों का कपड़ा कम आया। आयात में सब से कम कमी जापान से हुई है। वहाँ से अब भी पहले की अपेक्षा एक तिहाई से अधिक कपड़ा भारत में आ रहा है। धुले हुए कपड़ों के सम्बन्ध में तो जापान से आयात बढ़ रहा है। अक्टूबर सन् १९२९ में केवल ४ लाख गज़ धुला हुआ कपड़ा जापान से आया था और उसका मूल्य केवल एक लाख रुपया था। अक्टूबर १९३० में जापान से धुले हुए कपड़े के आयात का परिमाण २५ लाख गज़ तक बढ़ गया, जिसका मूल्य ४ लाख रुपए था। इस प्रकार जापान से धुले हुए कपड़े के आयात में चौगुनी बढ़ती हो गई है। अन्य देशों से भी कपड़े के आयात में बराबर कमी हो रही है।

* * *

(१०व पृष्ठ का शेषांश)

ख़्याल से हम इस प्रथा का घोर विरोध करते हैं। भारतीय सम्पादकों के सिर पर फिर ऑर्डिनेन्स की तलवार लटकाई गई है। इस सम्बन्ध में हम वाइसराय महोदय का ध्यान लाहौर हाईकोर्ट के चीफ़ जस्टिस श्रीयुत सर शादीलाल के उस फ़ैसले की ओर आकर्षित करना चाहते हैं, जो कि उन्होंने "हिन्दुस्तान टाइम्स" की ज़ब्त की हुई ज़मानत के विषय में दिया था। उसके पढ़ने से उन्हें मालूम हो जावेगा कि अधिकारियों के हाथ में अनियमित अधिकार दे देने से क्या नुक़सान होता है। यह आशा की जाती थी, कि चूँकि लन्दन में गोलमेज़ परिषद हो रही है और यह कहा जा रहा है, कि राष्ट्रीय आन्दोलन कमज़ोर होता जा रहा है, भारत की सरकार अब साधारण क़ानूनों द्वारा शासन चलाने का प्रयत्न करेगी और इन ऑर्डिनेन्सों को हटा लेगी। पर सरकार के इस नवीन कार्य से यह साफ़ प्रतीत होता है, कि दमन-नीति में अभी किसी तरह से फ़र्क़ न किया जावेगा। क्या यह इसलिए किया जा रहा है, कि गोलमेज़ परिषद द्वारा भारत की राजनैतिक दशा में कुछ परिवर्तन होने की आशा नहीं है?

—"लीडर" (अङ्गरेज़ी)

* * *

'यह जेल पृथ्वी पर नर्क के समान है'

राजनैतिक क़ैदियों के लिए पशुओं का सा भोजन

डॉ० किचलू तथा अन्य क़ैदियों द्वारा भयङ्कर भण्डाफोड़

घास तथा पत्तियों की तरकारी :: स्वयं सरकारी डॉक्टर ने जेल की निन्दा की

डॉक्टर किचलू के लिए पाख़ाना रसोई-घर बनाया गया !

वे जेल में भी चौबीसों घण्टे कड़े पहरे में रक्खे जाते हैं

पाठकों को विदित होगा कि साङ्गला हिल, ज़िला शेख़ूपुरा के कॉङ्ग्रेस कार्यकर्ता कॉमरेड ज्ञानचन्द १०८वीं धारा के अनुसार, रावलपिण्डी जेल में रक्खे गए थे। विगत ६ वीं दिसम्बर से अनशन करने के कारण उनका जेल-क़ानून की १५२ वीं धारा के अनुसार चालान किया गया था।

गत १५ वीं दिसम्बर को उनके मामले की कार्यवाही जेल ही में प्रथम श्रेणी के मैजिस्ट्रेट भाई हरदयाल सिंह की अदालत में की गई थी। अभियुक्त की ओर से लाला गोकुलचन्द वकील थे। अदालत को यह सूचना दी गई, कि अभियुक्त बहुत निर्बल है। उसे चारपाई पर ले जाने की कोशिश की जा रही है। अदालत का कार्यक्रम तीन बजे से शुरू हुआ।

जेल का भोजन

चौधरी बिशनदास भाटिया, जो रावलपिण्डी के महाशय आशानन्द के मामले में, गवाह के रूप में अटक जेल से १२वीं दिसम्बर को लाए गए थे, कॉमरेड ज्ञानचन्द के मामले में भी गवाही देने के लिए रोक लिए गए थे। उन्होंने कहा कि वे रावलपिण्डी जेल में ५ महीने क़ैद रह चुके हैं। ८ वीं सितम्बर को उनकी बदली अटक जेल कर दी गई। पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के आपत्ति करने पर अदालत ने पहले के जेल के भोजन के विषय में कुछ सुनने से इनकार कर दिया। कहा गया कि इस विषय में, कि चौधरी महाशय को पहले यहाँ अच्छा भोजन दिया जाता था या ख़राब, अदालत इसमें हस्तक्षेप नहीं कर सकती। उनके समय में किसी ने अनशन किया था या नहीं? अथवा उनके समय में इस जेल का भोजन मनुष्य के खाने लायक़ था या नहीं? आदि प्रश्न का भी इसी आधार पर उत्तर नहीं दिया गया।

गवाह ने कहा कि उसे इस बार (१२-१२-३०) इस जेल में रहने के पिछले तीन दिनों में ऐसा ख़राब भोजन मिला था, जो मनुष्य के खाने योग्य न था। इस बार जब से वह यहाँ है, उसे ऐसा शाक मिलता रहा है, जो मनुष्य के खाने के सर्वथा अयोग्य है।

क़ैदियों को जो रोटियाँ दी जाती हैं, वे प्रायः बासी और कच्ची रहती हैं। जेल के अधिकारियों के पास लिख कर कोई शिकायत करना सम्भव नहीं है, क्योंकि क़ैदियों को लिखने के साधन नहीं दिए जाते। उन्होंने जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से ख़राब भोजन के विषय में शिकायत भी की थी। पिछले तीन दिनों से ऐसा शाक जेल में तैयार किया जाता रहा है, जिसमें यह भी पता नहीं चलता कि उसमें कौन-कौन सी चीज़ें हैं।

कैनेडा वाले श्रीयुत शेरसिंह, जिनकी उम्र ५० साल की है और जो आजकल रावलपिण्डी जेल में क़ैद हैं, गवाह के रूप में उपस्थित हुए। उन्होंने कहा कि अभियुक्त १२ दिन पहले उनके बैरक में रक्खा गया था। मुझे 'सी' श्रेणी का भोजन दिया जाता है। रोटियाँ अच्छी नहीं मिलतीं; वे प्रायः ठण्डी रहती हैं। तरकारी ऐसी मालूम पड़ती है, जैसे घास के पत्तों की हो। जिस दिन सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब आने वाले थे, उस दिन शायद गोभी की तरकारी दी गई थी। और साधारणतः प्रायः मूली और शलजम आदि के पत्तों का शाक बनता रहा है। मैंने कई बार जेल के सुपरिण्टेण्डेण्ट से ख़राब भोजन के विषय में शिकायत की है। गवाह ने फिर कहा कि अभियुक्त ने मेरे बैरेक में आने के ४ दिन बाद अनशन प्रारम्भ किया। अभियुक्त ने मुझसे अनशन शुरू करने के पहले कहा था, कि उसने सुपरिण्टेण्डेण्ट से ख़राब भोजन के विषय में शिकायत की है। प्रायः प्रत्येक सोमवार को सुपरिण्टेण्डेण्ट साहब आते हैं, उनके सामने परेड की जाती है। पूछने पर गवाह ने कहा कि उसने रावलपिण्डी जेल में कभी अनशन नहीं किया। उसे आजन्म कालेपानी की सज़ा हुई थी।

डॉक्टर किचलू की गवाही

डॉक्टर किचलू अन्तिम गवाह थे। उन्होंने कहा कि वे क़रीब पाँच महीने से रावलपिण्डी जेल में थे। इस बीच में अनेक राजनैतिक क़ैदी वहाँ आए हैं।

उन्होंने कहा कि 'सी' श्रेणी के अनेक क़ैदी उनसे ख़राब भोजन की शिकायत किया करते थे। शिकायत यह थी, कि आटे में बालू मिला दिया जाता है और शाक भी इतना ख़राब दिया जाता है, जो मनुष्य के खाने योग्य नहीं होता। पहले भी उनके पास ऐसी शिकायतें आया करती थीं, और जब वे स्वयं 'सी' श्रेणी का भोजन खाते थे, तब उन्हें भी इन बातों का अनुभव होता था। उन्होंने स्वयं ख़राब भोजन के कारण, एक बार अनशन किया था। कुछ अन्य क़ैदियों ने भी उनका साथ दिया था। यद्यपि उनके लिए अलग रसोई-पानी का बन्दोबस्त किया गया था, तो भी अन्य क़ैदी बराबर भोजन के विषय में शिकायत किया करते थे।

पब्लिक प्रॉसीक्यूटर के प्रश्न करने पर उन्होंने कहा कि १२वीं, १३वीं और १५वीं अप्रैल के भाषण के सम्बन्ध में वे गिरफ़्तार किए गए थे। वे 'ए' श्रेणी के क़ैदी हैं, और यूरोपियन वार्ड में रक्खे गए हैं। दो-तीन महीने से उनके लिए अलग भोजन का प्रबन्ध किया गया है। जेल से उन्हें आटा और तरकारी मिलती है। उन्होंने भोजन के विषय में जेल के अधिकारियों से कभी शिकायत नहीं की, क्योंकि वे असहयोगी हैं। अनेक क़ैदी, जो भोजन के विषय में शिकायत किया करते थे, इस समय दूसरे जेलों में भेज दिए गए हैं। उनमें से एक सर्दार दरबार सिंह, अब भी जेल में मौजूद हैं। रावलपिण्डी के बख़्श अवनाशी राम ने भी उनसे भोजन के बारे में शिकायत की थी। इन दो-तीन महीनों से जब से उनके अलग भोजन का प्रबन्ध किया गया है, कोई 'सी' श्रेणी का क़ैदी उन्हें अपना भोजन नहीं दिखा पाता। क्योंकि वे (डॉक्टर किचलू) २४ घण्टे कड़े पहरे के अन्दर रक्खे जाते हैं, और इस कारण, कोई उनके पास नहीं जा सकता। किन्तु वे क़ैदी, जिन्हें उनके काम करने की आज्ञा मिली थी, उन्हें अपना भोजन दिखाते थे। उन्होंने उनके भोजन को ऐसा ख़राब पाया, जो मनुष्य के खाने योग्य नहीं था। अधिकांश वस्तुएँ सड़ी हुई थीं। पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि एक पाख़ाना-घर ही उनके लिए रसोई-घर बना दिया गया है। यह उनकी आँखों देखी बात है। उसमें कुछ परिवर्त्तन नहीं किया गया है, केवल चूना फेर दिया गया है।

अदालत की कार्यवाही ख़तम होने पर, मैजिस्ट्रेट की सम्मति से डॉ० किचलू ने अभियुक्त को अपना अनशन तोड़ने की सलाह दी। जेल के डॉक्टर ने भी इस बात पर ज़ोर दिया। डॉक्टर ने जेल की शिकायत करते हुए कहा कि "मैंने ऐसा सड़ा हुआ जेल और कहीं नहीं देखा! सचमुच यह पृथ्वी पर नरक के समान है।" अभियुक्त ने कहा कि अटक जेल से लाते समय उसके पैरों में और हाथों में बेड़ियाँ डाल दी गई थीं, जिसके फल-स्वरूप उसके वे अङ्ग छिल गए थे; पर मरहम-पट्टी का भी कोई प्रबन्ध नहीं किया गया था। हाँ, अनशन आरम्भ करने पर मरहम-पट्टी कर दी गई। बहुत कहने-सुनने पर अभियुक्त ने अनशन तोड़ना स्वीकार किया। उसे दूध दिया गया है।

* * *

गोलमेज़ परिषद भारतीयों को फँसाने का व्यूह मात्र है !

कॉन्फ़्रेन्स की सफलता की सब शक्ति 'छोटे से आदमी' के साथ यरवदा जेल में बन्द है

एक अमेरिकन पत्र की कॉन्फ़्रेन्स के सम्बन्ध में निष्पक्ष सम्मति

"परन्तु समस्त भारतीय और ब्रिटिश प्रतिनिधि यह अच्छी तरह जानते हैं, कि भारतीय समस्या कॉन्फ़्रेन्स के वाद-विवाद से हल नहीं हो सकती। उसकी सफलता तो गाँधी और कॉङ्ग्रेस पार्टी की इच्छा पर निर्भर है।........गोलमेज़-परिषद के व्यूह की रचना का प्रधान उद्देश्य यह है, कि मज़दूर-गवर्नमेण्ट के अतिरिक्त इङ्गलैण्ड की शासक ज़ाति उन भारतीय नेताओं की मनोवृत्ति और उनके चरित्र का अध्ययन और मनन कर सके, जिनका ब्रिटिश शासन से ख़ासा सम्बन्ध है और जो बाद में ब्रिटेन का भारतीय शासन, वह चाहे जिस रूप में हो, सफल बनाने का प्रयत्न कर सकें। उसका एक दूसरा उद्देश्य ऐसी माँगें पेश करवाना भी है, जो ब्रिटेन का शिकञ्जा दृढ़ रख सकें।"

गोलमेज़ परिषद के सम्बन्ध में अमेरिका के क्या विचार हैं, यह जानने के लिए पाठक अवश्य उत्सुक होंगे। न्यूयार्क (अमेरिका) से प्रकाशित होने वाले सुप्रसिद्ध 'नेशन' नामक पत्र में हाल ही में एक लेख प्रकाशित हुआ है, जो इस सम्बन्ध में बहुत प्रकाश डालता है। नीचे हम पाठकों के मनोरञ्जनार्थ उसी का भावानुवाद देते हैं:—

"लन्दन में गोलमेज़ परिषद के प्रारम्भ होते ही भारत की समस्या एक बार फिर भयङ्कर रूप धारण कर ब्रिटिश गवर्नमेण्ट के सम्मुख उपस्थित हो गई है। भारत में गवर्नमेण्ट की काली करतूतों, ब्रिटिश अख़बारों में भारत के सम्बन्ध में वादविवाद और उनकी सम्मतियाँ और इस सम्बन्ध में पास हुए 'ब्रिटिश मज़दूर पार्टी' के प्रस्तावों से यह बिलकुल स्पष्ट हो जाता है कि संग्राम को और भी भीषण बनाए बिना ब्रिटिश गवर्नमेण्ट गाँधी और कॉङ्ग्रेस की माँगों के सम्मुख नत-मस्तक न होगी।

"गोलमेज़ कॉन्फ़्रेन्स के भारतीय प्रतिनिधियों में से कुछ—उदाहरणार्थ ज़मींदार, केवल अपने स्वार्थों की रक्षा का प्रयत्न कर रहे हैं; अन्य मित्रता अथवा अपनी निर्बलता के कारण ब्रिटेन की हाँ में हाँ मिलाया करते हैं। जिन्ना के विचारों के कुछ व्यक्ति सोचा करते हैं, कि वे ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से कुछ निश्चित सुधार अवश्य ले लेंगे और कुछ सोचते हैं, कि ब्रिटेन से एक और अपील करने से समस्या हल हो जायगी। वे निर्बल और असङ्गठित हैं, क्योंकि उनके पास कॉन्फ़्रेन्स में ब्रिटिश लोगों के सम्मुख रखने के लिए कोई निश्चित-माँगें नहीं हैं और न उनके पास कोई ऐसा कार्यक्रम है, जिसका कॉन्फ़्रेन्स असफल होने पर वे अनुगमन कर सकें।

सार्वभौम—गाँधी

"परन्तु भारतीय और ब्रिटिश दोनों ओर के प्रतिनिधि यह अच्छी तरह जानते हैं, कि भारतीय समस्या को हल करने की शक्ति परिषद में ज़ोरदार भाषण देने और तर्क-वितर्क करने में नहीं, परन्तु गाँधी और कॉङ्ग्रेस की इच्छाओं में है। भारतीय प्रतिनिधियों की माँगें काफ़ी ऊँची हैं, परन्तु गाँधी और उनके दल की माँगें उनसे कहीं ऊँची हैं और साथ ही उनकी पूर्ति के लिए वे संग्राम कर रहे हैं। भारतीय प्रतिनिधि अपने वाक्-व्यापार से जो कुछ भी सुधार लेंगे, उसका श्रेय भी उन्हें नहीं, वरन् यरवदा जेल में बन्द उस 'छोटे से' आदमी को रहेगा। भारतीय प्रतिनिधियों की ब्रिटेन को सब से ज़बरदस्त धमकी, जिससे वे डरते हैं, यह हो सकती है, कि "यदि आप हमें हमारी माँगों के अनुसार सुधार न देंगे, तो हम गाँधी के दल में सम्मिलित हो जायँगे।" मुसलमान भी ब्रिटेन को यह धमकी दे सकते हैं कि वे ईजिप्ट, पैलेसटाइन, ईराक़, पर्शिया और अफ़ग़ानिस्तान में अपने धर्म भाइयों को भड़का कर उसे आफ़त में डाल देंगे। परन्तु ब्रिटेन ऐसी गीदड़-धमकियों से डरने वाला नहीं है।

लिबरल-दल

"'मैनचेस्टर गार्जियन' ने अपने १९वीं सितम्बर के अङ्क में श्री० श्रीनिवास शास्त्री का वह भाषण प्रकाशित किया था, जो उन्होंने भारतीय परिस्थिति के सम्बन्ध में मैनचेस्टर क्लब में दिया था। उसमें उन्होंने इस बात की ओर सङ्केत किया था, कि भारतीय लिबरल,
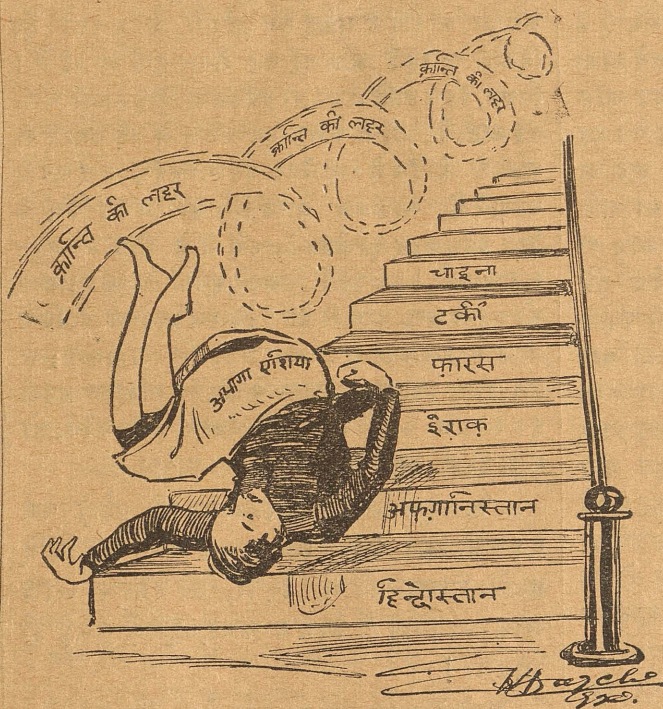
क्रान्ति की लहर

यद्यपि उसमें उन्हें आपत्ति होगी, तो भी वे फ़ौज ब्रिटेन के अधीन रखने के लिए तैयार हो जायँगे। गोलमेज़ की कार्यवाही के उपरान्त पार्लामेण्ट भारत के लिए जो नया शासन-विधान तैयार करेगी, उसके सम्बन्ध में उन्होंने कहा था, कि यदि उस नए शासन-विधान में भारतीयों को अन्य उपनिवेशों की नाईं बराबरी के अधिकार दे दिए जायँगे, तभी वे भावी भारत के सम्मुख उज्ज्वल मुख लेकर उपस्थित हो सकेंगे और उन ब्रिटिश लोगों की ओर भी हम अभिमान और आदर की दृष्टि से देखेंगे, जिनसे हमें वे अधिकार प्राप्त होंगे।

गोलमेज़ का व्यूह

"गोलमेज़ परिषद के व्यूह की रचना का प्रधान उद्देश्य यह है कि मज़दूर-गवर्नमेण्ट के अतिरिक्त इङ्गलैण्ड की शासक जाति, इन भारतीय नेताओं की मनोवृत्ति और उनके चरित्र का अध्ययन और मनन कर सकें, जिनका ब्रिटिश शासन से ख़ासा सम्बन्ध है और जो बाद में ब्रिटेन का, भारतीय शासन, वह चाहे जिस रूप में हो, सफल बनाने का प्रयत्न कर सकें। उसका एक दूसरा उद्देश्य ऐसी माँगें पेश करवाना भी है, जो ब्रिटेन का शिकञ्जा दृढ़ रख सकें। परन्तु कॉन्फ़्रेन्स के भारतीय प्रतिनिधियों ने पत्रों में जो विज्ञप्तियाँ प्रकाशित की हैं, उनसे शायद कॉन्फ़्रेन्स का उपर्युक्त उद्देश्य सिद्ध न हो सके और उसके विपरीत ब्रिटेन की शासक जाति यह अनुभव करने लगेगी, कि भारत की हर एक जाति के और दल के अन्दर स्वतन्त्रता की लगन कितनी गहरी घुस गई है।

"कॉन्फ़्रेन्स में कोई निश्चित समझौता होने की कोई आशा नहीं है। कॉङ्ग्रेस पार्टी की जो माँगें हैं, गवर्नमेण्ट उन्हें कभी पूरी न करेगी और न वह उन्हें, अपने स्वार्थ की दृष्टि से पूरी कर ही सकती है। यदि वह उन माँगों को मान ले, तो दूसरे ही दिन भारत से उसका अस्तित्व उठ जाय। तिस पर भी भारत की माँगें उससे कम नहीं हो सकतीं। यदि भारतीय प्रतिनिधि समझौता करने के लिए केवल वे ही अधिकार स्वीकार कर लें, जो ब्रिटिश गवर्नमेण्ट आसानी से दे सकती है तो क्या भारतीय उनके इस समझौते को स्वीकार कर लेंगे? यदि दूसरी ओर वे ख़ाली हाथ लौट आवें तो उससे कॉङ्ग्रेस का आन्दोलन और भी प्रचण्ड रूप धारण कर लेगा।

"कॉन्फ़्रेन्स चाहे सफल हो या असफल, भारतीय स्वतन्त्रता का युद्ध जारी है। 'एसोसिएटेड प्रेस' का ३०वीं अक्टूबर का समाचार है कि बारदोली के ५० हज़ार किसान लगान देने की अपेक्षा, अपने घरों को छोड़ कर जङ्गल में चले गए हैं और यद्यपि ब्रिटिश गवर्नमेण्ट भारत की सच्ची ख़बरों को छिपाने का जी-तोड़ प्रयत्न करती है, तो भी यह स्पष्ट हो गया है कि स्वतन्त्रता का सच्चा युद्ध प्रारम्भ हो गया है और यह युद्ध इङ्गलैण्ड में नहीं, भारत में छिड़ा हुआ है।"

* * *

भारत के 'सबसे बड़े मित्र' का प्रलाप

"पेशावर का विशाल क़िला कई दिनों तक विद्रोहियों के क़ब्ज़े में रह चुका है !"

"अङ्गरेज़ी-झण्डा लातों से कुचला जा रहा है"

क़ाज़ी जी दुबले क्यों ? शहर के अन्देशे से !!

"यदि भारत हमारे क़ब्ज़े से निकल गया, तो हमारा सारा साम्राज्य मिट्टी में मिल जायगा"

लॉर्ड इरविन की गत नवम्बर की घोषणा के सम्बन्ध में लॉर्ड रॉथरमियर ने, जो अपने को भारत का "सब से बड़ा मित्र" समझते हैं, लन्दन के सुप्रसिद्ध पत्र "डेली मेल" में यह लेख हाल ही में प्रकाशित कराया था। पाठकों को ज्ञात होगा, कि ये भारतीय स्वराज्य आन्दोलन के बड़े कट्टर दुश्मन हैं। इस लेख में वे साम्राज्य में भारत का कितना महत्वपूर्ण स्थान है, यह बताते हैं !

"मैं जानता हूँ कि अनेक लोग इस मत के हैं, कि हम लोगों को भारत से अपना क़ब्ज़ा हटा लेना चाहिए। वे कहते हैं कि भारत-निवासी अपना राज्य-प्रबन्ध हम लोगों से कहीं अच्छा कर सकेंगे। पर हम लोगों के भारत छोड़ने पर वहाँ जो मार-काट तथा अराजकता फैलेगी, उसका ध्यान करके हम लोग कभी भी इस दुर्विचार को कार्य-रूप नहीं दे सकते।

"ये मेरे शब्द नहीं हैं, गोकि मैं इनकी सचाई में पूर्णतया विश्वास करता हूँ ! इन शब्दों का कहने वाला जॉन मॉर्ले था। आज से २३ साल पहिले हाउस ऑफ़ कॉमन्स में उसने अपने वक्तव्य में ये शब्द कहे थे। वह प्रजातन्त्र का बड़ा भक्त था, वह साम्राज्यवादी लूट का सब से बड़ा विरोधी था। वह किसी विशेष रङ्ग या जाति का पक्षपाती भी नहीं था। वह मनुष्य-जाति मात्र की भलाई का ख़्याल रखता था। इसके अतिरिक्त उसे भारत की असली हालत हम लोगों से कहीं ज़्यादा मालूम थी। वह उस समय भारत का राज-मन्त्री था।

"यदि इस समय मॉर्ले के समान लोग भारत का राज्यकार्य चलाते होते, तो हमारा भारत का साम्राज्य इस तरह राजविद्रोह न करता। उसकी तीक्ष्ण बुद्धि मामूली बातों से विचलित न होती थी; वह हमारे आजकल के मज़दूर-दल तथा अन्य दल वाले नेताओं की तरह इतनी जल्दी भारतवासियों को अधिकार देने के लिए राज़ी न हो जाता। आज २५० वर्ष से इङ्गलैण्ड भारतवर्ष में सुख व शान्ति का राज्य स्थापित करने का तथा भारतवासियों को सभ्य बनाने का कार्य कर रहा है। मॉर्ले इसी नीति का धैर्य तथा साहस के साथ अनुकरण करता रहा। वह यह जानता था, कि यदि हम लोग राज्यकार्य का भार हिन्दुस्तानियों पर छोड़ देंगे, तो भारत में मार-काट मच जायगी।

"जॉन मॉर्ले ने एक समय पर कहा था—'यदि हम अपने उद्देश्य से हट जावें तो सारा सभ्य संसार हमें क्या कहेगा ? जब हम भारतवासियों के दुःख, पीड़ा व मार-काट का हाल सुनेंगे, तब हमारी आत्मा हमसे क्या कहेगी ?' मैं अपने देशवासियों से प्रार्थना करता हूँ, कि वे इन उच्च विचारों पर अवश्य ध्यान दें।

"आजकल हमारे पास भारतवर्ष से हर घड़ी बड़े भयानक समाचार आ रहे हैं। अङ्गरेज़ी सैनिकों की हत्या हो रही है, राजभक्त मुस्लिम पुलिस मारी-पीटी जा रही है, औरतें और बच्चे क़िलों में आश्रय लेने के लिए भाग रहे हैं। पेशावर का विशाल क़िला कई दिनों तक विद्रोहियों के क़ब्ज़े में रह चुका है ! उपद्रवी नेता कई हफ़्तों तक जङ्गली अफ़ग़ानी जातियों को सीमा-प्रान्त पर धावा करने के लिए प्रोत्साहित करते रहे हैं। क़ानून खुले-आम तोड़ा जा रहा है, अङ्गरेज़ी झण्डा लातों से कुचला जा रहा है। वाइसराय की ट्रेन के नीचे बम लगाया जा रहा है। कई बम इत्यादि के कारख़ाने ढूँढ़ निकाले जा रहे हैं और कई नए तैयार होते जा रहे हैं ! सिक्ख, जिस जाति से हमारी अधिकतर हिन्दुस्तानी फ़ौजें ली जाती हैं, गाँधी के नए आन्दोलन में बड़े उत्साह से भाग ले रहे हैं। ये सब केवल कल्पना नहीं, वरन् सच्ची घटनाएँ हैं, जो केवल भारत-निवासी ब्रिटिश प्रजा के लिए नहीं, वरन् इङ्गलैण्ड-निवासियों के लिए भी बहुत ख़तरनाक हैं ! हम लोगों ने अपने पूर्वजों से इस साम्राज्य को इतनी सुदृढ़ दशा में पाया कि हम समझते थे, बिना प्रयत्न के हम उसी सुदृढ़ अवस्था में इसे रख सकेंगे; पर हम लोगों को ध्यान रखना चाहिए कि यदि हम अपनी इस सम्पत्ति का ठीक तरह से प्रबन्ध नहीं करेंगे, तो शीघ्र ही वह हमारे हाथों से निकल जावेगी।

"सम्पूर्ण ब्रिटिश साम्राज्य को जोड़ कर रखने के लिए भारत एक अपूर्व शक्ति है। यदि हमने भारत को खो दिया, तो हमारा सारा साम्राज्य मिट्टी में मिल जायगा, टुकड़े-टुकड़े हो जायगा !

"पहिले हमारा आर्थिक पतन होगा, फिर राजनैतिक पतन ! जब से द्वितीय चार्ल्स को अपने विवाह में बम्बई दहेज में मिला है, उसी समय से हमारे विदेशी साम्राज्य की नींव पड़ी है। भारत के बिना हम सिङ्गापूर तथा मलाया को किस तरह से अपने वश में कर सकते थे ? बिना इसके हम न्यूज़ीलैण्ड तथा ऑस्ट्रेलिया में अपना साम्राज्य कैसे स्थापित कर सकते ? इसके बिना हम चीन में इतना लाभदायक व्यापार कैसे स्थापित कर सकते ? फिर हम स्वतः ही अपने पैरों में कुल्हाड़ी क्यों मार रहे हैं ? स्वतः ही भारत से अपना क़ब्ज़ा हटा कर ब्रिटिश साम्राज्य का नाश क्यों कर रहे हैं ???

"लॉर्ड इरविन ने अपनी नवीन घोषणा में भारतवर्ष को औपनिवेशिक स्वराज्य देने का वचन दिया है। यह वचन कभी नहीं दिया जाना चाहिए। सन्धि दोनों दलों के मेल से हो सकती है। जब भारत के विद्रोही नेता हमसे सब सम्बन्ध काटने पर उतारू हैं, तब हम उनकी माँग क्यों पूरी करें। औपनिवेशिक स्वराज्य देकर हम अपने शत्रुओं की शक्ति को क्यों बढ़ावें ?

"औपनिवेशिक स्वराज्य दे देने से तो हम सारा अधिकार भारतवासियों को सौंप बैठेंगे। इस अधिकार से उपनिवेश अपनी फ़ौज रख सकता है, स्वतः दूसरे राष्ट्रों से सन्धि कर सकता है और जब चाहे इङ्गलैण्ड से अपना सम्बन्ध तोड़ सकता है और भारतीय विद्रोही यही सब बातें चाहते हैं। हम ये सब अधिकार उन्हें क्यों दें ?

"हमने जो सन् १९१९ में अधिकार दिए थे, वही हमारी बड़ी भारी भूल थी। ये अधिकार हम लोगों ने अमृतसर की कॉङ्ग्रेस को ख़ुश करने के लिए दिए थे। इन अधिकारों के साथ हज़ारों हत्यारे और लुटेरे भी जेल से रिहा किए गए थे। पर इसका कुछ भी असर न हुआ। इतना सब करने पर भी वहाँ इकट्ठे हुए भारतीय विद्रोहियों ने लॉर्ड चेम्सफ़र्ड को वापस बुलाने का प्रस्ताव पास किया। यह वही वाइसराय था, जिसने अपनी मूर्खता से भारतीयों को इतने ज़्यादा अधिकार सौंप दिए थे। पर हम लोग उस वक़्त गत युद्ध के सन्धि-कार्यों में लगे हुए थे, इससे इस पर पूर्णतः ध्यान ही न दे पाए थे।

"पर ये अधिकार तो केवल अनुभव प्राप्त करने के लिए दिए गए थे। यह साफ़ लिख दिया गया था, कि १० साल बाद इनका निरीक्षण एक नए कमीशन द्वारा किया जावेगा। वह कमीशन सर जॉन साइमन की अध्यक्षता में भारत का निरीक्षण करके अब अपनी रिपोर्ट प्रकाशित करने वाला है।

"उस कमीशन के सदस्यों ने भारत में क्या-क्या देखा, यह अब सब लोग जानते हैं। उनका तिरस्कार अवश्य किया गया, पर इससे हमसे कुछ सम्बन्ध नहीं। हमसे तो एक बात से मतलब है, वह यह कि उन्हें यह देखने का पूरा मौक़ा मिला, कि राज्य का प्रबन्ध भारतीयों के हाथ में सौंपने से उसमें हज़ारों तरह की बुराइयाँ पैदा हो गई हैं।

"भारत का प्रबन्ध भारतीयों के हाथ में दे दिया जावे, यह सिद्धान्त चाहे हमारे देश के वासियों को

कतना ही प्रिय क्यों न हो, पर इस सिद्धान्त को कार्य-रूप देने के पहले, इन्हें भारत की जनता की भलाई का ख़्याल रखना चाहिए ! जो मूर्खता से इस सिद्धान्त के अनुयायी हो जाते हैं, इन्हें चाहिए कि वे अधिक बुद्धिमत्ता से काम लें। भारत के बत्तीस करोड़ किसान, मज़दूर तथा व्यापारियों के लिए ब्रिटिश शासकों ने निर्पक्ष न्याय देने की, शान्ति स्थापित करने की तथा शारीरिक सुधार करने की संस्थाएँ क़ायम की हैं। इनमें से हर एक संस्था का सुचारु रूप से चलाना इनकी भलाई के लिए अत्यन्त आवश्यक है। यह कार्य केवल अङ्गरेज़ ही कर सकते हैं।

"कभी आपने यह भी सुना था, कि फ़्रेञ्च या डच लोग भी अपने भारतीय साम्राज्य को भारतीयों के हाथ में सौंप रहे हैं ? और क्या यह सच नहीं है कि गए दस सालों से, जब से कि हमने भारतीयों को अधिकार देना आरम्भ किया है, भारत का आन्दोलन बढ़ता ही चला जा रहा है। पर एशिया के फ़्रेञ्च तथा डच साम्राज्यों में बिलकुल शान्ति है।

"हम लोगों के लिए तथा भारतीयों की भलाई के लिए, यह आवश्यक है, कि जो कुछ अधिकार आज तक हम लोगों ने उन्हें दिए हैं, वे भी वापस ले लिए जावें और भारत में युद्ध के पूर्व वाली शासन-प्रथा पुनः स्थापित की जावे।

"भारत, जिसमें कि अनेक जातियाँ और भिन्न-भिन्न धर्म के अनुयायी निवास करते हैं, किसी तरह भी एक नहीं हो सकता। जब एक धर्म के अनुयायी यूरोप को एक करना असम्भव हो रहा है, तब भारत के हिन्दू नेताओं ने न जाने कैसे हमारे कुछ मूर्ख शासकों को यह विश्वास दिला दिया है, कि भारत एक हो सकता है ! और हम इस भिन्नतापूर्ण राष्ट्र को चला सकते हैं !!

"अपने साहस तथा स्वार्थ-त्याग द्वारा हम लोगों ने भारत की विरोधी जातियों में शान्ति रक्खी है। हम लोगों ने न्याय से, दया-भाव से तथा अपूर्व बुद्धिमत्ता से भारत का शासन किया है। यदि संसार ब्रिटिश जाति के और सब कारनामे भूल जाय, तब भी ब्रिटिशों का भारतीय शासन, संसार के इतिहास में उनका नाम क़ायम रख सकता है। क्या यह ठीक होगा, कि कुछ मूर्ख भारतीयों की बक-बक से डर कर हम लोग इन सब अपूर्व कार्यों को अधूरा छोड़ दें ?

"सर रेज़िनॉल्ड क्रेडक, जो कि भारत में ४० वर्ष रह आए हैं, अपनी पुस्तक "दि डायलेमा इन इण्डिया" (भारत की कठिन समस्या) में लिखते हैं, कि यदि भारतीयों को औपनिवेशिक स्वराज्य दे दिया जावे, तो वे अपने देश की रक्षा ही नहीं कर सकेंगे। अफ़ग़ानी तथा सीमा प्रान्त की अन्य लड़ाकू और वीर जातियाँ भारत पर हमला करके, उसे क़ब्ज़े में करना चाहेंगी। पञ्जाब के सिक्ख पठानों से लड़ेंगे। देश का सारा व्यापार-उद्योग और लेन-देन, जिसकी नींव ब्रिटिश शासकों ने शान्ति स्थापित करके डाली है, एकदम गिर जायगा। भारत की रियासतें अपनी-अपनी सेना लेकर एक-दूसरे पर धावा करना आरम्भ कर देंगी, सारे देश में लूट-मार, हत्या, विनाश तथा उपद्रवियों का राज्य स्थापित हो जावेगा !!

"हमारे और उपनिवेशों की गोरी जातियाँ, जो हमारी सन्तान हैं, सदा प्रजातन्त्र की आदी रही हैं। पर भारत, जहाँ कि कभी भी प्रजातन्त्र रहा ही नहीं है, इतनी जल्दी पूर्ण अधिकार कैसे पा सकता है ? आग़ा ख़ाँ, जो कि भारत के नहीं, वरन सारे संसार के बहुत बड़े विद्वान तथा सभ्य पुरुषों में हैं, कहते हैं कि "अभी भारत को एक होने के लिए सैकड़ों वर्ष लगेंगे" और कई बड़े-बड़े विद्वान भी यही कहते हैं।

"और यह कौन कह रहा है कि भारतीयों को सारा राज्याधिकार दिया जावे ? गाँधी तथा उसके अनुयायी ? पर गाँधी स्वतः ही ब्रिटिश भारत का निवासी नहीं है। वह गुजरात की एक रियासत में पैदा हुआ था।

"क़रीब ४ लाख बाबुओं के अतिरिक्त, जो कि भारत की लूट में भाग लेना चाहते हैं, भारत का कोई भी निवासी यह नहीं चाहता, कि भारत में अङ्गरेज़ी राज्य का अन्त हो। गो कि भारत-सरकार की कमज़ोरी से भारतीय जनता को विश्वास हो चला है, कि अब अङ्गरेज़ लोग भारत से निकाले जाने वाले हैं।

"भारत के आन्दोलन को राष्ट्रीय आन्दोलन कहना, बड़ी ही भूल है। कई लाख मुस्लिम तथा क्रिश्चियन जनता को निकाल देने के बाद भारत के ६ करोड़ निवासी अछूत हैं, जिन्हें हिन्दू लोग बिलकुल जानवरों की तरह रखते हैं। वे हिन्दू-राज्य के कट्टर विरोधी हैं। वे ग़रीब हैं और यदि हम सारे अधिकार भारतीय हिन्दुओं को दे देंगे, तो वे उन पर अत्यन्त अत्याचार करेंगे। इनकी रक्षा के लिए हमारा वहाँ रहना बहुत आवश्यक है।

"अङ्गरेज़ों का भारतीय व्यापार चाहे इस वक़्त ख़राब हो रहा हो, पर यदि हमने भारत में गाँधी-राज्य स्थापित कर दिया, तो उसका पूर्ण विनाश ही हो जावेगा। हम लोगों ने भारत में करोड़ों रुपए की पूँजी लगा रक्खी है। क़रीब २०० वर्ष से बड़े-बड़े अङ्गरेज़ी बैङ्क, जहाज़ी कम्पनियाँ तथा व्यापार की संस्थाएँ क़ायम हैं। हमारा भारतीय साम्राज्य अभी भी हमारे माल का सब से बड़ा ग्राहक है। इङ्गलैण्ड के सारे व्यापार का २० फ़ी सदी हिस्सा हमें भारत से मिलता है।

"राष्ट्रीय आन्दोलन से हमें नुक़सान अभी भी हो चुका है। युद्ध के पहिले भारत का ६० फ़ी सदी विदेशी माल इङ्गलैण्ड से जाता था। पार साल वह केवल ४३ फ़ी सदी था और लङ्काशायर के कपड़े का व्यापार तो आधा हो गया है !

"भारत की लेजिस्लेटिव एसेम्बली ने क़ानून बनाया है, कि विदेशी पूँजीपतियों को कोई भी सरकारी सहायता नहीं मिलेगी। इङ्गलैण्ड से आने वाले कपड़े पर १५ फ़ी सदी का टैक्स लगाया जायगा। भारतीय राष्ट्रीय दल चाहता है, कि जहाज़ों का व्यापार तथा भारत का प्रबन्ध बिलकुल भारतीयों के हाथ में आ जावे।

"अङ्गरेज़ी व्यापार तथा कारख़ानों को भारत में बहुत नुक़सान पहुँचाया जा रहा है। क्या हमारे नेता तथा जनता ने इस पर भी ध्यान दिया है, कि बिना भारतीय व्यापार के हम लोग अपने देश की वर्तमान आर्थिक अवस्था को कदापि स्थिर नहीं रख सकते।

"भारतीय उपद्रवी चाहते हैं, कि भारत में हिन्दुओं की सत्ता स्थापित हो जावे, जिसमें दुष्टता तथा घूसख़ोरी का राज्य होगा ! इससे भारत में शान्ति नहीं, वरन अत्याचार, गृह-युद्ध, दासता, रोग, अकाल तथा विदेशी धावों की भरमार रहेगी !!

"इसलिए हम अपने कर्म-पथ से कभी नहीं हट सकते। हम इङ्गलैण्ड के शत्रुओं का साथ नहीं दे सकते। यदि हम यह सब करेंगे, तो अपनी कायरता दिखा कर सदा के लिए इङ्गलैण्ड का ँह काला करेंगे।

"भारत से ब्रिटिश शासन किसी तरह भी नहीं हटाया जा सकता। हमारा धर्म है, कि हम लोग विद्रोहियों से बक-बक न करें, वरन अपने राज्यकार्य को ख़ूबी से तथा दृढ़ता से चलावें।"

* * *

गाँधी की आँधी ने संसार का व्यापार चौपट कर दिया

सत्याग्रह आन्दोलन का अन्तर्राष्ट्रीय प्रभाव

एक अमेरिकन अर्थशास्त्रज्ञ का निष्पक्ष एवं खरी सम्मति

'यूनाईटेड स्टेट्स चेम्बर ऑफ़ कॉमर्स' की अन्तर्राष्ट्रीय कमिटी के सभापति, मि० सिलास एच० स्ट्रान ने फ़्रान्स में एक भाषण में कहा है कि "चीन के गृह-युद्ध, भारत के सत्याग्रह आन्दोलन और सोवियट गवर्नमेण्ट के असाधारण कार्यों के फल-स्वरूप ही आज संसार के व्यापार पर भयङ्कर आघात पहुँचा है।" 'शिकागो ट्रिब्यून' ने लिखा है, कि "श्री० स्ट्रान अन्तर्राष्ट्रीय प्रश्नों के विशेषज्ञ हैं और उन्होंने अपनी दूरदर्शिता के कारण शिकागो की भयङ्कर आर्थिक परिस्थिति से रक्षा की है।"

चीन और भारत के सम्बन्ध में आपने लिखा है कि "चीन में गृह-युद्ध के कारण और भारत में विदेशी शासन के कारण ग़रीबी फैल गई है और आज वहाँ की जनता भूखों मर रही है। उसमें विदेशी माल ख़रीदने की शक्ति बिलकुल शेष नहीं रह गई। मेरी राय में, यदि इन देशों की राजनैतिक परिस्थिति सुधर जाय और उनमें शान्ति स्थापित हो जाय, तो वे हमारे देश के सब माल की खपत कर लेंगे और हमें वर्तमान व्यापारिक आपत्ति से मुक्त कर देंगे।

"रूस का विकराल काल भी हमारे सिर पर मँडरा रहा है। हमें इस बात का ज्ञान नहीं है, कि रूस की पञ्च-वर्षीय योजना को कितनी सफलता प्राप्त होगी; परन्तु वह हमारे बाज़ारों में गेहूँ, कच्चा माल और अन्य माल ठेल रहा है और वह किसी भाव पर यहाँ बेचने के लिए उत्सुक है। हम यह निश्चयपूर्वक नहीं कह सकते, कि इसका परिणाम हमारे देश पर कितना भयङ्कर होगा। संसार के व्यापार पर रूस के इन कार्यों और भारत की वर्तमान आँधी का बड़ा ही घातक प्रभाव हुआ है।

"फ़्रान्स और अमेरिका में सोना बहुत बड़ी तादाद में इकट्ठा हो गया है, इससे भी हमारे रास्ते में कम कठिनाइयाँ नहीं आईं। इन दोनों देशों को सोना एकत्र करने का कुछ चाव नहीं है, परन्तु वे ऐसी गवर्नमेण्टों को ऋण में नहीं देना चाहते, जिनकी नींव कच्ची है। इन समस्याओं के साथ ही चुङ्गी का भी संसार के व्यापार पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा है। यदि संसार अपने व्यापार को सुरक्षित रखना चाहता है, तो हर देश को चुङ्गी की समस्या फिर से हल करनी होगी।"

* * *

भविष्य की नियमावली

१—'भविष्य' प्रत्येक बृहस्पति को सुबह ४ बजे प्रकाशित हो जाता है।

२—किसी ख़ास अङ्क में छपने वाले लेख, कविताएँ अथवा सूचना आदि, कम से कम एक सप्ताह पूर्व सम्पादकों के पास पहुँच जाना चाहिए। बुधवार की रात्रि के ८ बजे तक आने वाले, केवल तार द्वारा आए हुए। आवश्यक, किन्तु संक्षिप्त, समाचार आगामी अङ्क में स्थान पा सकेंगे, अन्य नहीं।

३—लेखादि काग़ज़ के एक तरफ़, हाशिया छोड़ कर और साफ़ अक्षरों में भेजना चाहिए, नहीं तो उन पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

४—हर एक पत्र का उत्तर देना सम्पादकों के लिए सम्भव नहीं है, केवल आवश्यक, किन्तु ऐसे ही पत्रों का उत्तर दिया जायगा, जिनके साथ पते का टिकट लगा हुआ लिफ़ाफ़ा अथवा कार्ड होगा, अन्यथा नहीं।

५—कोई भी लेख, कविता, समाचार अथवा सूचना बिना सम्पादकों का पूर्णतः इतमीनान हुए 'भविष्य' में कदापि न छप सकेंगे। सम्वाददाताओं का नाम, यदि वे मना कर देंगे तो, न छापा जायगा, किन्तु उनका पूरा पता हमारे यहाँ अवश्य रहना चाहिए। गुमनाम पत्रों पर ध्यान नहीं दिया जायगा।

६—लेख, पत्र अथवा समाचारादि बहुत ही संक्षिप्त रूप में लिख कर भेजना चाहिए।

७—समालोचना के लिए प्रत्येक पुस्तक की दो प्रतियाँ आनी चाहिएँ।

८—परिवर्तन में आने वाली पत्र-पत्रिकाएँ तथा पुस्तकें आदि सम्पादक "भविष्य" (किसी व्यक्ति-विशेष के नाम से नहीं) और प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र तथा चन्दा वग़ैरह मैनेजर "भविष्य" चन्द्रलोक, इलाहाबाद के पते से आना चाहिए। प्रबन्ध-विभाग सम्बन्धी पत्र सम्पादकों के पते से भेजने में उनका आदेश पालन करने में असाधारण देरी हो सकती है, जिसके लिए किसी भी हालत में संस्था ज़िम्मेदार न होगी !!

९—सम्पादकीय विभाग सम्बन्धी पत्र तथा प्रबन्ध सम्बन्धी पत्र अलग-अलग आना चाहिए। यदि एक ही लिफ़ाफ़े में भेजा जाय तो अन्दर दूसरे पते का कवर भिन्न होना चाहिए।

१०—किसी व्यक्ति-विशेष के नाम भेजे हुए पत्र पर नाम के अतिरिक्त "Personal" शब्द का होना परमावश्यक है, नहीं तो उसे संस्था का कोई भी कर्मचारी साधारण स्थिति में खोल सकता है और पत्रोत्तर में असाधारण देरी हो सकती है।

—मैनेजिङ्ग डाइरेक्टर

सम्पादकीय विचार
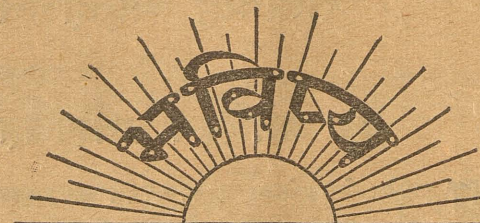
८ जनवरी, सन् १९३१

काले क़ानून के कारण—

क्या कीजिएगा हाले-दिले—
ज़ार देख कर !
मतलब निकाल लीजिए
अख़बार देख कर !!

बम्बई में स्वतन्त्रता-दिवस

गोलियों और लाठियों की निर्मम वर्षा

बम्बई का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ की युद्ध-समिति ने 'स्वतन्त्रता-दिवस' मनाना निश्चय किया था। इस अवसर पर सभाओं को रोकने के लिए पुलिस और मिलिटरी का कड़ा पहरा नियत किया गया था। युद्ध-समिति के कार्यक्रम के अनुसार आधी रात के समय शहर के भिन्न-भिन्न भागों में २५ सभाएँ करने का विचार किया गया था। क़रीब १५० सिपाही चौपाटी पर, जहाँ एक बृहत् जन-साधारण सभा होने वाली थी, घेरा बना कर खड़े किए गए थे। इन सिपाहियों के अलावा २५० पुलिस के लठबन्द जवान भी तैनात रक्खे गए थे। शहर के भिन्न-भिन्न भागों में भी इसी प्रकार की तैयारियाँ की गईं थीं। जब सभा होने का समय आया और भीड़ चौपाटी पर एकत्रित होने लगी, उस समय पुलिस ने लाठियों की मार से भीड़ को तितर-बितर कर दिया। शहर के भिन्न-भिन्न भागों में भी पुलिस ने जुलूसों को भङ्ग करने के लिए इसी प्रकार लाठियाँ चलाईं। कहा जाता है कि कुछ स्थानों में पुलिस ने छेड़-छाड़ नहीं की। ख़बर है, क़रीब ६० मनुष्य पुलिस की लाठियों से घायल हुए हैं, जिनमें १० की अवस्था विशेष चिन्ताजनक है।

क़रीब दो बजे रात में एक भीड़ उस स्थान पर इकट्ठी हो गई, जहाँ बाबू गेनू लॉरी से दबा था। कहा जाता है कि इस भीड़ ने पास ही खड़े पुलिस के एक दल पर पत्थर चलाया गया, जिसके फल-स्वरूप पुलिस ने फ़ायरें कीं। ख़बर है कि क़रीब ९ मनुष्य घायल हुए हैं।

१ली जनवरी का समाचार है कि शहर में इस समय शान्ति है। १७५ मनुष्य कॉङ्ग्रेस के अस्पताल में भर्त्ती हुए हैं, जिनमें ३३ की अवस्था चिन्ताजनक है। ७ मनुष्यों को गोली की चोट लगी है, जिनमें एक की अवस्था विशेष चिन्ताजनक है।

वहाँ के एक असाधारण गज़ट से विदित होता है कि मिलिटरी (फ़ौज) की संख्या वहाँ १ ली जनवरी से बढ़ा दी गई है।

अछूतों का सत्याग्रह

जलगाँव का ३१वीं दिसम्बर का समाचार है कि वहाँ जो वर्णाश्रम-धर्म परिषद् हो रही है, उसमें अछूतों को नहीं घुसने दिया जाता। अछूतों ने इसके विरोध में सत्याग्रह कर रक्खा है। परिषद् के अधिकारियों को लाचार होकर पुलिस की सहायता लेनी पड़ी है।

सरदार नर्बदाप्रसाद सिंह जेल से छूटे

स्थानीय कॉङ्ग्रेस कमिटी के एक प्रधान कार्यकर्ता सरदार नर्बदाप्रसाद सिंह, ९ महीने की सज़ा भुगत कर १ ली जनवरी को छूट गए। आप 'ए' श्रेणी में रक्खे गए थे। कहा जाता है कि आप एक सप्ताह पहले ही छूटने वाले थे, किन्तु दूसरे जेलों में क़ैदियों के साथ दुर्व्यवहार के विरोध में आपने जो ३ दिनों तक अनशन किया था, उसीके कारण आप देर से छोड़े गए। आपका कहना है कि जेल में उनका वज़न क़रीब २३ पाउण्ड घट गया है !

* * *

[श्री० डॉक्टर धनीराम जी 'प्रेम' (लन्दन)]

"भाइयो, हमारे सामने यह जीवन-मरण का प्रश्न है।"

छोटी सी एक अँधेरी कोठरी में, मॉस्को नगर के एक निर्धन मुहल्ले में, एक छोटी सी पुरानी मेज़ के सामने खड़ा हुआ एक अधेड़ पुरुष अपने सामने बैठे हुए बीस युवकों को यह व्याख्यान दे रहा था।

यह सन् १६११ की बात है। रूस की प्रजा पर ज़ार के मनमाने अत्याचार हो रहे थे। प्रजा के निर्धन व्यक्ति, मज़दूर और कृषक अन्याय और पाशविक निर्दयता की चक्की में घुन की भाँति पीसे जा रहे थे। उस पाशविक निर्दयता का बदला लेने के लिए, उस अन्याय की भित्ति को समूल नष्ट करने के लिए, यह निहिलिस्टों का छोटा-सा, परन्तु क्रान्तिकारी समूह इस स्थान पर एकत्र हुआ था। उनके हृदय निर्धनों की दयनीय दशा से रक्त के आँसू रो रहे थे। वे रक्त के आँसू उनके नेत्रों को लाल बनाए हुए थे। उनके शरीर कृश थे, अत्याचारों ने उन्हें किसी काम का न छोड़ा था! उनके शरीरों पर फटे हुए वस्त्र थे; उन्हें अच्छे वस्त्र पहनने का अधिकार कहाँ था? उनको आत्मा? परन्तु, वह सो नहीं रही थी। उस आत्मा में प्रतिक्रिया की ज्वाला भरी हुई थी, जो उनके सारे शरीर में स्फूर्ति पैदा कर रही थी। वे ध्यान से अपने नेता के शब्द सुन रहे थे।

"भाइयो, हमारे सामने यह जीवन-मरण का प्रश्न है," वह मेज़ पर हाथ मार कर बोला। युवकों के नेत्र फड़क उठे। उनके कन्धे ऊँचे उठ गए, उनके मुख तमतमा गए। हाँ, वह उनके लिए जीवन-मरण का प्रश्न था। युद्ध में वीर-गण जिस प्रकार अपनी तलवारें अपने सेनापति के शब्द पर, ऊँची उठा देते हैं, उसी प्रकार उन वीरों ने अपने हाथ ऊँचे उठा दिए, जिसका अर्थ था, कि वे अपने नेता के वाक्यों की गम्भीरता को समझते थे।

नेता बोला—रूस की ग़रीब प्रजा की दशा नरक-निवासियों की दशा से भी बुरी हो गई है। यदि सृष्टि में कहीं नरक है, तो मैं कह सकता हूँ, कि वहाँ के निवासियों पर भी इतने अत्याचार न होते होंगे, जितने हमारे देश-वासियों पर। हम पेट भर खा नहीं सकते, शरीर पर साधारण वस्त्र तक नहीं धारण कर सकते; हमारे बच्चे भूखे, नङ्गे, रोगी रह कर काल के गाल में चले जाते हैं; और यह सब किस लिए? कि हमारे पास उनके लिए दूध की एक बूँद तक नहीं है, कि उनके लिए औषधि ख़रीदने को हमारे पास पैसे नहीं हैं! कहाँ जाता है सारा अनाज, जिसे हम पैदा करते हैं? कहाँ जाता है सारा दुग्ध, जो हमारी गाएँ देती हैं? कहाँ जाता है सारा धन, जिसे हम अपना रक्त पानी करके कमाते हैं? मुट्ठी भर अत्याचारियों की जेबों में! वे आनन्द करते हैं, जबकि हम कीड़ों की भाँति मरते हैं!! उन्होंने हमारी जिह्वा पर ताला लगा दिया है, हम शिकायत तक नहीं कर सकते। उन्होंने हमारी आत्मा का हनन कर दिया है, हम साहस से उनके सम्मुख खड़े नहीं हो सकते। और यदि हममें से [illegible] साहस करता भी है, तो उसका फल क्या है? जेल, साइबीरिया का कालापानी; या फाँसी का तख़्ता! हम जीवित रहते हुए भी मृतकों से गए-बीते हैं। मनुष्य होते हुए भी पशुओं से भी अधिक हीनावस्था में हैं! हम अपने ही घर में बन्दी हैं! क्या हम इस दशा को सहन करते ही जाएँगे?

इस प्रश्न पर नेता चुप हो गया, परन्तु उसका उठा हुआ हाथ और स्थिर नेत्र इस प्रश्न को उन बीसों नवयुवकों के सामने दुहरा रहे थे। एक स्वर में, दृढ़ता के साथ, सब ज़ोर से चिल्ला उठे—नहीं!

नेता—क्या हमारी माताएँ और हमारे बच्चे अत्याचारियों द्वारा अब भी ठुकराए जाएँगे?

युवक—नहीं।

नेता—क्या तुम बदला लेने के लिए तैयार हो?

युवक—हाँ।

नेता—मार्ग विकट है। यह जीवन-मरण का प्रश्न है। तुम्हारे सामने कण्टकमय संसार है। वहाँ जेल, साइबीरिया, फाँसी, इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं है। और उन सब विपत्तियों, उन सब बलिदानों का पुरस्कार क्या होगा? केवल यह विचार है, कि तुम अपने पीड़ित भाइयों के लिए कष्ट सहन कर रहे हो। क्या इस बलिदान के लिए, इस त्याग के लिए तैयार हो?

युवक—तैयार हैं।

नेता—यदि तुममें से कोई भयभीत है, तो अभी समय है कि इस कार्य को वह हाथ में न ले।" नेता चुप हो गया। वह युवकों की ओर देख रहा था और युवक एक-दूसरे की ओर देख रहे थे। किसी ने मुख से शब्द न निकाला। नेता कुछ देर बाद बोला—"तो तुम सब यहाँ आकर इस बात की शपथ लो, कि तुममें से कोई धोखा न देगा।

एक-एक करके बीसों युवक नेता के सामने गए। उसने प्रत्येक के हाथ में एक पिस्तौल देकर शपथ ली। जब अन्तिम युवक का नम्बर आया, तो पिस्तौल पकड़ते समय उसका हाथ हिल गया। नेता ने यह देखा, उसने अपने हाथ से उस युवक का मस्तक ऊँचा करके कहा—निकोलाई!

निकोलाई—जी!

नेता—मेरे नेत्रों की ओर देखो!

युवक ने नेता की दृष्टि से दृष्टि मिलाई।

नेता—हाथ क्यों काँपा?

युवक—क्षणिक बात थी।

नेता—भयभीत हो?

युवक—नहीं।

नेता—प्रतिज्ञा करते हो, कि विपत्ति आने पर विचलित न होओगे?

युवक—प्रतिज्ञा करता हूँ।

नेता—ईश्वर तुम्हें बल दे!

२

सारे नगर में कोलाहल मच गया।

नाना प्रकार की किम्वदन्तियाँ उड़ने लगीं।

"षड्यन्त्र पकड़ा गया है।"

"अफ़सर की हत्या हो गई।"

"पाँच निहिलिस्ट एक अफ़सर की हत्या करते हुए पकड़े गए हैं।"

"अपराधियों का पता नहीं।"

जितने मुख थे, उतनी ही बातें थीं।

औल्गा ने सुना, कि उसका पति निकोलाई भी षड्यन्त्रकारियों के साथ गिरफ़्तार हो गया। उसने दुःख नहीं किया। जिस पड़ोसिन ने आकर यह समाचार दिया था, वह पूछने लगी—औल्गा तुम्हें दुःख नहीं है?

औल्गा—किस बात का?

पड़ोसिन—निकोलाई की गिरफ़्तारी का।

औल्गा—निकोलाई की गिरफ़्तारी का? दुःख? क्या वह चोरी करके गिरफ़्तार हुआ है? क्या उसने कोई पाप किया है? वह देश के लिए अपने दीन भाइयों के लिए पकड़ा गया है। इससे अधिक गर्व की क्या बात हो सकती है? देश बलिदान चाहता है, स्वतन्त्रता की देवी आहुतियाँ चाहती है। जो यह बलिदान चढ़ाते हुए पकड़ा गया है, उसकी स्त्री को दुःख होगा?

पड़ोसिन—तुम्हारा क्या होगा?

औल्गा—मेरा क्या होगा? इसकी मुझे क्या चिन्ता है, अभी कौन सा मुझे सुख है! जो ग़ुलामों की भाँति जीवन व्यतीत करते हैं, जिनके प्रत्येक पग पर जासूसों की दृष्टि रहती है, जिनके भाग्य में सदा जूतियाँ खाना ही लिखा है उनके लिए दुःख क्या और सुख क्या है? उनके लिए सौभाग्य क्या और वैधव्य क्या? जो आजकल दशा है, उससे और बुरी दशा क्या होगी?

पड़ोसिन—और यह एक वर्ष का बच्चा?

औल्गा—ग़ुलामों के बच्चों का क्या? वे भाग्य लेकर थोड़े ही पैदा होते हैं। समय उनका पालन करता है, न कि उनके माता-पिता! उनके माता-पिता जीवित हों, तब भी उनका पालन होता है, वे मर गए हों, तब भी उनका पालन होता है। वे परिस्थितियों की सन्तान हैं, परिस्थितियाँ ही उनकी ख़बर लेंगी!!

पड़ोसिन—तुम वीराणी हो, औल्गा!

पड़ोसिन चली गई। छोटा बच्चा एक ओर खिलौनों से खेल रहा था। वह रोने लगा। औल्गा ने उसे गोद में उठाया। उसके गालों पर आँसुओं की धारा बह रही थी। माँ ने मुख चूमते हुए कहा—रोता है पागल, आज तो हँसने का दिन है। तेरे पिता देश-वासियों की सेवा करते हुए गिरफ़्तार हुए हैं। तू कभी याद करेगा, कि तेरे पिता कौन थे? तू कभी इन बातों को समझेगा? शायद तू न याद रख सके, शायद तू न समझ सके। परन्तु लोग तेरी ओर देख कर कहेंगे—'यह निकोलाई का पुत्र है, जिसने प्राण देश के लिए निछावर कर दिए थे।'

बच्चे के आँसू सूख गए। उसका मुख खिल उठा। उसने मुसकुराते हुए मुख खोला और सामने के छोटे-छोटे दाँतों के नीचे अपनी नन्हीं-नन्हीं उँगलियाँ दबा लीं। औल्गा ने उसे अपनी छाती में छिपा लिया।

* * *

दो दिन बाद।

जनता को फिर बातें करने की सामग्री प्राप्त हो गई।

चारों ओर लोग बातें करने लगे।

"आख़िर एक मुख़बिर निकल ही आया।"

"देश-द्रोहियों की कमी नहीं है।"

"निकोलाई से यह आशा नहीं थी।"

"कल उसकी गवाही होने वाली है। पूरे षड्यन्त्र का भण्डा फूट जायगा।"

"पचासों युवकों के जीवन-मरण का प्रश्न है। फाँसी या साइबेरिया।"

औल्गा ने यह भी सुना। वह बाज़ार में निकल रही थी। कुछ उसकी ओर घृणा से देखते थे, कुछ उपेक्षा से देखते थे और कुछ सहानुभूति दिखाते थे। वह एक मुख़बिर की स्त्री थी!

एक पड़ोसिन मिली। कहने लगी—अब तो तुम्हें हर्ष होगा, औल्गा।

औल्गा—किस बात से?

पड़ोसिन—निकोलाई अब छूट जायगा।

औल्गा—हर्ष? निकोलाई के छूटने का हर्ष?

पड़ोसिन—क्या, पति को फिर से पाकर तुम्हें हर्ष न होगा?

औल्गा—पति? कैसा पति? किसका पति? मेरा पति था, अब कोई मेरा पति नहीं है। मेरा पति था; वह वीर था, देश-सेवी था। वह मर गया; मैं विधवा हूँ। यह मेरा पति है? कायर, देश-द्रोही, मुख़बिर—मेरा पति! जिसके कारण देश के तड़पते हुए निर्धन-स्त्रियाँ, पुरुष, बच्चे—गुरुतर बन्धनों में जकड़े जायँगे, वह मेरा पति? नहीं बहिन, मैं विधवा हूँ, मैं विधवा हूँ!

पड़ोसिन—क्या करोगी?

औल्गा—क्या करूँगी? इन निर्धन, पददलित प्राणियों को बचाने का प्रयत्न करूँगी। उसे गवाही देने से रोकूँगी। देश को अत्याचारियों के पञ्जे से जो बचाने का प्रयत्न कर रहे हैं, उन सैकड़ों नवयुवकों को मृत्यु के मुख में जाने से रोकूँगी।

पड़ोसिन—कर सकोगी?

औल्गा—प्राण देकर भी।

पड़ोसिन—औल्गा, तुम वीराणी हो।

पड़ोसिन चली गई। बच्चा खिलौनों से एक ओर खेल रहा था। औल्गा ने उसे गोद में उठा लिया। उसके मुख पर मुस्कान की एक रेखा दौड़ गई। औल्गा ने यह देखा। वह बच्चे की चिबुक ऊपर को करके बोली—हँसता है, अभागे? आज रोने का दिन है। तेरा पिता जेल से छूटने के लिए सब से बड़ा मूल्य दे रहा है—देश, धर्म, आत्मा, सबको इसलिए बेच रहा है कि रूसी अफ़सरों की जूतियों के पास बैठ कर दो टुकड़े खाने को प्राप्त कर सके। तू कभी याद करेगा कि तेरे पिता कौन थे? तू कभी इन बातों को समझेगा? शायद तू न याद रख सके, शायद तू न समझ सके। परन्तु लोग तेरी ओर देख कर कहेंगे—'यह निकोलाई का पुत्र है, वह निकोलाई जिसने सैकड़ों युवकों को फाँसी के तख़्ते पर भेज दिया था!' तेरा पिता देशद्रोही, मुख़बिर! ओह, मेरे लाल!

औल्गा की आँखों से आँसू बहने लगे। बच्चा माँ की भाषा समझता है। उसकी आकृति पर जो मुस्कान थी, वह दूर हो गई। उसकी आँखों से भी आँसू बह रहे थे।

३

सारे शरीर को एक कपड़े से ढके हुए, बच्चे को गोद में लिए, एक स्त्री जेल के फाटक के पास आ खड़ी हुई। दरबान ने पास आकर तीव्रता से कहा—कौन है?

"एक स्त्री।"

"क्या नाम है?"

"औल्गा।"

दरबान—यहाँ क्या कर रही है?

औल्गा—मिलना चाहती हूँ।

दरबान—किससे?

औल्गा—इस बच्चे के बाप से।

दरबान—कौन है वह?

औल्गा—निकोलाई।

दरबान—निकोलाई? तुम उसकी स्त्री हो?

औल्गा—मिलने की आज्ञा मिलेगी?

दरबान—मुश्किल है?

औल्गा—एक मुख़बिर को उसके बच्चे से मिलने की भी मनाही है?

दरबान—सरकारी आज्ञा है।

औल्गा—सरकारी आज्ञा क्या उल्लङ्घन नहीं होती?

दरबार—नहीं।

औल्गा—मूर्ख! सरकार की रोटियाँ खाकर भी सरकार का नाश चाहता है? विद्रोहियों का दमन करने में जो सहायता मिल रही है, उसे ठुकरा कर क्या सैकड़ों अफ़सरों का ख़ून कराना चाहता है?

दरबान—तो क्या तुम किसी और षड्यन्त्र का भेद जानती हो

औल्गा—यह तो तुम्हें कल निकोलाई की गवाही से पता चल जायगा। मैं उसकी गवाही के लिए कुछ आवश्यक पत्र लाई हूँ।

दरबान—कहाँ है?

औल्गा—मेरे पास।

दरबान—मुझे दो तो जेलर के पास पहुँचा दूँ।

औल्गा—यह जेलर के लिए नहीं है, यह केवल निकोलाई को दिए जा सकते हैं और वह मैं स्वयं ही देना चाहती हूँ।

* * *

एक छोटे से कमरे में निकोलाई बन्द था। यह कमरा जेल के अन्य कमरों से अच्छा था। सरसरी निगाह डालने से ही पता चल जाता था कि निकोलाई के साथ क़ैदी का सा नहीं, मुख़बिर का सा व्यवहार हो रहा था।

द्वार खुला। निकोलाई ने औल्गा को देखा, औल्गा ने निकोलाई को देखा। निकोलाई के नेत्रों में लज्जा थी, औल्गा के नेत्रों में क्रोध। निकोलाई चिल्ला उठा—औल्गा

औल्गा—हाँ, निकोलाई, यह औल्गा है।

निकोलाई—यहाँ तुम कैसे आ पहुँची?

औल्गा—तुमने मुझे नहीं बुलाया तो क्या मैं तुमसे बिना मिले रह सकती थी? किसी प्रकार तुम्हें एक बार देखने को आ ही गई।

निकोलाई—तो, तुम समझती हो?

औल्गा—समझती हूँ? क्या?

निकोलाई—क्या तुमने कुछ भी नहीं सुना?

औल्गा—बहुत कुछ सुना है और उसे मैं समझती हूँ, अच्छी तरह समझती हूँ।

निकोलाई—तो क्या तुम मुझे देख कर सचमुच प्रसन्न हो?

औल्गा—क्यों नहीं? एक असाध्य वस्तु को साध्य देख कर कौन प्रसन्न न होगा? तुमसे मिलने का अवसर पा सकी, फिर भी प्रसन्न न हूँगी? हाँ, निकोलाई मैं प्रसन्न हूँ, बहुत प्रसन्न!

बच्चा औल्गा की छाती से चिपटा हुआ था। उसने एक बार अपने पिता पर एक दृष्टि डाली और फिर शीघ्र ही अपनी माँ की छाती में मुख छिपा लिया। यह देख कर निकोलाई बोला—इसे क्या हो गया है? दो दिन में ही मुझे भूल गया?

औल्गा ने उत्तर दिया—भूल नहीं गया है, उसे अच्छी तरह याद है कि तुम कौन हो। बच्चे बड़ों की अपेक्षा कम भूलते हैं।

निकोलाई ने अपने हाथ बच्चे की ओर बढ़ाए। औल्गा ने उसे बच्चे को छूने का अवसर न दिया। निकोलाई की ओर अग्नि-भरे नेत्र फिरा कर उसने उसके हाथों को एक ओर झटके से हटा दिया। और गरजती हुई बोली—अपने अपवित्र हाथ बच्चे से एक तरफ़ रख, देशद्रोही, मुख़बिर! निकोलाई की आकृति बदल गई। वह काँपता हुआ बोला—तो तुम झूठ बोल रही थी। तुम प्रसन्न नहीं थी।

औल्गा—मैं झूठ नहीं बोल रही थी। मैं प्रसन्न हूँ। एक देशद्रोही को देख कर मैं प्रसन्न हूँ।

निकोलाई—तुम समझ सकती हो, मैंने यह क्यों किया। ज़ार के हाथों में पड़ कर किसका भला हुआ है। षड्यन्त्रकारियों के भाग्य में फाँसी और अन्य घातक दण्ड के अतिरिक्त क्या है? मैं अभी नवयुवक हूँ। मैंने संसार में अभी क्या देखा है? मैं मरना नहीं चाहता। मैं तुम्हारा वियोग सहन नहीं कर सकता। मेरी भूल है कि मैंने षड्यन्त्र में भाग लिया। मैं इतने बलिदान के योग्य नहीं हूँ। औल्गा, औल्गा, मैं यह सब तुम्हारे लिए और इस बच्चे के लिए कर रहा हूँ।

औल्गा—मेरे लिए और इस बच्चे के लिए? कायर, डरपोक! जीवित रहना चाहता है—एक अपयश का जीवन व्यतीत करने के लिए; जिन दीनों के लिए कल आँसू बहाता था, उन्हीं के गले पर छुरा फेरने के लिए; जिस अन्याय को नष्ट करने की शपथ ली थी, उसी को दृढ़ करने के लिए। निर्लज्ज, इस जीवन से तो यशपूर्वक मरना कहीं अच्छा था। जीवित रहने की साध है! मेरे लिए और इस बच्चे के लिए! किस लिए? कि मैं भी तेरे साथ कल से उन अत्याचारियों की सहायता करूँ, जो देश को रसातल में पहुँचा रहे हैं! किस लिए? कि यह बच्चा बड़ा होकर अपने ही भाइयों पर गोलियों का वार करे, अपनी ही माँ-बहिनों की प्रतिष्ठा नष्ट कराने में सहायक बने। किस लिए? कि कल से चारों ओर यही शब्द सुनाई पड़े—'देखो, यह देशद्रोही निकोलाई की स्त्री है। और यह उस मुख़बिर का बच्चा है।' मेरे लिए और इस बच्चे के लिए! कर्त्तव्य और प्रतिज्ञा, यश और लज्जा, शरीर और अन्तःकरण; सबका संहार। किस लिए? मेरे लिए और इस बच्चे के लिए!

निकोलाई—यदि मैं न रहूँगा, तो तुम्हारा और इस बच्चे का क्या होगा?

औल्गा—क्या तुम समझते हो कि तुम्हीं स्त्री-बच्चे वाले हो? उन सैकड़ों नवयुवकों का तुम्हें ध्यान नहीं आता, जो कल तुम्हारे विश्वासघात के कारण फाँसी के तख़्तों पर भेज दिए जायँगे? उनके स्त्री-बच्चे नहीं हैं? उनकी क्या दशा होगी? कौन उन्हें भोजन देगा, कौन उन्हें कपड़े देगा? उन अगणित स्त्री-बच्चों का क्या होगा, जो तुम्हारी कायरता के कारण शिर उठाने योग्य भी न रहेंगे? इस एक बच्चे को देखते हो या पूरे देश को देखते हो? क्या दो-तीन प्राणियों का जीवन देश के जीवन से अधिक महत्व का है? यदि मेरा देश डूब रहा है, तो मैं अपने स्नेहियों को बचाने की चिन्ता नहीं करती। मेरे लिए देश आगे है, पति और अपना जीवन पीछे।

निकोलाई—परन्तु अब क्या हो सकता है?

औल्गा—सब कुछ।

निकोलाई—कुछ नहीं। मैंने कल गवाही देने का निश्चय कर लिया है।

औल्गा—तुम्हें इस बात का विश्वास है?

निकोलाई—पूर्ण विश्वास।

औल्गा—कल तुम्हारी गवाही नहीं होगी!

निकोलाई—कौन रोकेगा?

औल्गा—मैं!

निकोलाई—किस प्रकार?

(शेष मैटर १९वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)
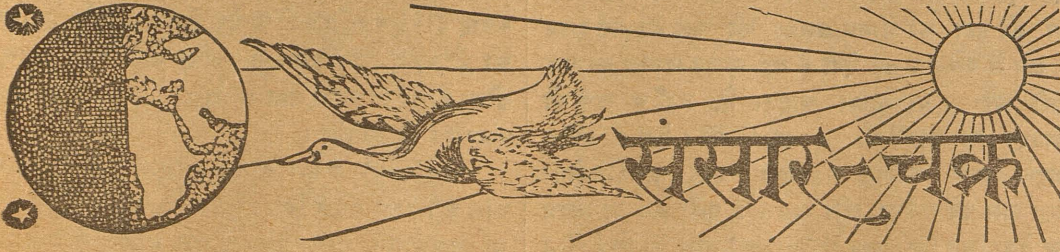
इटली का स्वाधीनता-संग्राम और फ़ैसिस्टवाद

[श्री० मुन्शी नवजादिकलाल जी श्रीवास्तव]

(शेषांश)

सन् १९२२ में इटली की दुरवस्था चरम सीमा पर पहुँच गई। श्रमजीवियों ने देश-व्यापी हड़ताल की घोषणा की। बोलशेविकों ने कितनी ही हत्याएँ कर डालीं। देश में विषम अशान्ति मचने का सूत्रपात होने लगा। तब मुसोलिनी ने सरकार को एक पत्र लिखा कि या तो अड़तालीस घण्टों के अन्दर पूर्ण शान्ति स्थापित करो या अपना बोरिया-बँधना समेट लो। परन्तु सरकारी कर्मचारियों में इतनी शक्ति कहाँ थी, जो इस देश-व्यापी अशान्ति का सामना कर सकते? इसलिए मुसोलिनी के पत्र का कोई परिणाम नहीं निकला। सरकार ने मुसोलिनी को लिखा कि शासन-कार्य में भाग लेकर देश में शान्ति की स्थापना की चेष्टा करो। मुसोलिनी ने उत्तर दिया—तुम लोगों के साथ साझीदार रह कर शान्ति स्थापन करने की इच्छा हमारी नहीं है।

अन्त में, मुसोलिनी के 'ब्लैक शर्टस्' (Black Shirts) अर्थात् फ़ैसिस्टों ने एक दिन इटली की राजधानी रोम पर चढ़ाई कर दी। शासकों ने कोई बाधा न की। बिना ख़ून-ख़राबी के राजधानी मुसोलिनी के क़ब्ज़े में आ गई। इसके पहले ही मुसोलिनी ने एक घोषणा-पत्र द्वारा इटली-सम्राट की वश्यता स्वीकार कर ली थी। इसलिए उसके राजधानी में आते ही सम्राट ने उसे अपना प्रधान-मन्त्री बना लिया, रोम पर फ़ैसिस्ट पताका फहराने लगी।

इस समय इटली के शासन की बागडोर सम्पूर्णरूपेण मुसोलिनी के हाथों में है। इन आठ वर्षों में इस अमित प्रतिभावान पुरुष ने इटली को कहाँ से कहाँ पहुँचा दिया है। आज वीरवर मुसोलिनी की धाक सारे यूरोप पर जमी हुई है। यूरोप की महान् शक्तियाँ आज सशङ्कित दृष्टि से इटली की ओर ताक रही हैं। किसी में इतनी ताब नहीं जो इटली से समझौता किए बिना कोई कार्य कर सके। आज उसकी गणना संसार की श्रेष्ठ शक्तियों में है।

अद्भुत क्षमताशाली मुसोलिनी की नवीन कार्य-प्रणाली अर्थात् फ़ैसिस्टवाद का कुछ परिचय देने से पहले हम, थोड़े शब्दों में उसका परिचय दे देना आवश्यक समझते हैं। क्योंकि हमारा ख़्याल है कि इससे उसके फ़ैसिस्टवाद को समझने में पाठकों को अधिक सुगमता होगी। अस्तु—

आज से ४३ वर्ष पहले इटली के एमिलिया प्रदेश के फ़रली नामक ग्राम में बेनितो मुसोलिनी का जन्म हुआ था। इसका बाप एक साधारण कारीगर और माता किसी पाठशाला की शिक्षयत्री थी। लड़कपन में मुसोलिनी का स्वभाव बड़ा ही चञ्चल था। उसका पिता सोशलिस्ट था। इसलिए उसने अपने लड़के को भी इस बात का दिग्दर्शन करा दिया था कि किस तरह संसार के धनवान ग़रीबों का रक्त चूस कर मोटे बने हुए हैं और किस तरह बेचारे ग़रीब उनकी भीषण विलासाग्नि के शिकार बन रहे हैं। परन्तु मुसोलिनी की माता बड़ी धर्म-परायणा थी। वह उसे 'स्वर्ग-राज' की अलौकिक बातें सुनाया करती और बतलाती कि इहकाल में धैर्य और शान्ति के साथ अपने कर्तव्यों का पालन करते रहने से मृत्यु के बाद, स्वर्ग में, असीम सुख प्राप्त हो सकता है। इसलिए बाल्यावस्था से ही मुसोलिनी के मन में पिता के उपदेशों के कारण, एक ओर अन्याय और अविचार के विरुद्ध तीव्र विद्रोह का उद्रेक हुआ था, उसी तरह माता के उपदेशों के कारण कर्तव्य-परायणता की शिक्षा तथा दायित्व का ज्ञान भी उसे प्राप्त हुआ था। बाल्यावस्था में जब लड़के आपस में किसी विषय को लेकर विवाद करते तो उसका फ़ैसला मुसोलिनी को ही करना पड़ता। उसकी पाठशाला के शिक्षक और गिरजाघर के पादरी साहब कहा करते कि इस बालक का परिणाम अत्यन्त शोचनीय होगा। पहले ये भविष्यद्वाणियाँ सत्य भी प्रतीत हुई थीं। क्योंकि मुसोलिनी की रुचि लिखने-पढ़ने की ओर अधिक न थी। इसके बाद, कुछ उपार्जन करने की क्षमता अर्जित करने से पहले ही उसने शादी भी कर ली। घर में खाने का ठिकाना नहीं; मुश्किल से कभी-कभी पेट भर जाता था, तिस पर एक बीबी भी आ धमकी। इससे मुसोलिनी को कुछ चिन्ता हुई और चेष्टा करके उसने एक स्कूल में मास्टरी कर ली। परन्तु इससे भी कोई विशेष सुविधा न हो सकी, इसलिए वह पत्थर पर खुदाई का काम करने के लिए स्विटज़रलैण्ड चला गया।

उन दिनों स्विटज़रलैण्ड यूरोप के विप्लववादियों का प्रधान अड्डा बन रहा था। उनके सहवास के कारण मुसोलिनी को यूरोप के विभिन्न देशों की राजनीति के सम्बन्ध में काफ़ी जानकारी प्राप्त हो गई और कुछ दिनों के बाद वह स्वयं भी एक विप्लववादी बन गया। इसके कुछ दिन बाद (सन् १९१०) इटली ने ट्रिपोली पर आक्रमण करके उसे तुर्कों से छीन लिया। उन दिनों मुसोलिनी वीर सोशलिस्ट बन रहा था। इटली का यह कार्य उसे घोर अन्यायपूर्ण प्रतीत हुआ। वह फ़ौरन इटली चला आया और "दी क्लास स्ट्रगल" (जातिगत संग्राम) नामक पत्र का सम्पादक बन कर इटली के इस अन्याय का तीव्र प्रतिवाद करने लगा। साथ ही इटली की परम्परागत कुरीतियों के विरुद्ध भी आन्दोलन आरम्भ किया। यह देख कर इटालियन सरकार ने "दी क्लास स्ट्रगल" का अस्तित्व ही मिटा दिया।

इस घटना के कुछ दिन बाद ही इटली के अन्यान्य सोशलिस्ट नेताओं से उसका मतभेद हो गया। क्योंकि मुसोलिनी दिन-रात यही सोचा करता था कि किस तरह इटली की सर्वाङ्गीन उन्नति की जाय और सोशलिस्ट, हमारे विश्वप्रेमिक सर रवीन्द्रनाथ टैगोर की तरह, सारे संसार का कल्याण साधन करना चाहते थे। फलतः गत महासमर के समय इटली के सोशलिस्टों ने जर्मनी से सहानुभूति दिखाना आरम्भ किया तो मुसोलिनी उनसे नाराज़ होकर अलग हो गया। मुसोलिनी पहले 'घर में दिया जला कर तब मसजिद में जलाना चाहता था।' इसलिए उसने इटली के समर में उतर कर, अपने देश से ऑस्ट्रिया को मार भगाने की सलाह दी और स्वयं सेना में भर्ती होकर लड़ने भी चला गया। वह पहले से ही युद्ध का प्रबल पक्षपाती था और उसके लिए क़लम द्वारा लड़ा भी करता था। इसीलिए मौक़ा मिलते ही तलवार द्वारा लड़ने को भी तैयार हो गया।

मुसोलिनी की अद्भुत कार्य-प्रणाली और उसके फ़ैसिस्टवाद ने यूरोप के राजनीतिज्ञों को चकित कर दिया है। बड़ी-बड़ी शक्तियाँ आज मुसोलिनी के कारण इटली को सशङ्कित दृष्टि से देखने लगी हैं। अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति की आलोचना करने वाला कोई ऐसा यूरोपियन अख़बार नहीं है, जिसमें इस नए 'वाद' की चिन्ता न रहती हो। 'फ़ैसिस्ट' या 'फैसिज़्म' की उत्पत्ति इटालियन भाषा में Fasces शब्द से हुई है। इटालियन भाषा में Fasces एक प्रकार की पताका को कहते हैं। प्राचीन काल में जब रोम साम्राज्य के विचारकगण न्यायासन पर बैठते थे तो उनकी बग़ल में एक आदमी Fasces नाम की पताका लेकर खड़ा हो जाता था। मानों इससे सूचित होता था कि इसी शासन-दण्ड द्वारा न्यायाधीश दण्ड प्रदान भी कर सकते हैं। 'फ़ैसेस' के एक सिरे पर एक छोटी सी कुल्हाड़ी भी लगी रहती थी, जिससे सूचित होता था कि विचारक महोदय अपराध-विशेष में अपराधी को प्राणदण्ड भी प्रदान कर सकते हैं। यह कुठार-मण्डित न्यायदण्ड अकेला नहीं होता था। इसमें कई पतली-पतली सींकें होती थीं, जो एकत्र

(१८वें पृष्ठ का शेषांश)

औल्गा ने शीघ्रता से एक पिस्तौल निकाली और निकोलाई की ओर उसे करके वह बोली—"इस प्रकार!" निकोलाई उसकी ओर बढ़ना चाहता था कि वह तेज़ी से बोली—ख़बरदार! एक क़दम भी आगे बढ़े!

निकोलाई—हत्या करोगी?

औल्गा—यदि इसे हत्या कहते हो तो हाँ।

निकोलाई—पति की?

औल्गा—पति की नहीं, देशद्रोही की, मुख़बिर की।

निकोलाई—निश्चय कर लिया है, निर्दय?

औल्गा—पूर्ण निश्चय? यदि न देखा जाय तो नेत्र बन्द कर लो।

उसके मुख पर एक ऐसी ज्योति जगमगा रही थी कि निकोलाई के मुख से एक भी शब्द न निकला। उसने एक बार औल्गा की ओर देखा और धीरे-धीरे नेत्र बन्द कर लिए।

"वैंग! वैंग!!"

निकोलाई का शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

"वैंग! वैंग!!"

औल्गा का शरीर पृथ्वी पर गिर पड़ा।

छाती से चिपटे हुए बच्चे की ओर देखते हुए वह बोली—मेरे बच्चे, यह सब तेरे भविष्य के लिए है। यदि पिता के देशद्रोह की कभी तुझे याद आवे तो साथ ही माता के इस हत्याकाण्ड की भी याद कर लेना।

पीड़ा-जनित तड़पन के साथ दोनों ने अन्तिम श्वास ली। परन्तु एक की तड़पन में पश्चात्ताप का भाव था, दूसरे की तड़पन में सन्तोष का।

* * *

करके एक मोटी लाठी के रूप में परिणत कर दी जाती थीं। इससे यह सूचित होता था कि एक लाठी आसानी से तोड़ी जा सकती है, परन्तु कई लाठियाँ एक साथ ही नहीं तोड़ी जा सकतीं। थोड़े शब्दों में इटालियन न्यायाधीशों का यह फ़ैसेस "परित्राणाय साधूनाम् विनाशायच दुष्कृताम्" का द्योतक था।

कालक्रम से इसी फ़ैसेस शब्द से Fasci शब्द की उत्पति हुई। किसी एक दल के लोगों का किसी विशेष प्रकार की उद्देश्य की पूर्ति के लिए सङ्घबद्ध होने पर उसे "फ़ैसी" कहा जाता था। हिन्दी भाषा का 'समिति' शब्द जिस अर्थ का द्योतक है, इटली का 'फ़ैसी' शब्द भी किसी ज़माने में उसी अर्थ का द्योतक था। मुसोलिनी के पहले भी इटली में विभिन्न उद्देश्यों की पूर्ति के लिए कितनी ही फ़ैसी या समितियाँ थीं। सोशलिस्टों से मतभेद हो जाने पर मुसोलिनी ने भी अपनी एक अलग फ़ैसी या समिति बनाई थी। लड़ाई से लौटने पर उसने अवसर-प्राप्त सैनिकों को लेकर एक "फ़ैसी ऑफ़ कोम्बाटेण्ट" अर्थात् सैन्य-समिति नाम की एक संस्था की स्थापना की थी और प्रतीक स्वरूप प्राचीन रोम के इतिहास-प्रसिद्ध 'फ़ैसेस' का व्यवहार आरम्भ किया। मुसोलिनी की यह फ़ैसी या समिति ही आज सारे संसार में फ़ैसिस्ट दल और उसका मतवाद Fascism या फ़ैसिस्टवाद के नाम से विख्यात हो रहा है। अन्तर केवल इतना है कि आज उसका वह व्यापक अर्थ नहीं है, वरन् सङ्कुचित होकर मुसोलिनी की वर्तमान शासन-प्रणाली का द्योतक बन गया है। सन् १९२४ में मुसोलिनी ने एक अङ्गरेज़ विद्वान के सामने फ़ैसिज़्म की जो परिभाषा बताई थी, वह इस प्रकार है :—

"Fascism holds that dutiful service to his state is the higher obligation of the citizen than the pursuit of his own ambition ; that the affairs of the state must be governed not by those who will seek to flatter the selfish hopes of the individual but by those who have the highest faith in the state and who will lead it to its highest expression of strength."

अर्थात्—"फ़ैसिस्ट मतवाद का यह उद्देश्य है कि देश का प्रत्येक मनुष्य व्यक्तिगत उच्चाकांक्षा की पूर्ति की अपेक्षा अपने देश की राजशक्ति की सेवा कर्तव्य-परायणता के साथ करे। जो अपने स्वार्थों की सिद्धि के लिए समुत्सुक रहते हैं, उनके द्वारा देश का शासन-कार्य नहीं चल सकता। जो लोग कि राजशक्ति पर सब से अधिक श्रद्धा-भक्ति रखते हैं और जो उसे पूर्ण शक्तिशाली बनाने की चेष्टा करेंगे, वही देश के शासन-कार्य को चला सकते हैं।"

यहाँ यह स्पष्ट कर देने की ज़रूरत है कि राजशक्ति से मुसोलिनी का मतलब स्वाधीन देश की अपनी सरकार से है, जो हमेशा प्रजा के हित की चिन्ता किया करती है। भारत जैसे पराधीन देश के लिए राजशक्ति की सेवा तो एक विडम्बना मात्र है। अस्तु।

उपर्युक्त उद्धरण से मालूम होता है कि मुसोलिनी का फ़ैसिस्टवाद व्यक्तिगत आशा-आकांक्षा या दुःख-सुख की चेष्टा को प्रश्रय नहीं देता। देश का प्रत्येक मनुष्य अपनी सारी शक्ति लगा कर अपनी जातीय सरकार की सेवा करेगा और वह सरकार अपनी सारी शक्ति लगा कर प्रजा का हित-साधन किया करेगी। हमारे मतानुसार बहुत थोड़े शब्दों में यही मुसोलिनी की राजनीति का आदर्श है। परन्तु महात्मा लेनिन का बोलशेविज़्म, इसके विपरीत व्यष्टि को ही सर्वोपरि स्थान प्रदान करता है। उसका आदर्श है, देश में तथा देश के बाहर समस्त राजनीतिक, सामाजिक और आर्थिक पार्थक्य को हटा कर मानव समाज को एक अखण्ड राज्य के रूप में परिणत कर देना। वह मानव समाज को एक ऐसी अवस्था पर लाना चाहता है, जहाँ न अर्थ की आवश्यकता होगी और न राजस्व की। देश का प्रत्येक मनुष्य अपने परिश्रम के बदले समस्त जीवनोपयोगी वस्तु प्राप्त कर सकेगा और अन्त में ऐसी अवस्था उत्पन्न कर देगा, जब कि संसार में 'सरकार' नाम की कोई चीज़ ही न रह जायगी। बोलशेविज़्म मानव समाज को ऐसी अवस्था पर पहुँचाना चाहता है, जहाँ सरकार की कोई आवश्यकता ही नहीं है। परन्तु फ़ैसिस्टवाद का यह सिद्धान्त है कि सर्वसाधारण की स्वेच्छाप्रदत्त सहायता पाकर किसी समय सरकार इतनी बलवती हो जाएगी, कि उस समय सरकार की सेवा छोड़ कर प्रजा के लिए और कोई कार्य ही न रह जाएगा। और उसके बदले में सरकार उन्हें हर प्रकार से सुखी और स्वच्छन्द रक्खेगी।

मुसोलिनी ने सरकार को एक नाम-मात्र की संस्था के रूप में परिणत कर रक्खा है। वह बहुमत की परवाह नहीं करता और न किसी विषय पर लोगों का मत (वोट) लेने की आवश्यकता समझता है। इसीसे लोग उसे स्वेच्छाचारी कहा करते हैं। परन्तु मुसोलिनी के नवीन मतवाद पर गम्भीरतापूर्वक विचार करने वाले विद्वानों का कथन है कि वह स्वेच्छाचारी नहीं है। वह शासन-व्यापार में अपने मित्रों से राय लेकर अपने विवेक और बुद्धि के अनुसार काम करता है। यह अगर स्वेच्छाचार है तो श्रीरामचन्द्र का 'राम राज्य' और युधिष्ठिर का 'धर्म राज' भी क्यों न स्वेच्छाचार कहा जाएगा। उस समय भी तो कोई प्रजातन्त्र, पार्लामेण्ट या वोट-संग्रह प्रणाली न थी।

इटली का शासन वह वहाँ के सम्राट के नाम से ही करता है। वही उनकी मन्त्रिसभा के लिए सदस्य चुनता है, और उन्हें विभिन्न विभागों का कार्य सौंपता है। विभिन्न प्रदेशों के शासनकर्ताओं की नियुक्ति भी उसीके द्वारा होती है। ये शासनकर्ता उसीके आदेशानुसार शासन-कार्य किया करते हैं। इटली की म्युनिसिपैलिटियाँ भी उसी के आदेशानुसार चलती हैं। प्रत्येक प्रान्त का प्रधान-शासनकर्ता अपने प्रान्त की म्युनिसिपैलिटियों के लिए एक अफ़सर नियुक्त कर देता है। कमिश्नर लोग उसीके आदेशानुसार कार्य करते हैं। शासन के अन्यान्य विभागों का कार्य भी इसी प्रणाली द्वारा होता है। इसलिए इटली के सभी शासन-विभागों का प्रधान-कार्यकर्ता मुसोलिनी है। सर्वत्र उसीकी तूती बोलती है।

मुसोलिनी की प्रधान ताक़त है इटली की फ़ैसिस्ट समितियाँ। यहीं से इटली के लिए सेना का संग्रह होता है, और इन्हीं समितियों के उपदेशानुसार वह कार्य भी करता है। देश के दायित्वपूर्ण पदों पर इन्हीं समितियों में आदमी नियुक्त होते हैं। जिन लोगों ने इटली के लिए संग्राम किया था, वही इन समितियों के सदस्य हैं। इनके अतिरिक्त ऐसे लोग भी इन समितियों के सदस्य हो सकते हैं, जिन्होंने स्टेट या सरकार की विशेष सेवा की है। आज अगर मुसोलिनी की मृत्यु हो जाए तो इन्हीं समितियों में से कोई दूसरा मुसोलिनी निकल आवेगा, और फ़ैसिज़्म के अनुसार देश का शासन-कार्य चलता रहेगा। वर्तमान समय में जो लोग रणक्षेत्र से वापस आए हैं, वही लोग अधिकांश रूप से इटली की समितियों के सदस्य हैं, इसलिए कुछ लोग मुसोलिनी की शासन-पद्धति को 'क्लास-रूल' या श्रेणी-विशेष का शासन के नाम से भी अभिहित करते हैं। कुछ अंशों में यह संज्ञा सत्य भी है। परन्तु मुसोलिनी सदैव इस बात की चेष्टा में रहता है कि उसका यह 'क्लास-रूल' किसी समय 'मास-रूल' या सार्वजनीन शासन का रूप धारण कर ले। इसीलिए उसने समस्त देश में नवयुवकों के लिए 'बेलेलिया समिति' नाम की बहुत सी समितियाँ बनाई हैं। इन समितियों में देश के युवक और युवतियों को फ़ैसिज़्म की शिक्षा दी जाती है। इससे मालूम होता है कि निकट-भविष्य में सारा इटली फ़ैसिस्ट मतावलम्बीय हो जावेगा।

'बेलेलिया' जनेवा के एक स्कूल के एक बालक का नाम है। यह प्रदेश जिस समय ऑस्ट्रिया के अधीन था, उस समय इसी प्रदेश के एक बालक ने पत्थर का एक टुकड़ा लेकर ऑस्ट्रियन सेना पर आक्रमण किया था। उसी बालक के नाम पर इन समितियों का नामकरण हुआ है।

मुसोलिनी का फ़ैसिस्टवाद अन्तर्जातिकता नहीं पसन्द करता। मुसोलिनी यह नहीं चाहता कि भिन्न देशों के आन्दोलनों में भाग लेकर देश की अभ्यन्तरीय अवस्था को जटिल कर दिया जाय। इसी सबब से आजकल कोई बाहरी आन्दोलन की दाल इटली में नहीं गलती।

मुसोलिनी ने इन आठ वर्षों में इटली की आशातीत उन्नति की है। उसके उद्योग से इटली से मलेरिया का नाम-निशान तक मिट गया है। मलेरिया फैलाने वाले मच्छड़ों का नाश करने के लिए उसने कितनी ही गन्दी झीलों को पटवा दिया है और कितनी ही झीलों में तेल छुड़वा कर मच्छड़ों का वंश नाश कर दिया है। देश में अब खाद्य पदार्थों का कोई अभाव नहीं है। पहले इटली में जो गेहूँ उत्पन्न होता था, उससे इटलीवासी छः महीने भी गुज़र नहीं कर सकते थे। इसलिए प्रति वर्ष करोड़ों रुपए का गेहूँ इटली को दूसरे देशों से लेना पड़ता था। मुसोलिनी की चेष्टा से इटली में कृषि की भी उन्नति हो रही है। लकड़ी के हलों की जगह अब वहाँ के किसान कल के हल व्यवहार करते हैं, इसलिए पैदावार पहले की अपेक्षा कई गुना बढ़ गई है। इस पैदावार की वृद्धि के कारण इटली को प्रति वर्ष १६० 'लिरा' (इटालियन सिक्का, जो हमारे दस आने के बराबर का होता है) की बचत होती है। शासन सम्बन्धी ख़र्च घटाने में भी मुसोलिनी ने कमाल किया है। पहले जिस विभाग में दस अफ़सर काम करते थे, वहाँ केवल पाँच ही हैं। पहले राज-कर्मचारी आलसी और विलासी हुआ करते थे, परन्तु मुसोलिनी के ज़माने के राज-कर्मचारी बड़ी तत्परता से अपने कर्तव्य का पालन करते हैं। इससे सरकार के विभिन्न विभागों की आय में काफ़ी वृद्धि हो गई है। रेल-विभाग में पहले की अपेक्षा आजकल अधिक बचत है, अथच पहले की अपेक्षा भाड़ा भी कम है। इसी तरह डाक और तार-विभाग में भी आमदनी की वृद्धि और ख़र्च की कमी हुई है, इसके सिवा देश के शिल्प-कला की उन्नति की ओर भी मुसोलिनी की सरकार का यथेष्ट ध्यान है। 'हाइड्रोइलेक्ट्रिक' कारख़ानों की स्थापना के कारण, इटली की शिल्प-कला की आशातीत उन्नति हो रही है। परन्तु मुसोलिनी का सब से बड़ा कृतित्व है, इटली की श्रमिक समस्या का समाधान। उसने क़ानून बना दिया है कि इटली में कभी कोई हड़ताल न होगी और न कोई कारख़ाने वाला अनिश्चित समय के लिए कारख़ाना बन्द कर सकेगा। श्रमिकों और कारख़ाने वालों के झगड़ों को मिटाने के लिए उसने जगह-जगह पञ्चायतें क़ायम कर दी हैं। ये पञ्चायतें जो फ़ैसला कर देती हैं, उसकी कहीं अपील नहीं हो सकती। इस प्रबन्ध से इटली में अब कोई झगड़ा ही नहीं रह गया है और फल-स्वरूप शिल्प-वाणिज्य की उत्तरोत्तर उन्नति हो रही है। इटली की आर्थिक उन्नति करने में भी मुसोलिनी ने कमाल किया है। दूसरे देशों में वहाँ के "लिरा" नामक सिक्के का मूल्य बढ़ गया है। मुसोलिनी की नीति से दिलचस्पी

(शेष मैटर २९वें पृष्ठ के दूसरे और तीसरे कॉलम में देखिए)

राष्ट्रीय महायुद्ध के कुछ वीर सैनिक

पं० हरिश्चन्द्र वाजपेयी

आप लखनऊ के सुप्रसिद्ध कार्यकर्ता हैं, जिन्हें दूसरी बार गिरफ़्तार करके ६ मास का कठिन कारावास दण्ड और १००) रु० जुर्माने की सज़ा दी गई है। आप करबन्दी आन्दोलन के सम्बन्ध में गिरफ़्तार हुए हैं।

वयोवृद्ध श्री० सेठ सुन्दरदास वल्लभदास

आप ६२ वर्ष की परिपक्व अवस्था में कराची के 'वार-कौन्सिल' के 'डिक्टेटर' नियुक्त हुए हैं।

सरदार मङ्गलसिंह जी

आप पञ्जाब कॉङ्ग्रेस के सुप्रसिद्ध नेता हैं। आप हाल ही में देहली में गिरफ़्तार हुए थे। आपको ६ मास का कारावास-दण्ड प्रदान किया गया है।

श्रीमती सुनीति देवी मित्रा

आप लखनऊ की सर्व-प्रथम 'डिक्टेटर' थीं, जिन्हें झण्डा-सत्याग्रह के सम्बन्ध में ६ मास का कारावास-दण्ड दिया गया था। आप हाल ही में जेल से मुक्त हुई हैं।
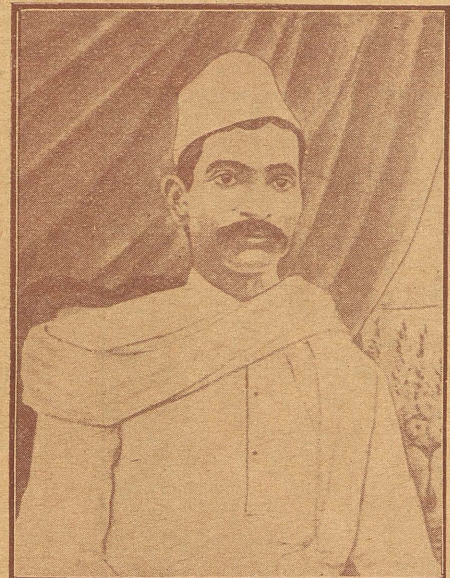
बिहार के 'गाँधी'—बाबू राजेन्द्रप्रसाद जी, जो हज़ारीबाग़ जेल से हाल ही में छूटे हैं, आपका स्वास्थ्य चिन्ताजनक है।

मुरादाबाद नवयुवक-सङ्घ (Youth League) के मन्त्री—श्री० व्रजनारायण मेहरा, जिन्हें हाल में सज़ा हुई थी। आप मुरादाबाद ज़िला-जेल के 'ए' श्रेणी में रक्खे गए हैं।

श्री० वी० जे० पटेल, भूतपूर्व प्रेज़िडेण्ट लेजिस्लेटिव एसेम्बली, जो कोयम्बटूर के जेल में बीमार हैं और जिनकी दशा अत्यन्त चिन्ताजनक कही जाती है।

मुरादाबाद कॉङ्ग्रेस कमिटी के मन्त्री और 'डिक्टेटर'—श्री० हृदयनारायण जी, बी० एस-सी०; एल्-एल्० बी०; जो हाल ही में गिरफ़्तार हुए थे। आप मुरादाबाद के ज़िला-जेल में 'ए' क्लास में रक्खे गए हैं।

भारतीय महिलाओं की शिक्षा सम्बन्धी

देहली के इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज के छात्रावास में रहने वाली कुछ लड़कियाँ। इनमें से कुछ भारतवर्ष के दूर-दूर के स्थानों से आई हुई हैं। छात्रावास की कर्तव्य-परायणा मेट्रन श्रीमती प्रियम्बदा देवी, प्रिन्सिपल की बग़ल में बाईं तरफ़ बैठी हैं।

इन्द्रप्रस्थ हिन्दू-गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज के यूनियन क्लब की कुछ सदस्याएँ, जो कि प्रिन्सिपल के ऑस्ट्रेलिया जाते समय विदा करने के लिए एकत्रित हुई थीं।

बैठी हुईं—मिस एल० गमाइनर;
खड़ी हुईं—मिस राजदुलारी शर्मा, बी० ए० (ऑनर्स) इन्द्रप्रस्थ हिन्दू-गर्ल्स हाई-स्कूल की क्रमशः स्थायी तथा स्थानापन्न प्रिन्सिपल।
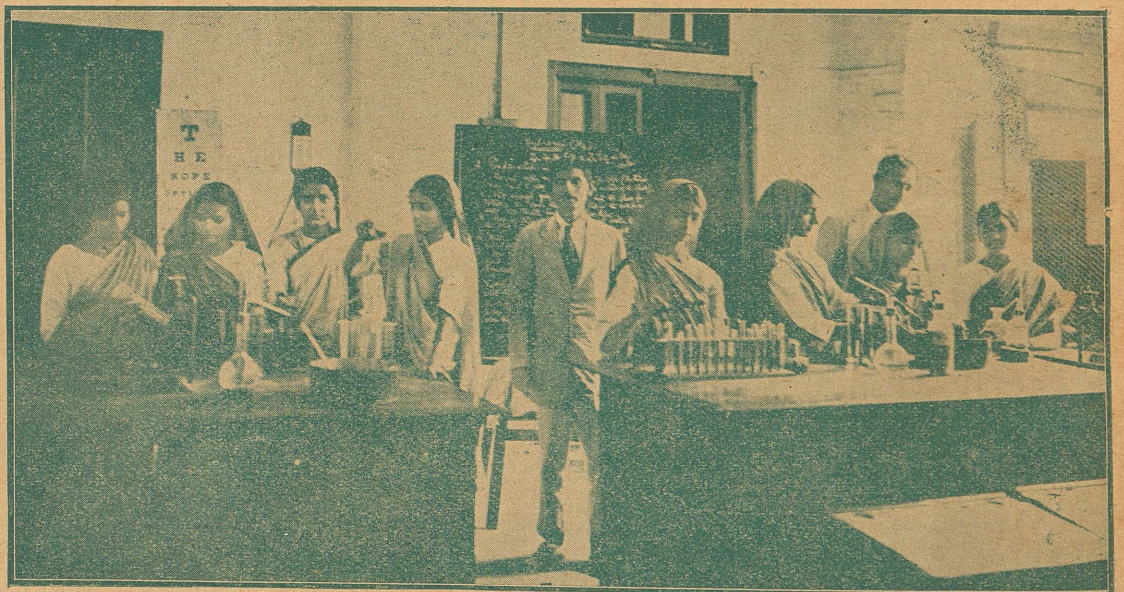
इन्द्रप्रस्थ हिन्दू-गर्ल्स हाई-स्कूल और इण्टरमीजियट कॉलेज के मैट्रिक क्लास की कुछ लड़कियाँ, जो साइन्स का प्रयोग और अध्ययन कर रही हैं।

संस्थाएँ आज भारत में क्या कर रही हैं

देहली के इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज के सङ्गीत क्लास की कुछ छात्राएँ
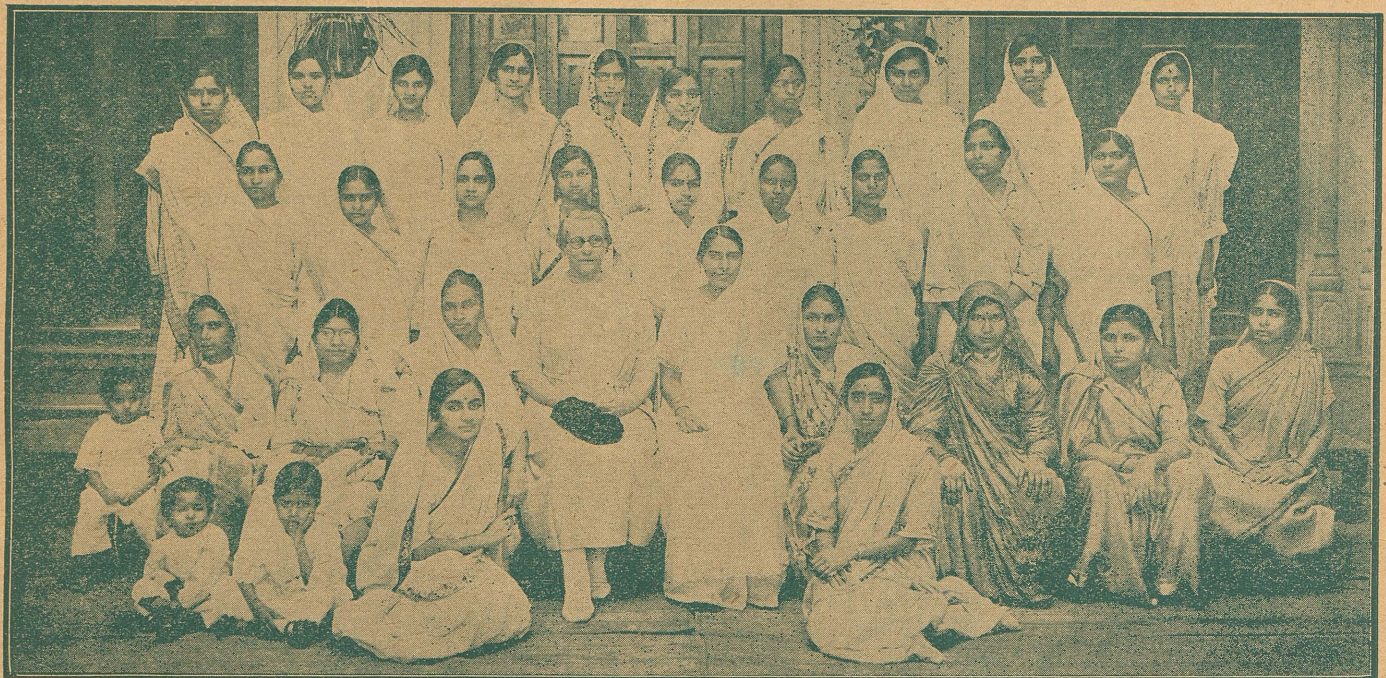
इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा इण्टरमीजियट कॉलेज की कुछ पुरानी छात्राएँ, जो २० मई, सन् १९२९ को मनाई जाने वाली स्कूल की सिलवर जुबली के उत्सव में सम्मिलित हुई थीं। इनमें से अब अधिकांश भिन्न-भिन्न यूनिवर्सिटियों की ग्रेजुएट हैं।

इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स हाई-स्कूल तथा कॉलेज का गर्ल्स-गाइड्स

महाकवि दाग़ (देहलवी) का प्रतिभाशाली वंशज
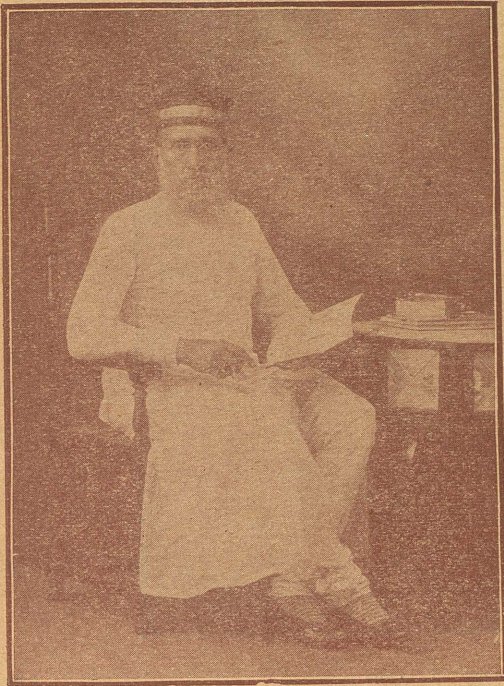
महाकवि दाग़ (देहलवी) के दामाद नव्वाब मिर्ज़ा सिराजुद्दीन अहमद ख़ाँ साहब "सायल" (देहलवी)

तीरे-नज़र को देखो, ज़ख़्मी जिगर को देखो !
इस देखने को देखो, इसके असर को देखो !!
दिल उनसे कह रहा है, ख़स्ता जिगर को देखो,
आगे तुम्हारी मर्ज़ी, चाहे जिधर-को देखो !!
लाश परवानों की कहती है ज़बाने-हाल से,
बोलती-महफ़िल में एक ख़ामोश-महफ़िल चाहिए !!

—"सायल" देहलवी

कुछ क़द्र न की उसने, गर तेरे वफ़ाओं की,
तू उसकी जफ़ाओं पर, ख़ुश होके फ़िदा हो जा !
मज़हब जो तेरा पूछे, कह दे कि मोहब्बत है !
ईसार कर अपने को, और उसपे फ़िदा हो जा !

—"शाद" हैदराबादी

हिज़ एक्सेलेन्सी महाराजा सर किशनप्रसाद साहब बहादुर ; जी० सी० आई० ई० "शाद" हैदराबादी

हुआ यह है, कि वह
गुम हो गया है ख़ुद मुझमें,
मज़ा यह है, कि उसे
ढूँढने चला हूँ मैं !

—"साग़र" अकबराबादी

जनाब "साग़र" अकबराबादी

ताल्लुक़ात मोहब्बत,
यह तेरी ज़ात से हैं,
किसी ने नाम लिया है,
तड़प गया हूँ मैं !
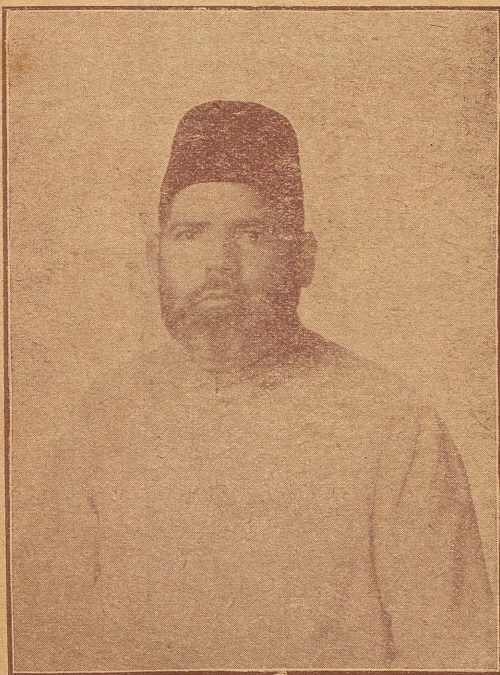
—"साग़र" अकबराबादी

प्रोफ़ेसर "अहसन" मारहेरवी

देखिए किसको वह मिलें, देखिए किसके दिन फिरें !
आँख भी ताक-झाँक में, दिल भी है साज़-बाज़ में !
इश्क़ की हैं जो हसरतें 'अहसन' उठा यह ज़हमतें !
जान को फूँक सोज़ में, दिल को घुला गुदाज़ में ॥

—"अहसन" मारहेरवी

जनाब "मज्ज़र" सिद्दीक़ी अकबराबादी

मेरे हाथों में है क़ूवतं जुनूने फ़ितना-सामाँ की !
जो मैं चाहूँ तो दुनियादें हिला डालूँ बियाबाँ की !
यह रङ्गे-आसमाँ, यह चाँद, यह तारों की ख़ामोशी !
गवाही दे रहे हैं, सब मेरे हाले-परेशाँ की !!

—"मज्ज़र" अकबराबादी

हज़रत "सीमाब" अकबराबादी

आग लग जायगी, सोज़े-दिल सलामत चाहिए !
हम तो बाक़ी हैं, जो बाक़ी गर्मिए-महफ़िल नहीं !!
एक सदा कुन्जे-क़फ़स से, आई और तड़पा गई,
कोई कहता था, रिहा होना मेरा मुशकिल नहीं है !!

—"सीमाब" अकबराबादी

केसर की क्यारी

लीजिए, बरसाइए, सरकार अब तीरे-नज़र ! इस दिले-नाज़ुक को भी फ़ौलाद कर लेता हूँ मैं !!

ले क़फ़स ही को, समझ लेता हूँ अपना आशियाँ ! तेरा कहना आज ऐ सय्याद, कर लेता हूँ मैं !!

जो मुझे भूला है उसको याद कर लेता हूँ मैं,
अपना उजड़ा दिल यूँही आबाद कर लेता हूँ मैं !
भूलने वाले नहीं मुझको असीरी[1] के मज़े,
छुट के तौफ़े[2] क़फ़स सय्याद कर लेता हूँ मैं !
सौ मसर्रत[3] की मसर्रत है, उमीदे जाँ फ़िज़ाँ[4],
लाख ग़म हो, फिर भी दिल को शाद कर लेता हूँ मैं !
ज़िक्र गुलहाए[5] चमन, तारीफ़े-ख़ुरशीदो[6] क़मर[7],
हर बहाने से, किसी की याद कर लेता हूँ मैं !
बे-निशाँ होने से, मिलता है निशाने बे-निशाँ,
अपनी हस्ती, इसलिए बरबाद कर लेता हूँ मैं !
मुद्दतें गुज़रीं क़फ़स में, है वही अब भी लगाव,
पत्ते-पत्ते को चमन के, याद कर लेता हूँ मैं !
बे कहे रौशन है, उन पर हाल अपना ऐ "ज़या",
कब लबे ख़ामोश[8] से फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !

—"ज़या" देवानन्दपुरी

कुछ नहीं तो, शिकवए बेदाद[9] कर लेता हूँ मैं,
इस तरह तुझको सितमगर, याद कर लेता हूँ मैं !
या तसव्वर[10] से तेरे, या फिर तेरी तस्वीर से,
दिल इन्हीं दोनों से, अपना शाद कर लेता हूँ मैं !
दिल से कहता हूँ, कि तू महवे ख़याले-यार हो,
और भी नाशाद को, नाशाद[11] कर लेता हूँ मैं !
लीजिए, बरसाइए, सरकार अब तीरे-नज़र,
इस दिले-नाज़ुक को भी फ़ौलाद कर लेता हूँ मैं !
काँप उठती है ज़मीं, चक्कर में आता है फ़लक[12],
दिल से, जी से, जब कभी फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
बे वफ़ा, बे मेह, ज़ालिम, और मतलब-आश्ना,
अब इन्हीं नामों से, उनको याद कर लेता हूँ मैं !
भूल कर "ज़ाहिद" कहीं आता नहीं, जाता नहीं,
काबए दिल में, ख़ुदा की याद कर लेता हूँ मैं !

—"ज़ाहिद" इलाहाबादी

दो घड़ी के वास्ते, दिल शाद कर लेता हूँ मैं,
जब मिली फ़ुरसत, तुम्हारी याद कर लेता हूँ मैं !
दिल बहलने का, कोई जब आसरा मिलता नहीं,
आसमाँ को देख कर, फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
मौत का जब ध्यान आ जाता है, मुझको हमनशीं[13],
ज़िन्दगी भर के फ़िसाने[14], याद कर लेता हूँ मैं !
दिल में आने ही नहीं देता हूँ, फ़िक्रो रञ्जो-ग़म,
अपने को हर क़ैद से, आज़ाद कर लेता हूँ मैं !
शिकवए-सय्याद से, मिलती है जब मुझको निजात[15],
ऐ चमन वालो, तुम्हारी याद कर लेता हूँ मैं !
यह न जानो, ज़ब्त जुल्मो ज़ोर मुशकिल बात है,
कुछ समझ कर, सोच कर, फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
दिल के बहलाने की सूरत, हज़रते "शातिर" यह है,
सिद्क़[16] दिल से, रोज़ उसकी याद कर लेता हूँ मैं !

—"शातिर" इलाहाबादी

१—क़ैद, २—परिक्रमा, ३—ख़ुशी, ४—बढ़ाने वाली, ५—फूल, ६—आफ़ताब, ७—चाँद, ८—चुप रहना, ९—ज़ुल्म, १०—ध्यान, ११—नाख़ुश, १२—आकाश, १३—साथी, १४—क़िस्से, १५—छुटकारा, १६—सच्चा ।

याद करके आपको, दिल शाद कर लेता हूँ मैं
ख़ानए-बरबाद यूँ, आबाद कर लेता हूँ मैं !
ले क़फ़स[17] ही को, समझ लेता हूँ अपना आशियाँ[18],
तेरा कहना आज ऐ सय्याद, कर लेता हूँ मैं !
दिल के बहलाने की, जब सूरत नज़र आती नहीं,
भूलने वाले को, अपने याद कर लेता हूँ मैं !
देखता हूँ जब शबे-ग़म, अपना हाले-बेकसी,
ख़ुद ज़यादा, क़ैद की मीयाद कर लेता हूँ मैं !

—"अरमान" देहलवी

मिटने वाली हसरतें ईजाद कर लेता हूँ मैं,
एक जहाने नेसती आबाद कर लेता हूँ मैं !

—"हफ़ीज़" जालन्धरी

मै फ़रोश[19] आँखों को, जिस दम याद कर लेता हूँ मैं,
एक जहाने-बेख़ुदी, आबाद कर लेता हूँ मैं !
बर्क़[20] का भी काम, ऐ सय्याद कर लेता हूँ मैं,
आप अपना आशियाँ, बरबाद कर लेता हूँ मैं !
उनकी फ़ितरत[21] है, कि मुझको भूल जाते हैं, मगर—
मेरी आदत है, कि उनको याद कर लेता हूँ मैं !

—"क़ैस" जालन्धरी

जब कभी माज़ी[22], की बातें याद कर लेता हूँ मैं,
ख़ुद को क़ैदे-हाल से, आज़ाद कर लेता हूँ मैं !
मैं तसव्वर[23], में बसा लेता हूँ, एक दुनिया नई,
दिल के वीराने को, यूँ आबाद कर लेता हूँ मैं !

—"तालिब" जकवाली

यूँ दिले वीराँ को, ख़ुद आबाद कर लेता हूँ मैं,
बन्द आँखें करके, उनको याद कर लेता हूँ मैं !
तङ्ग करता है, मुझे सय्याद तू क्यों इस क़दर,
क्या ख़ता मेरी, अगर फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !

—"अज़ीज़" शिमलवी

याद जब आती है, उनकी याद कर लेता हूँ मैं !
दिल ख़याली राहतों से, शाद कर लेता हूँ मैं !

—"दानिश" सेवहारी

हम-क़फ़स[24] क्या पूछता है, दिल की बेताबी का हाल,
जब असीरी[25] में चमन को याद कर लेता हूँ मैं !

—"साबिर" पटियालवी

आलमे-फ़ानी[26] में, आती है मुझे यादे-अदम,
यानी ग़ुर्बत[27] में वतन को याद कर लेता हूँ मैं !

—"हसरत" ज़ईफ़ाबादी

देख कर उसकी जफ़ाएँ और अपनी बेकसी,
आह भर लेता हूँ मैं, फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !

—"राम" करनाली

जब क़फ़स में क़ैद तनहाई से घबराता है दिल,
आशियाँ को, गुलिस्ताँ[28] को, याद कर लेता हूँ मैं !

१७—पिंजड़ा, १८—घोंसला, १९—शराब बेचने वाली, २०—बिजली, २१—स्वभाव, २२—भूत, २३—ध्यान, २४—साथी, २५—क़ैद, २६—मिटने वाला, २७—परदेश, २८—बाग़।

कम अगर "मूनिस" कभी होती है बेताबीए-दिल,
उनको दम भर के लिए, फिर याद कर लेता हूँ मैं !

—"मूनिस" सेवहारी

आपसे झूठे दिलासों पर, उमीदें बाँध कर,
दिल में दुनियाए तरब[29], आबाद कर लेता हूँ मैं !!

—गौरीशङ्कर "सागर"

जब हुजूमे-आरज़ू दिल में नज़र आता नहीं,
आलमे हसरत ही को आबाद कर लेता हूँ मैं !

—"ज़री" लाहारी

जिस चमन की, आ गई मुझको पसन्द आबोहवा,
आशियाँ अपना वहीं, आबाद कर लेता हूँ मैं !
देखता हूँ मैं जहाँ "तालिब" किसी को ग़मज़दा,
अपनी रुसवाई क़फ़स को याद कर लेता हूँ मैं !

—"तालिब" अनसारी

दिल के वीराने में रौनक़ हो ही जाती है कभी,
गाहे-गाहे[30] अब भी उनको याद कर लेता हूँ मैं !

—"करतार" सिन्धी

क्या ज़रूरत है, फ़लक[31] इस पर गिराए बिजलियाँ,
अपने हाथों, आशियाँ बरबाद कर लेता हूँ मैं !

—"ख़ादिम" लाहौरी

चुटकियाँ लेती है जब दिल में, मेरे हुब्बे वतन,
ग़ैर को आमादए बेदाद, कर लेता हूँ मैं !

—"मजज़ूब" लाहौरी

जब तसव्वर में, किसी को याद कर लेता हूँ मैं,
एक जहाने[32] आरज़ू, आबाद कर लेता हूँ मैं !
इस क़दर पाबन्दियाँ हैं, फिर भी मुझको नाज़ है,
यह न पूछो, किस तरह फ़रियाद कर लेता हूँ मैं !
हर नफ़स[33] एक मौत है, तो हर नफ़स के साथ-साथ—
क़ैदे-ग़म से, अपने को आज़ाद कर लेता हूँ मैं !
ग़म नहीं, तुम दिल से, जी से, भूल भी जाओ मुझे,
फिर भी, दिल से, जी से, तुमको याद कर लेता हूँ मैं !
यह मेरा दावा है, जब चाहो सता कर देख लो,
अपने नालों में, असर ईजाद कर लेता हूँ मैं !
मेरे दिल को जब कोई सदमा पहुँचता है कहीं,
ऐशो-राहत[34] का ज़माना, याद कर लेता हूँ मैं !
अल्ला-अल्ला यह मेरी, मशक़े-तस्व्वर का असर,
एक दुनिया दूसरी, आबाद कर लेता हूँ मैं !
छेड़ता हूँ आसमाँ से, गुफ़्तगू का सिलसिला,
जब कोई तरज़े-फ़ुग़ाँ[35] ईजाद कर लेता हूँ मैं !
हज़रते "बिस्मिल" अभी तक, क़तआ रस्मो राह पर,
भूलने वाले को दिल से, याद कर लेता हूँ मैं !

—"बिस्मिल" इलाहाबादी

२९—आनन्द, ३०—कभी-कभी, ३१—आकाश, ३२—आशाओं का संसार, ३३—साँस, ३४—आराम, ३५—आह करने का ढङ्ग ।

लाहौल बिलाक़ूवत

[श्री० जी० पी० श्रीवास्तव, बी० ए०, एल्-एल्० बी०]

["लतखोरीलाल" नामक अप्रकाशित सचित्र पुस्तक के "लाहौल बिलाक़ूवत" खण्ड से—जो इस समय प्रेस में है और एक मास तक प्रकाशित होगी]

"ढाई सौ आदमी बारात में जा रहे हैं—यह बारात है या शैतान की आँत ? भला इतने आदमी ले जाकर क्या कीजिएगा पण्डित जी ? आप अपने लड़के का ब्याह करने जाते हैं, या लशकर लेकर समधी के घर डाका डालने ?"

"भइया यह सलाह आपने अपने पिता जी को क्यों नहीं दी थी, जब वे आपके विवाह में सारे नगर भर को बटोर ले गए थे ?"

अररररर ! पण्डित जी ने बुरी नस दबाई। मैं अपना सा मुँह लेकर रह गया। बात सच थी। कुछ जवाब देते न बन पड़ा। फिर भी खाँस-खूँस कर किसी तरह मैंने कहना शुरू किया—जो बात हो गई, वह हो गई। उसका अब ज़िक्र क्या ? आदमी को हमेशा आगे देखना चाहिए, न कि अपने पीछे। इसीलिए तो ईश्वर ने सामने आँखें दी हैं, कुछ गर्दन की गुद्दी में नहीं।

पण्डित जी—भइया ईश्वर की कृपा से अब आप वकील हो गए हैं। आपसे तर्क में तो मैं जीत नहीं सकता। परन्तु विवाह की शोभा बारात से और बारात की शोभा आदमियों से होती है। यदि बारात में चार-पाँच सौ भी आदमी न हुए, तो वह फिर बारात ही क्या ? ऐसे ही समय जाना जाता है कि किसके कितने सङ्गी-साथी, हिती-मेली, यार-मददगार, नातेदार, पट्टीदार इत्यादि हैं। इन्हीं लोगों से ऐसे शुभ अवसरों पर आबरू की लाज रहती है। नहीं तो संसार में कोई काहे को किसी को पूछे, नमस्कार पैलगी करे ? मेल-जोल, भाई-चारा, नातेदारी सब इन्हीं दिनों के लिए हैं भइया। जब आपके लड़के-बाले होंगे और उनके विवाह आदि के समय आएँगे, तब इन बातों का महत्व आप आप ही जान लेंगे। अधिक क्या कहूँ ?

मैं—तो क्या ढाई सौ आदमी आपकी आबरू की रखवाली के लिए कम हैं, जो आप उनकी तादाद और बढ़ाना चाहते हैं ?

पण्डित जी—यह आप क्या कहते हैं ? ढाई सौ किस गिनती में हैं ? एक वह भी दिन था, जब हम लोगों के पुरखे ढाई-ढाई हज्जार आदमियों की बारात लेकर लड़कों का ब्याह करने जाते थे.........

मैं बात काट कर बीच ही में बोल उठा—हाँ-हाँ जब रेल नहीं थी। और रास्ते में लूट-मार के डर से बिना गरोहबन्दी किए दो क़दम भी चलना मुश्किल था। मगर अब इतनी बड़ी फ़ौज लेकर कहीं जाने की क्या ज़रूरत ? मुफ़्त में अपने सर परेशानी लेना और दूसरों को भी हलाकान करना। रुपए की बरबादी अलग। और ख़ासकर ऐसे समय, जब देश कङ्गाल हो रहा है।

पण्डित जी—हाय ! हाय ! रुपए-पैसे होते किस दिन के लिए हैं ? इन कामों में तो गाँव-गिराँव, घर-द्वार तक बिक जाते हैं, आबरू से बढ़ कर भला कहीं रुपया हो सकता है ? यह तो सोचिए आपको चलना पड़ेगा। इस तरह की बातों से आप छुट्टी थोड़े ही पा जायँगे ?

मैं—कौन मैं ? माफ़ कीजिए। एक दफ़े एक बारात में गया, भूखों मर गया। दूसरी दफ़ा जाना पड़ा तो बेवक्त खाने-पीने से महीना भर तक बीमार पड़ा रहा। तीसरी बार कच्ची पूड़ियाँ खाते-खाते पेचिश हो गई। चौथे मरतबे किसी रस्म पर समधियों में जो तकरार हुई तो डण्डे चल गए। भागने तक का रास्ता न मिला। यही ग़नीमत हुई कि खोपड़ी फूटने से बच गई। तभी से चाहे कोई नाराज़ हो या ख़ुश, मैं किसी बारात में नहीं जाता और ख़ासकर देहात में।

पण्डित जी—तो भइया मधनगरा देहात थोड़े ही है। उन्नाव शहर से कुल तीन ही कोस पर तो है। जो गाँव शहर से इतना मिला हो उसमें देहातीपन कहाँ रह सकता है ? उस पर लड़की के पिता स्वयं एक रियासत के उच्च पदाधिकारी हैं। उन्नाव शहर के सभी अफ़सरों से उनका मेल-जोल है। वहाँ के बड़े-बड़े हाकिम, वकील-बालिस्टर सभी उनके यहाँ जायँगे। तभी तो आप लोगों को कष्ट दे रहा हूँ कि हमारी तरफ़ भी दस-बीस बड़े आदमियों की भीड़ हो जाए। क्या बताऊँ, आपके पिता जी अभी तक इलाहाबाद से लौटे नहीं। और बारात कल सुबह ही की गाड़ी से जाने वाली है। नहीं तो मैं उनको भी हाथ-पाँव जोड़ कर ले चलता। इसलिए अब आप ही पर भरोसा है। और यह पगड़ी आपके चरणों पर है......!

मैं—अरे ! राम ! राम ! आप ब्राह्मण देवता होकर यह क्या करते हैं पण्डित जी ? नाहक़ आप मेरे पीछे पड़े हुए हैं। मैं बारातों में जाने से क़सम खा चुका हूँ। यहाँ तक कि हाल ही में मेरी सगी स्त्री के सगे भाई की शादी थी और मैं उसमें नहीं गया। यह तो आप जानते ही हैं।

"और पण्डित जी यह भी जानते होंगे कि उसमें आपके पिता जी गए थे, इसलिए वहाँ घर भर के जाने की ज़रूरत न थी।" यह कहते हुए हमारे सहपाठी मिस्टर लॉजीशियन, जिन्होंने हमारे साथ ही यहाँ वकालत शुरू की थी, कमरे में फट पड़े। और आते ही उन्होंने पण्डित जी की तरफ़ से ऐसी पैरवी की कि अन्त में मुझसे कहला ही कर छोड़ा कि अच्छा भाई चलूँगा।

पण्डित जी के जाने के बाद मैंने लॉजीशियन को फटकारना शुरू किया—अजब आदमी हो। तुम्हें बारात में जाने का बहुत शौक़ है तो तुम्हीं जाते, मुझे काहे को इस झगड़े में फँसाया ?

लॉजीशियन—उस्ताद, बिना तुम्हारे मज़ा जो नहीं आता। 'वह महफ़िल बीरान जहाँ भाँड़ न बाशद।'

मैं अपनी उसी धुन में बकता गया—तब क्या बहुत सुधार-सुधार चिल्लाया करते हो ? यों कहने को तो अक्सर कहा करते हो कि शादी में बारात ले जाना बहुत बुरा है। इसी से सारे झगड़े-बखेड़े पैदा होते हैं। आजकल मुल्क की माली हालत ऐसी ख़राब हो रही है कि दो-चार मिहमानों की एक वक्त भी मिहमानदारी करते नहीं बन पड़ती। उस पर चार-चार दिन तक किसी के घर एक फ़ौज का पड़ाव डाल देना कहाँ की अक़्लमन्दी है। बस दूल्हे के साथ ख़ाली घर वालों ही का जाना बहुत काफ़ी है। मगर जब वक्त पड़ा तो तुम ख़ुद ही दुम दबा गए। लगे पण्डित जी से राग में राग मिला कर कहने कि हाँ भाई आबरू का मामला है, ज़रूर चलना चाहिए।

लॉजीशियन—अल्लाह ! यह कहिए इस वक्त आपके सर पर सुधार का भूत सवार है। अजी रिफ़ॉर्मर साहब, हर जगह तलवार नहीं चलाई जाती। यह सुधार का बड़ा ही मुख्य नियम है। अगर इनसे कहीं कह देता कि हम नहीं जायँगे तो सुबह तक दरवाज़े पर चक्कर लगाते-लगाते हमारा द्वार खोद डालते और ज़बरदस्ती हमें उठा कर ले जाते।

मैं—तो अब क्या जाना नहीं पड़ेगा ?

लॉजीशियन—जाने वाले को कुछ कहता हूँ। इसीलिए तो कह दिया कि कल एक ख़फ़ीफ़ा का बहुत ज़रूरी मुक़दमा है। बारात के साथ तो नहीं जा सकता, मगर मुक़दमा करके दोपहर की गाड़ी से ज़रूर आऊँगा।

मैं—यह तो सरासर धोखेबाज़ी है।

लॉजीशियन—क्या करता ? न मानने वाले असामियों को इसी तरह राह पर लाया जाता है, और उसी तरकीब से अपना भी गला छुड़ाया जाता है। नहीं उल्टे लेने के देने पड़ जाएँ। इसे धोखेबाज़ी नहीं, कूटनीति कहते हैं !

मैं—बस अपनी कूटनीति अपने घर रखिए। मुझे फँसा कर देखता हूँ, तुम अब कैसे निकल जाते हो। मैं भी अब बारात के साथ न जाकर महज़ तुम्हें ले जाने की ख़ातिर दोपहर की गाड़ी से जाऊँगा।

लॉजीशियन—यह बात ? ख़ैर ! जब पण्डित जी को तुम पर इतना भरोसा होगा कि तुम्हें दोपहर की गाड़ी से आने के लिए छोड़ जाएँ तब तो।

मैं—होगा कैसे नहीं ? मैं क्या तुम्हारी तरह धोखेबाज़ हूँ कि कहूँ कुछ और करूँ कुछ। पण्डित जी से कह दूँगा कि बिना मेरे लॉजीशियन अकेला पड़ कर हर्गिज़ नहीं आएगा।

लॉजीशियन—देखा जायगा। अब तो तुम्हें अपना कच्चा चिट्ठा सब बता ही दिया। उस पर भी डरता हूँ कि तुम कहीं फिर अपनी सी न कर जाओ।

मैं—अपनी सी के क्या मानी ?

लॉजीशियन ने मुस्करा कर जवाब दिया—वही जो सदा करते आए हो।

यह अलबत्ता समझ में नहीं आया।

२

सचमुच लॉजीशियन ने पण्डित जी को न जाने कैसी पट्टी पढ़ा रक्खी थी कि उन्हें मेरी बातों का किसी तरह विश्वास ही नहीं होता था। बल्कि वह उल्टे यही समझते थे कि मैं अपनी जान छुड़ाने के लिए बहाना कर रहा हूँ। इसलिए उन्होंने मुझे अपने साथ ही बारात में ले जाने के लिए और भी ज़िद पकड़ ली। यहाँ तक कि तीन ही बजे रात से मेरे घर पर धावे शुरू हो गए। और पाँच बजते-बजते मैं पण्डित जी के दरवाज़े पर ज़बरदस्ती पकड़ कर लाया गया। उस वक्त मैंने लॉजीशियन की कूटनीति का फ़ायदा समझा और जाना कि दुनिया में बिना इसके किसी भलेमानुस का गुज़र नहीं हो सकता। लॉजीशियन भी वहीं बारात की रवानगी के इन्तज़ाम में मौजूद था। आख़िर उसीने जब कहा कि—"अगर यह किसी वजह से इस वक्त नहीं जा सकते तो कोई हर्ज नहीं। मैं इन्हें अपने साथ लेता आऊँगा। अगर मुझे मुक़दमे से छुट्टी न मिली या और कोई ज़रूरी काम फट पड़ा तो भी मैं इन्हें तो भेज ही दूँगा। चाहे जैसे बन पड़े। ख़ातिरजमा रखिए।"—तब जाकर पण्डित जी ने किसी तरह जान छोड़ी। वाह री अक़्ल ! उन्होंने एतबार भी किया तो किस पर ? मेरी शिकायतों और दलीलों का अच्छा नतीजा निकला !

आख़िर बारात चलने के लिए जमा हो गई। मगर जिनको पण्डित जी बड़े आदमी समझते थे, वे एक नहीं दिखाई पड़े। हाँ, उनकी जगह पर उनके लड़के-बाले और ऐरे-ग़ैरे रिश्तेदार, जिनसे पण्डित जी से जान-पहचान तक नहीं थी, एवज़ीदार बन कर दुगने की तादाद में अलबत्ता जुट गए। गोया बारात मित्र-मण्डली के ख़ान्दानों की पार्लामेण्ट है, जिसमें हर ख़ान्दान का कोई न कोई प्रतिनिधि ज़रूर होना चाहिए। यह लोग माँगी हुई गाड़ियों और मोटरों पर, जिस तरह से छकड़े पर बोरे लादे जाते हैं, दौड़-दौड़ कर लदने लगे। सवारियाँ कम और आदमी ज़्यादे, उस पर दूसरे खेवे के लिए न समय ही था और न किसी में इन्तज़ार करने के लिए दम। बस बारातियों में हो गई झौड़। ख़ैर, किसी तरह स्टेशन पर बारात पहुँची। लॉजीशियन के साथ वहाँ तक देख-रेख के लिए हमें भी जाना पड़ा। पण्डित जी ने मारे अक़्लमन्दी के रेल की एक ही गाड़ी 'रिज़र्व्ड' कराई थी और न्योता दिया था सारे शहर भर को। बारातियों के एक ही रेला में वह ठसाठस भर गई। मगर प्लेटफ़ॉर्म पर की भीड़ फिर भी कम न हुई। डाँट-डपट और लड़-झगड़ कर किसी तरह उस गाड़ी में कुछ और भी ठूँसे गए। जब तक भीतर गाली-गुफ़्ता के साथ ढकेलम-ढकेला शुरू हो गया। इस शोर-गुल में रेल के कर्मचारीगण फट पड़े और लगे मुसाफ़िर गिनने, तब तो पण्डित जी के होश उड़ गए। बेचारे सिकुड़ कर कोने में दबक रहे और टिकट कलेक्टरों ने आधे से ज़्यादे आदमी उतार दिए। यह लोग अपनी यह आवभगत देख पण्डित जी पर उबल पड़े। लगे गालियाँ दे-देकर कहने कि जब इसे हम लोगों को ले जाने का दम नहीं था तो किस बिरते पर न्योता देकर बुलाया? इन आबरू की लाज रखने वालों ने पण्डित जी की अच्छी आबरू बनाई। बड़ी ख़ैरियत हुई कि गाड़ी छूट गई, नहीं तो बेचारे पर न जाने और कौन सी आफ़त आती? बारात ले जाने वाले और जाने वालों की जब यह हालत है तो हिन्दू-समाज को चाहिए कि महाब्राह्मणों की तरह बारातियों की भी एक जाति फ़ौरन बना दे, ताकि किसी को न ख़ुशामद करने की ज़रूरत पड़े और न शिकायत करने की नौबत आए। जब जितने बारातियों की ज़रूरत हो, चट किराए पर बुला लिए जाया करें। बस झगड़ा ख़तम। उम्मीद है, मेरे इस प्रस्ताव पर हिन्दू-समाज ज़रूर ध्यान देगा। मगर जब अक़्ल होगी तब।

शादियों में जाने से मैं पहिले ही घबड़ाता था। उस पर स्टेशन पर का हाल देख कर मेरी तबियत कुछ ऐसी खट्टी हुई कि मकान आकर जी में ठान लिया कि बला से मेरी क़समें टूटें या पण्डित जी नाराज़ हों, मगर अब मैं दोपहर की क्या, किसी भी गाड़ी से नहीं जाऊँगा। इस शादी में जाने के लिए मेरे राज़ी हो जाने का कारण कुछ और भी था। मगर उसको भी मैंने इस समय तिलाञ्जलि दे दिया। यह तो मैं जानता ही था कि लॉजीशियन जाएगा नहीं और उसीको ले जाने के लिए बात पड़ जाने पर मैं रुक गया था। मगर मेरे ताज्जुब की हद न रही, जब वही दोपहर की गाड़ी आने के डेढ़ घण्टे पहिले ही इस शादी में जाने के लिए तैयार होकर मेरे यहाँ आ धमका। मैंने घबड़ा कर पूछा—अरे! यह क्या? तुम तो जाने वाले नहीं थे?

लॉजीशियन—ऐसा नहीं कहता तो तुम मेरा साथ देने के लिए रुकते कैसे? यह भी कूटनीति थी। क्या मैं अकेले थोड़े ही जाता?

मैं—तुम तो अजब थाली के बैंगन मालूम होते हो। कभी इधर लुढ़कते हो और कभी उधर।

लॉजीशियन—मैं क्या करूँ, संसार में सफलता इसी में है कि समयानुसार अपनी नीति धड़ाधड़ बदलता रहे।

मैं—तो अब क्या तुम ब्याह-शादी में बारात ले जाने के फिर पक्ष में हो गए।

लॉजीशियन—भई वाह! कहाँ राम-राम और कहाँ टें-टें! मैं तो समझता था कि जब से तुम वकालत करने लगे हो तब से बहुत कुछ आदमी हो गए हो, दुनियादारी की बातें समझने लगे हो; मगर देखता हूँ कि अब भी कसर बाक़ी है। अरे भाई, बारात से क्या बहस? यहाँ तो सवाल अपने आने-जाने का है। अच्छा अब उठिए, चटपट चलने के लिए तैयार हो जाइए। अब सुधार-उधार पर लेक्चर झाड़ने का समय नहीं है।

मैं अपनी बुद्धि पर कटाक्षपूर्ण समालोचना सुन कर जल मरा। फिर भी अपना ग़ुस्सा दबा कर रुखाई से इतना ही कहा—तुम्हें जाना हो जाओ, मैं तो नहीं जाने का।

लॉजीशियन—क्यों? क्यों? तब किस बिरते पर पण्डित जी के सामने इतना अकड़ते थे और सैकड़ों क़समें खाई थीं।

मैं—ख़रबूज़ा, ख़रबूज़ा देख कर रङ्ग पकड़ता है। मैं भी अपनी कुशलता अब अपनी नीति के बदलने ही में देखता हूँ।

लॉजीशियन अपनी ही तरह जवाब पाकर अपना सा मुँह लेकर रह गया, मगर झेंपती मिटाने के लिए हँस कर बोला—अल्लाह! आप नख़रा करना भी जानते हैं?

मैंने चिढ़ कर कहा—मुझे नख़रा करने की ज़रूरत? क्या मैं औरत हूँ? तुम शायद समझते होगे कि वहाँ जाने में मेरी भी ग़रज़ अटकी है, क्योंकि मेरे ससुर जी आजकल उन्नाव ही में हैं और वहीं मेरी श्रीमती जी भी हैं। इसलिए मैं इस शादी में जाऊँगा ज़रूर, ताकि ज़रा मैं अपनी ससुराल में भी जा सकूँ। क्यों, यही बात है न? मगर हज़रत, तुम्हें यह पता नहीं है कि मैं ससुराल जीते जी हर्गिज़ नहीं जा सकता। वहाँ जाने से मैंने क़सम खा ली है। ख़ासकर इसीलिए तो मैं अपने साले की शादी में नहीं गया था। मेरे ही न जाने की वजह से श्रीमती जी का अभी तक आना नहीं हुआ।

लॉजीशियन—अरे! यार तब तो नाहक़ मौक़ा हाथ से खोते हो। मैं तुम्हारी जगह पर होता तो मैं इस शादी में नाक के बल जाता। इधर पण्डित जी भी ख़ुश और उधर अपना भी दिल ख़ुश। इससे उम्दा बहाना तुम्हें श्रीमती जी से मिलने का मिल नहीं सकता।

श्रीमती जी की याद उभर पड़ी और इससे मेरी कुछ ऐंठ जाती रही। मैं ज़रा नर्म पड़ कर बोला—"आह! उनसे मिलना और साए को हाथ से पकड़ना दोनों एक ही है। सारी ज़िन्दगी बीत गई और उनसे ...." बड़ी अक़्लमन्दी की कि मैं चुप हो गया। क्योंकि तुरन्त ही ख़्याल आया कि अपनी कम्बख़्ती का भेद कभी नहीं बताना चाहिए।

लॉजीशियन ने शायद मेरी बात सुनी नहीं। इसलिए उसने और ही धुन में पूछा—आख़िर ससुराल जाने से क्यों घबड़ाते हो?

मैं—घबड़ाने की कोई बात नहीं, मगर मैं वहाँ रहना नहीं चाहता; क्योंकि वहाँ के लोग ज़रा बेहूदे हैं। यही तो मुश्किल है।

लॉजीशियन—बस इतनी ही बात है? तुम्हारा मेरे साथ जाना और भी अच्छा है यार! मज़े से बारात की बारात की, लौटते समय ससुराल भी हो लिया। मैं ऐसी तरकीब बता दूँगा कि तुम्हें वहाँ ठहरने की ज़रूरत ही न पड़ेगी। बस दो घड़ी बैठे, बीबी साथ ली और खट से चले आए।

मैं—हाय! हाय! ऐसा जब कहीं मुमकिन हो तब तो। मैं अब तक जाकर उन्हें ले न आता? जब जाऊँगा तो वहाँ दो-एक दिन ठहरना ज़रूर ही पड़ेगा। और ठहरने में ....ख़ैर! मगर जब साले साहब की शादी में मैं वहाँ नहीं गया, तब अब जाऊँ भी तो कौन सा मुँह लेकर। इसीसे वह लोग मुझे अब बुलाते भी नहीं हैं।

लॉजीशियन—अजी वाह! इन बातों के चक्कर में न पड़ो। बस श्रीमती जी की याद करो और चल खड़े हो। बेड़ा पार है। मैं तो तुम्हारी मदद के लिए साथ ही हूँ। घबड़ाते किसलिए हो?

इसके बाद लॉजीशियन ने श्रीमती जी की याद दिला-दिला कर मुझे ऐसा बेक़ाबू कर दिया कि मेरी मुहब्बत भड़क उठी और उसके ताव से मेरी प्रतिज्ञा ही पिघल गई। फिर तो अपनी ससुराल जाकर श्रीमती जी से मिलने और उनको अपने साथ लाने की बड़ी-बड़ी तरकीबें सोची जाने लगीं। मगर अभी कोई राय ठीक नहीं हुई थी कि इतने में लॉजीशियन घड़ी देख कर बोल उठा कि—"अरे! यार गाड़ी आने में अब सिर्फ़ आधा ही घण्टा रह गया। बस अब झटपट स्टेशन चले चलो। वहीं यह बातें तय हो जायँगी।"

स्टेशन पहुँच कर लॉजीशियन एकाएक मेरा हाथ पकड़ कर बड़े ज़ोर से बोला—बाज़ी मार ली दोस्त! तरकीब सूझ गई।

मैं—क्या?

लॉजीशियन—सुनो। पण्डित जी की बारात मघनगरा गई है। वह उन्नाव से तीन ही कोस पर है। जिनके यहाँ शादी होगी वह सुन ही चुके हो कि बड़े आदमी हैं और उन्नाव के अफ़सरों से उनका मेल-जोल है। इसलिए उन्होंने तुम्हारे ससुर जी को ज़रूर न्योता दिया होगा......!

मैं—यह तो मैंने पहिले ही सोचा था। और इसी भरोसे पर मैं बारात की मुसीबतें झेलने को तैयार हो हो गया था, क्योंकि ससुर जी से वहाँ मुलाक़ात होगी और लाख मनमुटाव हो, आँख मिलते ही मुरव्वत आ ही जाती है। इसलिए वह बारात से अपने साथ मुझे अपने यहाँ ले ही जाते। मगर मैं किसी तरह वहाँ ठहरता नहीं। ज़रूरी मुक़दमों का बहाना करके तुरन्त ही भाग खड़ा होता। अगर वह भलेमानुस होंगे तो ऐसे वक़्त श्रीमती जी को मेरे साथ कर ही देंगे। मगर बाद को सोचा कि फिर भी यह दुविधे वाली बात है। वहाँ जाएँ भी और मुफ़्त में अपना सा मुँह लेकर लौटें, यह तो ठीक नहीं। उस पर बारातियों की ऐसी आवभगत देखी कि बेचारे गर्दन में हाथ दे-देकर रेल से उतारे गए। बस मेरी राय बदल गई।

लॉजीशियन—उस्ताद, सोचा तो था तुमने बहुत ठीक, फिर भी बिलकुल ग़लत। क्योंकि तुम यहीं देख चुके हो कि यहाँ के सभी बड़े आदमियों ने आख़िरी वक़्त पर एक न एक बहाना करके अपने-अपने एवज़ीदार भेज दिए, ख़ुद नहीं गए। कोई जाए कैसे? आजकल नौकरी पेशे वालों को बारातों में जाने के लिए फ़ुरसत कहाँ मिलती है? इसी तरह तुम्हारे ससुर जी भी देहात में जाने वाले असामी नहीं हैं, जब तक उन पर कोई ख़ास दबाव न पड़े। उस पर बिना तुम्हारे पिता के लिखे वह तुम्हारी श्रीमती जी को भेज नहीं सकते।

मैं—हाँ, यह तो सही कहते हो। तब?

लॉजीशियन—तब क्या, मैं तुम्हारे पिता की तरफ़ से तुम्हारे ससुर जी को ऐसा तार दिए देता हूँ कि ख़ासकर तुम्हीं से मिलने के लिए वह इस शादी में ख़ुद जाकर शरीक़ हों और दूसरे ही दिन तुम्हें वहाँ से लाकर वह तुम्हारी श्रीमती जी को तुम्हारे साथ फ़ौरन बिदा कर दें। एक दिन के लिए भी वह तुम्हें न रोकें।

मैं फड़क उठा। और दिल खोल कर लॉजीशियन की बुद्धि की प्रशंसा करते हुए कहा—वाह दोस्त, यह तुम्हें ख़ूब सूझी। क्यों न हो, आख़िर मेरे ही दोस्त तो। मान गया। मगर तार में श्रीमती जी को फ़ौरन भेज देने के लिए कौन सा बहाना गढ़ोगे?

लॉजीशियन—वही तो सिर्फ़ सोचना रह गया है। मैं चाहता हूँ कि उसे एकाध घण्टे ख़ूब ग़ौर से सोच कर लिखूँ, ताकि तुम्हारे ससुर जी के दिल में पैठ जाए और ऐसी घटना गढ़ूँ जो उनको मालूम हो कि तुम्हारे रवाना हो जाने के बाद यहाँ हुई है, तभी तो वह तुमसे मिलने के लिए दौड़े हुए मधनगरा जायँगे।

मैं—बेशक! बेशक! तार तो ऐसा ही होना चाहिए, तभी काम बनेगा।

लॉजीशियन—मगर मुश्किल यह है कि इसके लिए मुझे रुकना पड़ेगा, और मैं पण्डित जी के आगे झूठा भी बनना नहीं चाहता।

मैं—हाँ, यह अलबत्ता एक अड़चन पड़ गई। और हाय! हाय! गाड़ी भी कम्बख़्त आ रही है। इतनी जल्दी में भला क्या हो सकता है? तुम्हें रुकना तो पड़े ही गा।

लॉजीशियन—वाह! ऐसा भी कहीं हो सकता है? भला पण्डित जी क्या कहेंगे? दोस्ती में फ़र्क़ आ जायगा। यह गाड़ी गई तो और किसी गाड़ी से हम द्वार-चार में पहुँच नहीं सकते। और हम लोगों को—जो पण्डित जी के न पट्टीदार हैं और न सजातीय—बस उसी में शरीक होने से मतलब है। इसलिए अगर हम इस गाड़ी से न जा सके तो फिर हमारे लिए वहाँ जाना बिलकुल बेकार ही है।

मैं—पण्डित जी से तो तुम्हारी चार दिन की मुलाक़ात है और हमारी-तुम्हारी दोस्ती लड़कपन से है। इसका तो ज़रा ख़्याल करो।

लॉजीशियन—नाहक़ मैं तुम्हें बुलाने गया। तुमने अजब धर्म-सङ्कट में डाल दिया। अच्छा पण्डित जी से मेरी तरफ़ से बहुत-बहुत माफ़ी माँग लेना और कह देना कि उनका मुक़द्दमा ख़तम नहीं हुआ, बल्कि कल पर टल गया।

मैं—कह दूँगा भाई। मगर तुम रुक जाओ। हाथ जोड़ता हूँ।

गाड़ी छूटी तो मैंने खिड़की से सर निकाल कर फिर उससे ताकीद कर दी—"दोस्त, तार देने में देर न होने पावे। मेरे पहुँचने से पहिले ही वह ससुर जी को मिल जाए। समझे, और बहाना ख़ूब......!" उसने गाड़ी के साथ दौड़ते हुए चिल्ला कर कहा—"समझ गया, समझ गया। ख़ातिर जमा रक्खो। मगर ज़रा मेरी पीठ ठोंक कर बताना तो कि मेरी कूटनीति कैसी रही।"

उसकी पीठ तो हाथ बढ़ा कर मैंने ठोंक दी। मगर उसके सवाल का जवाब देते न बन पड़ा। महज़ गाड़ी की धड़धड़ाहट के मारे।

(क्रमशः)

* * *

(२०वें पृष्ठ का शेषांश)

रखने वाले एक यूरोपियन विद्वान ने लिखा है कि सन् १९२६ में एक पौण्ड की चीज़ का मूल्य चुकाने के लिए इटली को १२१ 'लिरा' देना पड़ता था, परन्तु अब केवल ८८ देना पड़ता है। इस अवस्था की क्रमशः और भी उन्नति हो रही है। इसके साथ ही मुसोलिनी ने सरकारी ख़ज़ाने की भी उन्नति की है। सरकार को अब एक पैसे का भी घाटा नहीं है; बल्कि वह बड़ी तेज़ी से अपना पुराना ऋण चुका रही है। परन्तु सब से अधिक आश्चर्य की बात तो यह है कि मुसोलिनी ने इसके साथ ही प्रजा पर लगे हुए कितने 'टैक्स' भी बन्द कर दिए हैं।

यूरोपियन देशों में आजकल आजीवन अविवाहित रहने की एक प्रथा सी चल पड़ी है। कितने ही युवक और युवतियाँ वैवाहिक बन्धन से विमुक्त रहना ही पसन्द करते हैं। मुसोलिनी ने ऐसे कुँवारों और कुँवारियों पर एक टैक्स लगा रक्खा है। पच्चीस से पैंतीस वर्ष के कुँवारों और कुँवारियों को साल में ३५ लिरा, ३५ से ५० वर्ष वालों को प्रति वर्ष ५० लिरा और ५० से ५६ वर्ष तक २५ लिरा टैक्स देना पड़ता है। परन्तु यह कर जनता से रुपए वसूल करने की इच्छा से नहीं, वरन् इटली की घटती हुई जन-संख्या की वृद्धि के लिए लगाया गया है। इस अभिनव कर द्वारा लाखों की आय होती है, वह सरकारी ख़ज़ाने से बिलकुल अलग रक्खी जाती है और देश के नवजात शिशुओं तथा प्रसूतियों के उपकारार्थ ख़र्च की जाती है।

मुसोलिनी ने ३१५ लिरा अपने देशवासियों से ऋण लेकर 'बैङ्क ऑफ़ इटली' में जमा कर दिया है। इस रक़म से जो आय होती है, वह देश के शिल्प-वाणिज्य की उन्नति के लिए ख़र्च की जाती है। जहाज़ी व्यवसाय में इङ्गलैण्ड के बाद इटली का ही नम्बर था, इसे मुसोलिनी ने और भी समुन्नत कर दिया है। ज़्यादा माल ढोने वाले बहुत से नए जहाज़ तैयार किए गए हैं। रेशम के काम के लिए इटली संसार का अन्यतम श्रेष्ठ स्थान समझा जाता है। इसलिए मुसोलिनी ने इस ओर विशेष रूप से ध्यान दिया है और आशा की जाती है, इस काम में संसार का कोई भी देश इटली की समता नहीं कर सकेगा। इस रेशम के व्यवसाय द्वारा आजकल इटली को पाँच करोड़ सालाना की आमदनी है। इसके साथ ही नक़ली रेशम का व्यवसाय भी वहाँ बड़े ज़ोरों से होता है। मुसोलिनी की अनवरत चेष्टा से वहाँ खाद्य पदार्थों के मूल्य में आधे से भी अधिक की कमी हो गई है। इसके सिवा बेकारों की संख्या भी वहाँ उत्तरोत्तर घट रही है। देशोन्नति सम्बन्धी ऐसा कोई विभाग नहीं है, जिस ओर मुसोलिनी ने ध्यान न दिया हो। सारे देश में नए-नए रास्ते निकल रहे हैं, नए-नए स्कूल और कॉलेज खुल रहे हैं। रेल, नहर, कारख़ाना, बन्दरगाह, वन-विभाग और मत्स्य-विभाग की भी ख़ासी उन्नति हो रही है। मुसोलिनी का शासन किसी के धार्मिक विचारों में हस्तक्षेप नहीं करता।

देश की भीतरी शान्ति की प्रतिष्ठा के लिए भी मुसोलिनी ने कम चेष्टा नहीं की है। 'माफ़िया' नाम के विख्यात डाकू-दल का उसने मूलोच्छेद कर डाला है। चोरों, ठगों तथा अन्यान्य अवैध उपायों से जीविका अर्जन करने वालों को भी उसने नेस्तोनाबूद कर डाला है।

बेनितो मुसोलिनी प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली का प्रबल विरोधी है। उसका यह सिद्धान्त है कि—"राजा ही राष्ट्र की मूर्ति है। प्रजा व्यक्तिगत भाव से सदैव ही नियम और शृङ्खला भङ्ग किया करती है। शासन-तन्त्र का कर्तव्य है, नियम और शृङ्खला की रक्षा करना। प्रजा अपने शासन का भार राजशक्ति को सौंप सकती है, पर वह स्वयं उसे परिचालित नहीं कर सकती। जिस समय किसी जाति के किसी स्वार्थ-विशेष की रक्षा का प्रश्न सामने आता है, उस समय कोई भी प्रजातन्त्र जन-साधारण से राय लेकर कार्य नहीं करता। प्रजा की सम्मति से शासन-कार्य चलाने की बात एक व्यर्थ की कल्पना है। इसके द्वारा कोई कार्य नहीं हो सकता।

"भगवान और इटली का नाम लेकर शपथ करता हूँ—इटली के नाम को अधिकतर उज्ज्वल करने के लिए जिन लोगों ने जीवन विसर्जन किया है, उनका नाम लेकर शपथ करता हूँ कि जब तक जीवित रहूँगा तब तक मन, वचन और कर्म से इटली का मङ्गल-साधन किया करूँगा। हम पवित्र तथा अविचल भाव से इटली की सेवा करेंगे। इस सम्बन्ध में सुविधावाद और सावधानतावाद को हम कापुरुषता समझ कर घृणा करेंगे।

"हमारे फ़ैसिस्ट दल का यह उद्देश्य है कि इटली के सिर पर हाथ फेर कर जो जाति अपने अधिकार में विस्तार की चेष्टा करेगी, उससे हम युद्ध करेंगे। हम लोग यूरोप तथा सारे संसार में इटली का नाम क़ायम रखने की चेष्टा करेंगे।

"हमारी एक मात्र राजनीति है, इटली को प्यार करना। इटली के स्वर्गीय सौन्दर्य का प्रत्येक कण हमारे देश-प्रेम से ओत-प्रोत है। जो लोग जीवित हैं, वे देश के अतीत गौरव की रक्षा के लिए बाध्य हैं।

"प्रत्येक श्रेष्ठ आन्दोलन में कोई प्रधान पुरुष अवश्य ही रहता है और आन्दोलन का समस्त आघात भी उसे सहन कर लेना पड़ता है। समस्त अमङ्गल अपने सिर पर लाद लेना पड़ता है। यहाँ तक कि उस आन्दोलन की आग में उसे भस्म हो जाना पड़ता है। फ़ैसिस्ट विप्लव की पताका इस समय मेरे हाथ में है। परन्तु फ़ैसिज़्म मैं ही नहीं हूँ। मैं तो केवल मुखपात्र हूँ। फ़ैसिज़्म मुसोलिनी से बढ़ कर है। मेरे बाद मेरा कार्य जीवित रहेगा।"

परन्तु कुछ लोग ऐसे भी हैं, जो मुसोलिनी के इस सिद्धान्त को उसकी धूर्तता बताते हैं। उनकी धारणा है कि वह स्वयं बादशाह बनना चाहता है। शायद इसीलिए ख़ास इटली में भी उसके बहुत से शत्रु हैं और उन्होंने उसे मार डालने की भी कई बार असफल चेष्टा की है।

प्रजातन्त्र शासन-प्रणाली पर विश्वास रखने वाले विद्वानों का कथन है कि मुसोलिनी का स्वेच्छाचारतन्त्र चाहे जितना भी समुन्नत क्यों न हो जाए, उसका पतन अनिवार्य है। जिस समय प्रजातन्त्र सिर उठाएगा, उस समय मुसोलिनी का फ़ैसिज़्म अवश्य ही हवा में उड़ जायगा।

* * *

वारसाईल की सन्धि रद्द कर दो !!

[डॉक्टर "पोल खोलानन्द भट्टाचार्या" एम० ए०; पी० एच-डी०]

आज से १६ वर्ष, पूर्व तारीख़ ३ अगस्त सन् १९१४ को सर एडवर्ड ग्रे ने ब्रिटिश पार्लामेण्ट को युद्ध में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करते हुए कहा था, कि "इङ्गलैण्ड हरदम न्याय का साथ देता रहा है। वह कभी भी संसार के छोटे तथा अशक्त देशों पर अन्याय होता हुआ नहीं देख सकता। इसलिए न्याय के रक्षार्थ हमें इस युद्ध में भाग लेना पड़ेगा।" आज हम लोगों को ख़ूब मालूम है, कि इङ्गलैण्ड ने युद्ध में क्यों भाग लिया था। क्या इङ्गलैण्ड इतना उदार है, इतना दयालु है, कि वह केवल दूसरे देशों के रक्षार्थ अपना सारा धन, सारी शक्ति लगाने को तैयार हो जावेगा; और अपना फ़ायदा देखे बिना युद्ध में कूद पड़ेगा? कदापि नहीं, इङ्गलैण्ड एक व्यापार-प्रधान देश है; वहाँ की जनता आर्थिक प्रश्नों को जीवन का सब से प्रधान प्रश्न समझती है। प्रत्येक राजनैतिक, व्यापारिक सम्बन्ध को वह रुपए, आने, पाई के तराज़ू में तौलती है। ऐसे देश की सरकार में भला इतनी सात्विकता, इतनी उदारता कहाँ पाई जा सकती है। असल कारण तो यह था, कि युद्ध के कुछ समय पूर्व इङ्गलैण्ड तथा जर्मनी में बहुत बड़ी प्रतिस्पर्धा थी। अपनी नवीन औद्योगिक तथा व्यापारिक उन्नति द्वारा जर्मनी विलायती माल की बिक्री को घटा रहा था। वह अङ्गरेज़ी उपनिवेशों तक में अपना व्यापार बढ़ा रहा था। यह सब इङ्गलैण्ड भला चुपचाप बैठे हुए कैसे देख सकता था? वह तो एक मौक़ा ढूँढ़ रहा था कि युद्ध छिड़े और मैं इस देश की शक्ति का नाश करूँ। गत युद्ध ने उसे वह मौक़ा दिया। युद्ध में दोनों दलों ने ख़ूब नुक़सान उठाया, पर आख़िर में इङ्गलैण्ड की विजय हुई। सन्धि का अवसर आया। इङ्गलैण्ड को अब बदला निकालने का अच्छा मौक़ा मिला, उसने जर्मनी को ख़ूब कसा। उसके टुकड़े-टुकड़े कर दिए। उसके पक्षपाती राष्ट्रों के भी अङ्ग-भङ्ग कर डाले। युद्ध का नुक़सान देने का भार भी सारा जर्मनी के ऊपर रख दिया। पर फिर भी अपना ढोंग न छोड़ा। असल में तो "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली कहावत का अक्षरशः अनुकरण किया गया। पर फिर भी यह कहा गया कि "हम लोग तो न्याय के लिए लड़े थे। हम लोग इस युद्ध के लिए ज़िम्मेदार नहीं हैं। हम लोगों ने तो आक्रमणकारियों के अन्याय को रोकने के लिए युद्ध में भाग लिया था। इस युद्ध के लिए जर्मनी तथा उसके साथी ज़िम्मेदार हैं, इसलिए इस युद्ध से हमें जितनी हानि हुई है, वह सब इन लोगों से वसूल की जानी चाहिए।" जो शक्तिशाली है वह सब कुछ कर सकता है। जर्मनी को सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर करने पड़े। वह आगे युद्ध चला ही नहीं सकता था, क्या करता? युद्ध की सारी ज़िम्मेदारी उसके सिर पर रक्खी गई। वह यह भली-भाँति जानता था, कि यह ग़लत है, फिर भी क्या कर सकता था? उसने सारी शर्तें मान लीं!

यूरोप की किश्ती बारूद के ऊपर रक्खी है; बस एक चिनगारी की कसर है !!

आज १६ वर्ष के बाद जर्मनी की जनता यह देख रही है, कि अब वह अपने क्रूर विजेताओं के सामने गर्दन नहीं झुका सकती। वह इस सन्धि को मान कर प्रति वर्ष इतनी बड़ी आर्थिक हानि नहीं उठा सकती। आज जर्मनी की जनता अशान्त है। वह जर्मनी के आन्तरिक शासन में उस दल का साथ देने को तैयार है, जो सन्धि को रद्द कर देगा और उसकी अन्यायपूर्ण शर्तों का तिरस्कार करेगा।

इसी बीच में यूरोप के अन्य देशों में भी कुछ परिवर्तन हुआ। बड़े-बड़े राजनीतिज्ञ तथा इतिहास के आचार्यों ने इस प्रश्न का पूरी तरह से निरीक्षण किया। उससे सम्बन्ध रखने वाली सब समस्याओं का पूरी तौर से अध्ययन किया। उन्हें भी मालूम हुआ कि वारसाईल की सन्धि बिलकुल अन्यायपूर्ण सिद्धान्तों पर निर्धारित है। वे कहते हैं कि इस महायुद्ध की ज़िम्मेदारी केवल जर्मनी तथा उसके साथियों के सिर पर मढ़ना न्याय-सङ्गत नहीं है।

पर यदि इस युद्ध के लिए जर्मनी ज़िम्मेदार नहीं है, तो वह युद्ध-हानि का इतना बड़ा भाग क्यों देवे? प्रति वर्ष जर्मनी इतनी बड़ी आर्थिक हानि क्यों उठावे? जर्मनी का साम्राज्य स्थापित करने का तथा उपनिवेश बनाने का अधिकार क्यों दबा लिया जावे? फ़्रान्स के विद्वान राजनीतिज्ञ पॉनकारे ने सन् १९२० में स्वतः यह स्वीकार किया था कि "यदि यूरोप के मध्यस्थ राज्यों ने गत महा-युद्ध शुरू नहीं किया था, तो सारी युद्ध-हानि उनके सिर पर क्यों रक्खी जावे? यदि इस युद्ध के लिए सब राष्ट्र ज़िम्मेदार हैं, तो न्याय की दृष्टि से युद्ध-हानि का भार भी सब राष्ट्रों में बराबर-बराबर बाँटा जाना चाहिए।" इसी तरह "फ़िरेगो" ने भी कहा था कि "यदि गत युद्ध के लिए जर्मनी ज़िम्मेदार नहीं है तो वारसाईल की सन्धि अन्यायपूर्ण है।"

संसार की शान्ति के लिए यह आवश्यक है कि वारसाईल की सन्धि रद्द कर दी जावे। जर्मनी की जनता इस सन्धि के विरुद्ध आन्दोलन उठा रही है। यदि इस मौक़े पर सन्धि की शर्तों को बदलने का कोई प्रयत्न नहीं किया गया तो निराश होकर, उसे हथियार उठाने पड़ेंगे। अब यह कहना कि जर्मनी तथा उसके साथी क्या कर सकते हैं, उनकी क्या शक्ति है जो वे ब्रिटिश दल का सामना कर सकें, यह बिलकुल फ़िज़ूल है। अब यूरोप की राजनैतिक दशा में प्रतिदिन परिवर्तन होता जाता है। राजनैतिक सम्बन्ध भी, किसी भी दिन टूट सकते हैं। सम्भव है कि किसी समय यूरोप के कई शक्तिशाली राष्ट्र जर्मनी को सहायता देने को तैयार हो जावें। इटली की सरकार ने तो अपना रुख़ दिखा ही दिया है। वह चाहती है कि गत सन्धि की शर्तों में परिवर्तन कर दिया जावे। जब यह सन्धि अन्यायपूर्ण सिद्धान्तों पर निर्धारित है तो भला वह कितने दिनों तक चल सकती है। "बकरे की माँ कहाँ तक ख़ैर मनाएगी" एक न एक दिन तो यूरोप जर्मनी की दुखमय आवाज़ सुनने को तैयार हो जावेगा। इङ्गलैण्ड को चाहिए कि वह ऐसा मौक़ा आने के पहिले ही इस अन्यायपूर्ण सन्धि का अन्त कर दे। और एक नई सन्धि कर ले जिससे युद्ध की हानि केवल जर्मनी तथा उसके साथियों को नहीं, वरन गत युद्ध में भाग लेने वाले सब राष्ट्रों के सिर पर रक्खी जावे। यदि यह नहीं हुआ तो क्या होगा, यह आज यूरोप के सब राजनीतिज्ञ अच्छी तरह जानते हैं। हाल ही में जर्मनी का चुनाव ख़तम हुआ है। वहाँ की प्रजा ने यह साफ़ दिखला दिया है, कि हम उसी दल का साथ देने को तैयार हैं, जो वारसाईल की सन्धि और लीग ऑफ़ नेशन्स के विरुद्ध हैं। जर्मनी के साम्यवादी तथा फ़ैसिस्ट-दल यह करने को तैयार हैं और इस नए चुनाव में उनके प्रतिनिधियों की संख्या की आश्चर्यजनक उन्नति हुई है। इङ्गलैण्ड को अब सोच-समझ कर काम करना चाहिए। आजकल वह ऐसे ही अपनी सारी शक्तियाँ साम्राज्य की रक्षा में लगाए हुए है, क्या वह आज एक नवीन महायुद्ध के लिए तैयार है?

* * *

[श्री० 'इतिहास-कीट', एम० ए०]

(गताङ्क से आगे)

अङ्गरेज़ों के षड्यन्त्र

पूना के ब्राह्मणों ने यह सन्धि करके निश्चय ही यह आशा की होगी कि वे अपने नवीन विदेशी मित्र के साथ कुछ दिनों तक शान्तिपूर्वक रह सकेंगे; किन्तु इन्हें अपनी इस भयङ्कर मूर्खता का फल भोगना अभी शेष था। इस सन्धि की सूचना मिलते ही कम्पनी के डायरेक्टरों ने फ़ौरन वारन हेस्टिंग्स को लिख भेजा—

"We approve, under every circumstance, of the keeping of all the territories and possessions ceded to the Company by the treaty concluded with Raghoba; and direct that you forth with adopt such measures as may be necessary for their preservation and defence."*

अर्थात्—"हम सभी परिस्थितियों में उन सब प्रदेशों को अपने ही अधिकार में रखने के इच्छुक हैं, जो सूरत वाली सन्धि के अनुसार कम्पनी को मिले थे, और हम आपको आदेश देते हैं कि उन प्रदेशों को अपने क़ब्ज़े में रखने और उनकी रक्षा करने के लिए जिस उपाय के अवलम्बन की आवश्यकता हो, आप उसी उपाय से काम लें।"

इस प्रकार कम्पनी के डायरेक्टरों ने मानो वारन-हेस्टिंग्स को विश्वासघात करने का परवाना दे दिया। हेस्टिंग्स के लिए इतना इशारा काफ़ी था। उसने इस पत्र के मिलते ही पुरन्दर की सन्धि का उल्लङ्घन करना आरम्भ कर दिया। उसने न तो राघोबा को सहायता देना बन्द किया और न बसई का क़िला पेशवा-सरकार को वापस किया। एक ओर कम्पनी के कर्मचारी जहाँ इस प्रकार पेशवा-सरकार को धोखा दे रहे थे और उसके साथ शत्रुता का बर्ताव कर रहे थे, वहाँ दूसरी ओर वे पुरन्दर की सन्धि से लाभ उठाने से भी न चूके। उन्होंने पुराने षड्यन्त्रकारी मॉस्टिन को अपना दूत बना कर पुनः पूना-दरबार में भेजा। जिस मॉस्टिन ने मराठों में फूट उत्पन्न करके मराठा साम्राज्य के नाश का बीज बो दिया था, उसी मॉस्टिन के पुनः दरबार में भेजे जाने का पेशवा के मन्त्रियों ने घोर विरोध किया। किन्तु उनकी कौन सुनता था? कम्पनी के अधिकारी और कर्मचारी तो येन-केन-प्रकारेण मराठों का सर्वनाश करने पर ही तुले हुए थे। सन् १७७७ ई० के मार्च में मॉस्टिन पूना पहुँच गया।

इस बार मॉस्टिन को पूना-दरबार में फूट उत्पन्न करने में काफ़ी सफलता मिली। इसने पेशवा के एक मन्त्री मोरोबा को अपनी ओर मिला कर नाना फड़नवीस से उसकी लड़ाई करा दी; पेशवा के प्रधान-मन्त्री सखाराम बापू और फड़नवीस में भी फूट डलवा दी। इन सब झगड़ों ने इतना उग्र रूप धारण किया कि दरबार में नाना का पद मोरोबा को मिल गया और देश-भक्त नाना दरबार के कार्यों से उदासीन होकर पुरन्दर में रहने लगा। नाना की अनुपस्थिति में मोरोबा ने अङ्गरेज़ों से मिल कर तत्कालीन पेशवा के विरुद्ध षड्यन्त्र रचना आरम्भ किया। मोरोबा ने बम्बई-काउन्सिल को निमन्त्रण दिया कि आप राघोबा को, पेशवा बनाने के लिए शीघ्र पूना ले आइए। पूना के मन्त्रि-मण्डल को किसी प्रकार इस गुप्त षड्यन्त्र का पता लग गया। अब पेशवा के मन्त्रियों को अपनी भूल मालूम हुई। उन लोगों ने फ़ौरन मोरोबा को क़ैद कर लिया और नाना फड़नवीस को पुरन्दर से बुला कर पेशवा का प्रधान मन्त्री नियुक्त किया।

इस षड्यन्त्र में भी असफल होने पर वारेन हेस्टिंग्स ने दूसरी बार युद्ध की तैयारी शुरू की। उधर बम्बई, मद्रास और बङ्गाल में पूना पर आक्रमण करने के लिए सेनाएँ प्रस्तुत की जाने लगीं, इधर मॉस्टिन नाना फड़नवीस और उसके साथियों को विश्वास दिलाता रहा कि कम्पनी पुरन्दर की सन्धि को पूर्णतः पालन करना चाहती है और उसकी सभी शर्तें बहुत ही शीघ्र पूरी कर दी जाएँगी। सन् १७७८ ई० के मई मास में हेस्टिंग्स ने एक विशाल सेना कलकत्ते से पूना की ओर रवाना कर दी। इस सेना को भोसला, सिन्धिया, होलकर आदि कई भारतीय नरेशों के राज्यों से होकर गुज़रना था। हेस्टिंग्स ने बरार के राजा मूदाजी भोसला के पास एक दूत भेज कर उससे कहलवाया कि इस समय सतारा की गद्दी ख़ाली है। आप यदि हमारा प्रस्ताव स्वीकार करें तो हम अपनी पूरी शक्ति लगा कर आपको सतारा का समस्त राज्य और पेशवा का पद दिलवाने के लिए तैयार हैं। मूदाजी भोसला ने किसी कारणवश हेस्टिंग्स का यह प्रस्ताव तो स्वीकार न किया, किन्तु उसने बङ्गाल वाली सेना को अपने राज्य से होकर जाने की आज्ञा दे दी। अब हेस्टिंग्स को सिन्धिया और होलकर को धोखा देना बाक़ी रह गया। उसने इन दोनों को यह पट्टी पढ़ाई कि फ़्रान्सीसी सेना भारत के पश्चिमी समुद्र-तट पर आक्रमण करने वाली है। हम उसका सामना करने के लिए बङ्गाल से एक सेना भेज रहे हैं। आप लोग इस सेना को अपने राज्य से होकर जाने की आज्ञा दे दीजिए। सिन्धिया और होलकर दोनों फ़्रान्सीसी आक्रमण के धोखे में आ गए। उन लोगों ने हेस्टिंग्स की प्रार्थना स्वीकार कर ली। हेस्टिंग्स ने ठीक यही धोखा नाना फड़नवीस को भी देना चाहा, किन्तु दूरदर्शी नाना, हेस्टिंग्स के भुलावे में आने वाला व्यक्ति न था, उसने कम्पनी की सेना के आगे बढ़ने पर आपत्ति की, किन्तु हेस्टिंग्स ने इस पर कोई ध्यान नहीं दिया। जब नाना ने कम्पनी की सेना की गतिविधि पर अपनी आपत्ति का कोई प्रभाव होता हुआ न देखा, तो विवश होकर युद्ध की तैयारी शुरू कर दी।

एक ओर से बङ्गाल की सेना शीघ्रतापूर्वक पूना की ओर बढ़ी आ रही थी, दूसरी ओर से बम्बई-काउन्सिल ने राघोबा के साथ एक विशाल सेना पूना पर आक्रमण करने के लिए रवाना कर दी। नाना भी असावधान न था। उसके गुप्तचरों का सङ्गठन इतना मज़बूत था कि पूना में बैठे ही बैठे उसे समस्त भारत की राजनीतिक अवस्था के सच्चे समाचार मिला करते थे। उस समय सिन्धिया और होलकर पूना में थे। नाना ने उन दोनों को बम्बई वाली सेना का मुक़ाबला करने के लिए भेजा। तलेगाँव में लड़ाई हुई। अङ्गरेज़ लोग बुरी तरह हारे और मराठों से सन्धि करके बम्बई वापस लौट गए। तलेगाँव की सन्धि में यह तय हुआ कि अङ्गरेज़ लोग अविलम्ब राघोबा को पूना-दरबार के हाथों में समर्पित कर देंगे, भड़ोच, सूरत आदि मराठों के जितने प्रदेशों पर कम्पनी ने क़ब्ज़ा जमा रक्खा है, उन सबको शीघ्र पेशवा-सरकार को वापस कर देंगे और बङ्गाल से जो सेना पूना की ओर बढ़ी आ रही है, उसे वापस लौट जाने का सन्देश भेज देंगे। अङ्गरेज़ों ने राघोबा को उसी समय मराठों के हवाले कर दिया और दो अङ्गरेज़ अफ़सरों को इस सन्धि की शर्तों के पूरी किए जाने के समय तक के लिए मराठों के पास बन्धक रख दिया। नाना फड़नवीस ने राघोबा और दोनों अङ्गरेज़ अफ़सरों को माधोजी सिन्धिया के ज़िम्मे कर दिया।

झूठ बोलना और धोखा देना कम्पनी के कर्मचारियों का परम प्रिय व्यवसाय था। बम्बई पहुँचते ही अङ्गरेज़ों ने बङ्गाल वाली सेना के नाम पत्र भेजा कि आप लोग जितना शीघ्र हो सके, बम्बई पहुँचने की चेष्टा कीजिए। वारेन हेस्टिंग्स को जब बम्बई वाली सेना की अपमान-जनक पराजय का पता लगा, तो उसने उसी समय बङ्गाल वाली सेना के सेनापति कर्नल गॉडर्ड को पत्र लिखा कि आप तलेगाँव की सन्धि की कुछ भी परवा न कीजिए और सीधे आगे बढ़ते चले जाइए। कर्नल गॉडर्ड ने पेशवा-दरबार को विश्वास दिलाया कि हमारा उद्देश्य पेशवा-सरकार से लड़ना नहीं है, हम तो पेशवा के मित्र हैं। हम केवल फ़्रान्सीसियों का सामना करने के लिए आगे बढ़ रहे हैं। किन्तु नाना फड़नवीस ऐसी मीठी बातों के धोखे में आ जाने वाला नीतिज्ञ न था। जब उसने देख लिया कि कर्नल गॉडर्ड किसी तरह नहीं मानता और आगे बढ़ता ही चला आ रहा है, तो उसने माधोजी सिन्धिया को अङ्गरेज़ों का सामना करने के लिए गुजरात की ओर रवाना किया और मूदाजी भोसला को आज्ञा दी कि तुम तीस हज़ार सेना लेकर फ़ौरन बङ्गाल पर चढ़ाई कर दो। निस्सन्देह नाना के उपाय आसन्न-विपत्ति को मार भगाने के लिए बहुत ही प्रबल थे; किन्तु नाना को पता नहीं था कि स्वार्थ-परता और विश्वासघात-रूपी रोग के कीटाणु मराठा-साम्राज्य की जीवनी-शक्तियों को निर्बल और मृतप्राय बना चुके हैं।

सिन्धिया और भोसला का विश्वासघात

मूदाजी भोसला एक प्रकार से पहले ही से वारेन हेस्टिंग्स के साथ मिल गया था। उसने बङ्गाल वाली सेना के वास्तविक उद्देश्य को जानते हुए भी उसे अपने राज्य से होकर जाने की आज्ञा दे दी थी। जब नाना ने मूदाजी भोसला को बङ्गाल पर आक्रमण करने की आज्ञा दी तो मूदाजी नाना फड़नवीस को धोखे में रखने के लिए तीस हज़ार सेना लेकर बङ्गाल की ओर बढ़ा तो अवश्य, पर उसने वारेन हेस्टिंग्स को पहले ही एक गुप्त पत्र लिख दिया कि—"मैं यह आक्रमण केवल नाना फड़नवीस और अन्य मराठों को प्रसन्न रखने के लिए कर रहा हूँ। यह आक्रमण केवल दिखावा-मात्र है। मैं मार्ग में ही जान-बूझ कर इतनी देरी लगा दूँगा कि वर्षा-काल के पहले किसी तरह बङ्गाल की सीमा तक न पहुँच सकूँ, और उसके बाद बरसात का

* Letter of the Court of Directors to the Government of Bengal, as quoted in Mill's *History of British India*.

बहाना करके बरार वापस लौट आऊँगा।" मूधाजी के आचरण के सम्बन्ध में इतना लिख देना ही यथेष्ट है कि उसने वारेन हेस्टिंग्स के साथ अपने वचन का अक्षरशः पालन किया। मूदाजी ने अपने देश को धोखा दिया; किन्तु विदेशियों के साथ उसने पूर्ण सच्चाई का व्यवहार किया।

अब माधोजी सिन्धिया का हाल भी सुनिए। माधोजी और अङ्गरेज़ों के बीच तलेगाँव में ही एक गुप्त सन्धि हो चुकी थी, जिसमें तय पाया था कि अङ्गरेज़ लोग माधोजी सिन्धिया को प्रकारान्तर से पेशवा के सब अधिकार दिला देंगे और उसे भड़ोच का ज़िला दे देंगे तथा उसके आदमियों को नक़द ४१ हज़ार रुपए देंगे। इसके अतिरिक्त अङ्गरेज़ों ने माधोजी से यह भी प्रतिज्ञा की कि वे उसके लिए यूरोपियन ढङ्ग की, और यूरोपियन अस्त्र-शस्त्रों से सुसज्जित एक बहुत बड़ी सेना का प्रबन्ध कर देंगे, जिसके द्वारा थोड़े ही दिनों में माधोजी का प्रभाव समस्त भारत में प्रबल हो जायगा। इन प्रलोभनों में फँस कर माधोजी ने देश के प्रति अपने पवित्र कर्त्तव्य की अवहेलना की और राघोबा तथा दो अङ्गरेज़ बन्धकों को छोड़ दिया। इसके बाद माधोजी ने केवल दिखावे के लिए नाना फड़नवीस की आज्ञा मान कर गुजरात की ओर प्रस्थान किया, परन्तु वहाँ पहुँच कर अङ्गरेज़ों पर आक्रमण नहीं किया। गॉडर्ड की सेना गुजरात में पेशवा के प्रदेशों को मनमाने ढङ्ग से लूट रही थी और प्रजा को तबाह कर रही थी, किन्तु माधोजी इन रोमाञ्चकारी अत्याचारों को अपनी आँखों से देखते हुए भी अकर्मण्य की भाँति चुपचाप बैठ कर अपने शिविर में आराम करता रहा। वह स्वयं इस बात की फ़िक्र में था कि अङ्गरेज़ों के साथ मिल कर पूना पर आक्रमण करें और नाबालिग़ पेशवा को अपने क़ब्ज़े में कर लें।

कर्नल गॉडर्ड इस समय सूरत में बैठा हुआ एक ओर पूना पर आक्रमण करने की तैयारियाँ कर रहा था, दूसरी ओर नाना फड़नवीस के पास सन्धि के लिए पैग़ाम पर पैग़ाम भेज रहा था। नाना ने स्पष्ट शब्दों में गॉडर्ड को लिख भेजा कि सन्धि के सम्बन्ध में किसी भी प्रकार की बातचीत होने के पहले अङ्गरेज़ों को पिछली सन्धि के अनुसार साष्टी का द्वीप और विद्रोही राघोबा को पेशवा-दरबार के हवाले कर देना होगा। किन्तु यह सब बातचीत केवल नाना को धोखा देने के लिए थी। जिस समय कर्नल गॉडर्ड की तैयारियाँ पूरी हो गईं, उसी समय उसने मराठों पर आक्रमण कर दिया। सब से पहले उसने अपने प्यारे मित्र माधोजी सिन्धिया पर एक दिन अचानक आक्रमण करके अपनी निष्कपट मित्रता का परिचय दिया! इस समय तक माधोजी से कर्नल गॉडर्ड का काम निकल चुका था। अब उसने माधोजी को अपने रास्ते से साफ़ कर देना ही उचित समझा। माधोजी की सेना लड़ने के लिए सावधान न थी; वह बात की बात में तितर-बितर हो गई। माधोजी जान बचा कर गुजरात से भागा। इस प्रकार माधोजी को देशद्रोह का उचित पुरस्कार देने के बाद कर्नल गॉडर्ड आगे बढ़ा। अब उसके लिए केवल पूना पर आक्रमण करना बाक़ी रह गया था।

नाना फड़नवीस का विराट् प्रयत्न

यह विपज्जनक परिस्थिति किसी भी साहसी सेनापति या कुशल राजनीतिज्ञ की हिम्मत तोड़ देने के लिए काफ़ी थी; किन्तु नाना फड़नवीस की कठिनाइयाँ जितनी ही बढ़ती जाती थीं, उसका प्रयत्न उतना ही विराट् रूप धारण करता जाता था। जब नाना फड़नवीस को माधोजी सिन्धिया के विश्वासघात और गॉडर्ड के घातक इरादों का पता चला, तो वह लेश-मात्र भी हतोत्साह या निराश न हुआ; बल्कि उसने समस्त भारत के प्रभावशाली नरेशों और नवाबों को अङ्गरेज़ों के विरुद्ध सङ्गठित करने का महान प्रयत्न आरम्भ किया। नाना ने ६ मई, सन् १७८० ई० को दिल्ली-सम्राट् के नाम एक पत्र में लिखा :—

"इन टोपी वालों (यूरोपियनों) के व्यवहार चालाकी और बेईमानी से भरे होते हैं। इनकी चाल यह है कि पहले तो ये किसी भारतीय नरेश को प्रसन्न करते हैं। उसे अपने साथ सन्धि करने के लाभ दिखाते हैं, और अन्त में उसे क़ैद करके स्वयं उसके राज्य पर अधिकार कर बैठते हैं। उदाहरण के लिए शुजाउद्दौला, मोहम्मदअली ख़ाँ, अरकाट के प्रान्त और तञ्जोर के नरेश इत्यादि की दशा देख लीजिए। अतः इन टोपी वालों का दमन करना आपका कर्त्तव्य है। केवल मात्र इसी उपाय से भारतीय नरेशों के सम्मान की रक्षा हो सकती है; अन्यथा विदेशी टोपी वाले इस देश के सभी राज्यों को हड़प लेंगे और समस्त देश को अपने क़ब्ज़े में कर लेंगे। ऐसा होना अच्छा नहीं है; यह भविष्य में सभी नरेशों के लिए घातक सिद्ध होगा। सम्राट समस्त पृथ्वी के स्वामी हैं। अतः यह सर्वथा उचित है कि सम्राट इस मामले की ओर ध्यान देना अपना पवित्र कर्त्तव्य समझें। दक्षिण के सब नरेश आपस में मिल गए हैं। नवाब, निज़ामअली ख़ाँ, हैदर नायक और पेशवा—इन चारों में सन्धि हो गई है; इन्होंने चारों ओर से अङ्गरेज़ों का दमन करने का निश्चय कर लिया है और अपने-अपने राज्य में अङ्गरेज़ों से युद्ध करने के लिए सेना, तोपख़ाना और अस्त्र-शस्त्र का प्रबन्ध भी कर लिया है।

"उत्तर भारत में सम्राट और नजफ़ ख़ाँ को चाहिए कि वे सब राजाओं को मिला कर अङ्गरेज़ों का दमन करें। इससे साम्राज्य की कीर्त्ति और प्रतिष्ठा दोनों की वृद्धि होगी।"

नाना ने इसी आशय के पत्र दक्षिण भारत के प्रायः समस्त छोटे-बड़े नरेशों को लिख कर उन्हें अङ्गरेज़ों के विरुद्ध एक सङ्घ में आबद्ध होने का आह्वान् किया। इस महान कार्य में नाना को अभूतपूर्व सफलता मिली। जैसा कि उपरोक्त पत्र से प्रकट है, हैदराबाद के निज़ाम, मैसूर के सुलतान हैदरअली और पेशवा-दरबार में आपस में यह बात तय हो गई कि वे लोग एक साथ अपने-अपने राज्य के समीपवर्ती अङ्गरेज़ी प्रान्तों पर आक्रमण करके अङ्गरेज़ों को भारतवर्ष से बाहर निकाल दें। निस्सन्देह नाना अपने समय का एक ही राजनीतिज्ञ था। वह जितना ही देशभक्त था, उतना ही दूरदर्शी और नीतिकुशल।

माधोजी सिन्धिया की शक्ति का छलपूर्वक नाश करने के बाद कर्नल गॉडर्ड अपनी विशाल सेना सहित पूना की ओर बढ़ा। रास्ते में उसने पेशवा के प्रदेशों को जी भर कर लूटा और प्रजा को तबाह किया। पूना से कुछ दूर भोरघाट तक पहुँचते-पहुँचते हरिपन्त फड़के, परशुराम भाऊ और होलकर की सेनाओं ने आगे बढ़ कर उसे घेर लिया। एक घमासान युद्ध के पश्चात विजय-लक्ष्मी ने इस बार भी मराठों का ही साथ दिया। अङ्गरेज़ों को जान और माल दोनों की भारी हानि उठा कर बम्बई की ओर भागना पड़ा।

वारेन हेस्टिंग्स को जब यह समाचार मालूम हुआ कि नाना फड़नवीस, निज़ाम और हैदरअली में अङ्गरेज़ों के विरुद्ध एक सन्धि हो गई है, तो उसने फ़ौरन इस सङ्घ में फूट डालने का प्रयत्न आरम्भ कर दिया। मूदाजी भोसला के विश्वासघात के कारण बङ्गाल पर मराठों का आक्रमण किस प्रकार विफल हो चुका था—इसका वर्णन पहले ही हो चुका है। अब अङ्गरेज़ों के दो प्रबल विरोधी निज़ाम और हैदरअली रह गए थे। इनमें से भी हेस्टिंग्स ने निज़ाम को अपनी ओर फोड़ लिया, किन्तु हैदरअली के साथ उसकी एक भी चाल सफल नहीं हो सकी। हैदर ने नाना का सन्देश पाते ही अङ्गरेज़ों के साथ युद्ध छेड़ दिया। अङ्गरेज़ हार पर हार खाने लगे।

सालबाई की सन्धि

उधर कर्नल गॉडर्ड की लज्जाजनक पराजय, इधर वीर हैदरअली के भयानक हमले—दोनों ने मिल कर वारेन हेस्टिंग्स की हिम्मत तोड़ दी। वह निराश हो गया। घबराहट और भय से व्याकुल होकर हेस्टिंग्स ने पेशवा-दरबार से सन्धि की प्रार्थना की। १३ अक्टूबर सन् १७८१ ई० को वारेन हेस्टिंग्स ने पुनः माधोजी सिन्धिया से एक गुप्त सन्धि की और उसके द्वारा नाना फड़नवीस से सन्धि की बातचीत आरम्भ की। ११ सितम्बर सन् १७८१ ई० को मद्रास-काउन्सिल ने भी हैदर के हमलों से त्रस्त होकर बड़ी नम्रतापूर्वक नाना से सन्धि की प्रार्थना की। इसके पहले अङ्गरेज़ लोग पुरन्दर और तलेगाँव में दो बार मराठों से सन्धि करके दोनों सन्धियों को जान-बूझ कर भङ्ग कर चुके थे। किन्तु लज्जित होना कम्पनी के कर्मचारियों को शायद मालूम न था! इस बार मद्रास-काउन्सिल ने पेशवा-दरबार से सन्धि की प्रार्थना करते हुए बड़ी निर्लज्जतापूर्वक ईश्वर, ईसामसीह, इङ्गलैण्ड के सम्राट, अङ्गरेज़ जाति और कम्पनी—पाँचों की शपथ खाकर प्रतिज्ञा की और विश्वास दिलाया कि इस बार हम जो सन्धि करेंगे, उसका कभी उल्लङ्घन न करेंगे और उसकी सभी शर्तों का यथावत् पालन करेंगे। कई महीनों के पत्र-व्यवहार के बाद १७ मई सन् १७८२ ई० को सालबाई नामक स्थान पर पूना-दरबार और कम्पनी के बीच तीसरी बार सन्धि हुई, जिसमें यह तय पाया कि प्रारम्भ से लेकर अब तक छल से अथवा बल से कम्पनी ने पेशवा के जितने प्रदेशों पर अधिकार कर लिया है, वे सब प्रदेश पेशवा को वापस कर दिए जायँगे। गायकवाड़ का राज्य ठीक उसी अवस्था में रक्खा गया, जिस अवस्था में वह अङ्गरेज़ों के गुजरात में घुसने के पहले था। राघोबा को २५ हज़ार रुपए मासिक पेन्शन देकर एक स्थान पर रहने की आज्ञा दी गई। कैप्टेन पोफ़म ने माधोजी सिन्धिया की राजधानी ग्वालियर को जीत कर उसे गोहद के राना को दे दिया था। इसके बदले राना ने कम्पनी से मित्रता कर ली थी। सालबाई की सन्धि के अनुसार माधोजी सिन्धिया के उक्त सभी प्रदेश गोहद के राना से वापस दिला दिए गए।

सन्धि की शर्तें तो तय हो गईं; पर नाना फड़नवीस ने सात महीने बाद तक सन्धि-पत्र पर हस्ताक्षर न किया। इसका कारण यह था कि नाना का सच्चा मित्र और कम्पनी का पक्का शत्रु हैदरअली अभी तक अङ्गरेज़ों का मूलोच्छेद करने में निरत था। ऐसी अवस्था में यदि नाना अङ्गरेज़ों से सन्धि कर लेता, तो उसका यह कार्य हैदरअली के साथ घोर विश्वासघात करना होता। नाना अभी तक निराश नहीं हुआ था। वह हैदरअली के बल पर अभी भी भारत को स्वतन्त्र करने की आशा लगाए बैठा था। वीर हैदरअली प्रान्त पर प्रान्त और गढ़ पर गढ़ जीतता चला जा रहा था और पूना में बैठा हुआ नाना उत्सुक हृदय से उसकी विजयों के समाचार सुन रहा था। अचानक सन् १७८२ ई० के दिसम्बर में नाना को समाचार मिला कि अरकाट के क़िले में हैदरअली की मृत्यु हो गई। यह समाचार सुन कर नाना की क्या अवस्था हुई होगी, यह अनुमान करने का विषय है; लिखने का नहीं। गायकवाड़, सिन्धिया, भोसला आदि समस्त आत्मीय जनों द्वारा छले जाकर नाना की सारी आशाएँ एक-मात्र हैदरअली में ही केन्द्रित होकर भारतीय स्वतन्त्रता का सुख-स्वप्न देख रही थीं; किन्तु वह स्वप्न भी अकाल में ही भङ्ग हो गया। हैदरअली अपने जीवन का परम प्रिय उद्देश्य—दक्षिण भारत से अङ्गरेज़ों

(शेष मैटर ३४वें पृष्ठ के पहिले कॉलम के नीचे देखिए)

स्त्रियों का ओज

दुर्गाधिकारिणी

[लेखक—???]

"यह कोलाहल कैसा है महारानी"

"महाराज, दुर्ग भङ्ग होना चाहता है"

"क्या प्राचीर के भीतर शत्रु आ चुके ?"

"हाँ महाराज !"

"हमारी सेना कितनी अवशिष्ट है ?"

"केवल १०० वीर शेष बचे हैं"

"सेनापति को बुलाओ"

"सेनापति काम आए"

"इस समय दुर्गाध्यक्ष कौन है ?"

"मैं"

"ओह, कोलाहल बढ़ रहा है"

(एक सैनिक का प्रवेश)

"महाराज की जय हो—द्वार भग्न हो गया—शत्रु इधर ही आ रहे हैं ।"

"महारानी, मुझे सहारा देकर उठाओ । मैं युद्ध करूँगा ।"

"महाराज, आपके शरीर पर असंख्य घाव हैं, राजवैद्य की आज्ञा नहीं ।"

"राजवैद्य को अभी बुलाया जाय ।"

(राजवैद्य उपस्थित होते हैं)

"राजवैद्य, मैं अभी युद्ध के लिए सज्जित होना चाहता हूँ ।"

"महाराज, यह असम्भव है"

"नहीं, इसे सम्भव करो"

"महाराज, आपके शरीर पर ८० घाव हैं, जिनमें ८ मर्मान्तक हैं ।"

"खेद है, तब क्या मैं शत्रु का बन्दी हूँगा ? महारानी ?"

"महाराज !"

"क्या मैं बन्दी हूँगा"

"महाराज, यह असम्भव है"

(सेवक—प्रवेश करके)

"जय राजमाता की—पालकी और सैनिक प्रस्तुत हैं ।"

"अच्छा, कुल कितने सैनिक शेष हैं ?"

"केवल ७० शेष हैं"

"बहुत अच्छा, ५० सैनिक दुर्ग की रक्षा करें और शेष २० हमारे साथ चलें । महाराज ! आप पालकी में सवार हूजिए ।"

"यह क्या महारानी, क्या प्राण रहते मैं पलायन करूँगा ?"

"महाराज, पतङ्गे की भाँति मरने से क्या लाभ ? वीरों की भाँति मरने का भी समय आएगा ।"

"महारानी, मैं मानूँगा नहीं, तुम पालकी में बैठ कर चली जाओ ।"

"महाराज, क्या इसी अशक्त और घायल अवस्था में बन्दी होंगे ?"

"हाय, महारानी, इस अपमान से बचने का कोई उपाय नहीं ।"

"महाराज, आप पालकी में सवार हों, विलम्ब का समय नहीं ।"

"परन्तु .... "

"महाराज, मैं दुर्ग-रक्षक के पद पर हूँ, मेरा पद वापस लीजिए ।"

"नहीं महारानी !"

"तब मेरी आज्ञा मानिए"

"एक शर्त पर दुर्ग-स्वामिनी !"

"वह क्या ?"

"मैं जीवित बन्दी न होने पाऊँ"

"महाराज को बन्दी करने की सामर्थ्य किसी में नहीं । उठिए रामरत्न !"

"महारानी !"

"महाराज को पालकी में लिटाओ । मेरा घोड़ा लाओ, २० सैनिकों का मैं सञ्चालन करूँगी, शीघ्रता करो, शत्रु आ चुके ।"

"जो आज्ञा, गुसइयाँ सुरक्षित हैं"

"तब चलो"

२

"महारानी, मालूम होता है, शत्रु पीछा कर रहे हैं, घोड़ों की टाप कैसी है ?"

"महाराज निश्चिन्त रहें—शत्रु आपका चरण छू नहीं सकेंगे ।"

"महारानी, वह शत्रुओं की हुङ्कार सुनो"

"सुनती हूँ, रामरत्न ?"

"महारानी"

"१० वीर यहीं रुक कर शत्रु-दल का मुक़ाबला करेंगे, शेष १० वीर पालकी के साथ बढ़ेंगे । पालकी के साथ मैं जाऊँगी । शेष दस वीरों के नायक तुम हो ।"

"जो आज्ञा स्वामिनी"

"महारानी, शत्रु फिर आ रहे हैं, उनकी चीत्कार सुनती हो ?"

"सुनती हूँ महाराज ! वाहको, पालकी तेज़ ले चलो ।"

"महारानी, मैं बन्दी न होने पाऊँ ?"

"कदापि नहीं स्वामी !"

"केवल १० रक्षक शेष हैं"

"और मैं भी उपस्थित हूँ महाराज, धीरज से लेटे रहिए ।"

"नहीं, महारानी, मेरी तलवार लाओ—मैं युद्ध करूँगा"

"ओह, स्वामिन, पेट के सब टाँके टूट गए—घाव बह गए—आप लेटे रहिए । वीरसिंह !"

"महारानी !"

"शत्रु आ पहुँचे—सावधान !"

"जो आज्ञा !"

"तुम छः वीरों को यहीं रह कर शत्रु को रोकना है, शेष चार पालकी के साथ चलेंगे । वाहको, क्या अधिक तेज़ नहीं चल सकते ?"

"महारानी, हम प्राण पर खेल कर भाग रहे हैं, मार्ग ख़राब और रात अँधेरी है ।"

"महाराज !"

"महारानी!"

"अब आगे पालकी बढ़ना असम्भव है ।"

"तब क्या मैं बन्दी हूँगा ? नहीं महारानी, यह नहीं होगा ।"

"नहीं स्वामी, आप बन्दी न होंगे !"

"तब ?"

"आप देखिए, मैं आपके मान-पद-गौरव की रक्षिका हूँ ।"

"जयसिंह, पालकी रोक लो । और लौट कर खड़े हो जाओ !"

"जो आज्ञा महारानी !"

"तलवारें सूत लो !"

"महारानी की जय हो !"

"दो-दो आदमी आगे बढ़ो"

"जो आज्ञा महारानी"

"महारानी"

"महाराज"

"अब कितने योद्धा बचे हैं ?"

"केवल दो, तीसरी मैं"

"आह, मेरे सम्मान की रक्षा कैसे होगी !"

"महाराजा उद्विग्न न हों । (कटार निकालती है)

"स्वामी"

"क्या प्रतिष्ठा प्राणों से बढ़ कर नहीं ?"

"सब से बढ़ कर प्रिये !"

"महाराज, प्राणनाथ, मैं उसकी रक्षा के लिए कठोर कर्म करूँगी, मैं क्षत्रिय महिला हूँ ।"

"महारानी, मेरी प्रतिष्ठा भङ्ग न हो"

"महाराज, अन्तिम वीर गिरा (आगे बढ़ कर) स्वामी, मैं क्षण भर ठहर कर आऊँगी—दासी के स्नेह से परिपूर्ण अपना वक्षस्थल सीधा कीजिए ।"

(राजा की छाती में कटार घुसेड़ देती है)

"शत्रुओ ! तुम महाराज को बन्दी नहीं कर सकते"

"महारानी को आदाब, क्या आपने अपने हाथ से महाराज का वध किया ?"

"हाँ, महाराज की प्रतिष्ठा की रक्षा के लिए । अब मेरा अन्तिम कर्म देखो । तुममें कोई एक वीर मुझसे युद्ध करने को प्रस्तुत है ?"

"नहीं महारानी, आपसे हमें कुछ शत्रुता नहीं"

"तुम्हारे साथ कोई ब्राह्मण है ?"

"नहीं"

"हिन्दू है ?"

"नहीं"

"तुममें मनुष्यत्व है ?"

"महारानी, युद्ध के नियम कठोर हैं—परन्तु आप आज्ञा कीजिए ।"

(शेष मैटर ३५वें पृष्ठ के पहले कॉलम के नीचे देखिए)

(३२वें पृष्ठ का शेषांश)

का अस्तित्व मिटा देना—लगभग पूर्ण कर चुका था ; किन्तु यज्ञ की पूर्णाहुति होने के पहले ही काल ने उसको बोला दे दिया । हैदरअली की मृत्यु के साथ ही साथ अङ्गरेज़ों को भारत से निकाल भगाने की नाना की रही-सही आशा भी नष्ट हो गई । विवश होकर नाना ने सालबाई की सन्धि पर हस्ताक्षर कर दिया ।

इस प्रकार प्रथम मराठा युद्ध का अन्त हुआ । इस युद्ध ने अङ्गरेज़ों की धोखेबाज़ी, उनकी कपटपूर्ण नीति और केवल उल्लङ्घन करने के लिए ही की हुई उनकी सन्धियों का रहस्य खोल कर मराठे सरदारों और भारतीय नरेशों की आँखों के सामने रख दिया ; किन्तु जिस प्रकार अब तक घटित होने वाली अनेक राजनीतिक घटनाओं के वास्तविक महत्व को भारतीय राजे नहीं समझ सके थे, उसी प्रकार उन्होंने इस युद्ध से भी कोई विशेष शिक्षा नहीं ग्रहण की । इसके बाद मराठा-इतिहास के साथ ही साथ नाना फड़नवीस के जीवन का एक नवीन अध्याय आरम्भ होता है, जिसका वर्णन अगले अङ्क में किया जायगा ।

(क्रमशः)

['चाँद' के हिन्दी संस्करण से उद्धृत]

* * *

अजी सम्पादक जी महाराज,

जय राम जी की !

आप तो पत्रोत्तर में ज़रा देरी होते ही, मारे तक़ाज़ों के नाक में दम कर देते हैं। पर यहाँ तो लॉर्ड इर्विन की जवाई का हाल सुन कर अपने राम का नशा ही हिरन हो गया ! क्या ख़ूब आदमी थे। देखिए चलते-चलाते भी आप लोगों को नहीं भूले; भूलते भी कैसे ? आप लोगों से इन्हें सदा प्रेम रहा है। समय-समय पर "प्रेस-ऑर्डिनेन्सों" द्वारा आप लोगों की बराबर मिज़ाज-पुर्सी कर ही ली जाती थी। मगर इस बार जैसा तोहफ़ा आप लोगों को दिया गया है, इस क़द्रदानी पर अपने राम तो मस्त हो गए ! सुबह से दो बार छान चुका हूँ, तीसरी बार रगड़ने जा ही रहा था, कि आप का प्रेम-पत्र मिला ! क्यों न हो, एक तो पुराना प्रेम, उस पर 'बिछुड़न की घड़ियाँ' तीसरे बड़े दिन का अवसर ! बड़ा दिन तो आप जानते ही हैं, कितना मुबारक-दिन होता है ! ऐसे शुभ अवसर पर न जाने कितनों को मिठाई, कम्बल, तरह-तरह के इनाम और भेंट इत्यादि मिला करते हैं। मगर आपको इस उपलक्ष में क्या मिलेगा, यही एक बड़ी कठिन समस्या थी जो बड़े-बड़े ज्ञानियों, नजूमियों और ज्योतिषियों से भी हल न हो सकी थी। सच जानिए सम्पादक जी ! इसमें पसेरी भर भी झूठ नहीं है, कि अपने राम को इसकी चिन्ता ने ऐसा घनचक्कर बना दिया था कि एक दिन अपने राम आधी रात को सीधे पण्डित भविष्य-दर्शक दत्तात्रेय के द्वार पर जा धमके और पण्डित जी को जगा कर उसी वक़्त आपका इनाम विचरवाया। उनके ज्योतिष में निकला कि "लड़का होगा।"

भई वाह ! ज्योतिष भी अजब औंधी चीज़ है। "पूछी ज़मीं की, कही आसमान की !" इसलिए इस पर अब विश्वास करके दिमाग़ पिच्ची करना बेकार था। निराश लौट ही रहा था, कि रास्ते में एक राजनैतिक ज्ञानी महोदय से टकरा गया ! उनसे समस्या हल करवाई तो उन्होंने बताया कि "लाट-साहब इस बड़े दिन के शुभ अवसर पर स्वराज्य का उपहार देंगे।" क्या ख़ूब ! अच्छी उड़ाई !! स्वराज्य का उपहार खण्ड-खण्ड करके भला किस तरह बाँटा जा सकता है, आपही कहिए ?

कुछ और दूर बढ़ा, तो एक मारवाड़ी बज़ाज से मुठभेड़ हो गई। "जै गोपाल" के बाद मालूम हुआ कि धरना देने वालों के डर से वह रात में विलायती माल न घूम-घूम कर बेचते हैं ! और इसी तिकड़म में वे "निस अँधियारी" में निकले थे ! तरकीब तो अच्छी है; मगर उनकी बुद्धि की बलिहारी, कि उन्होंने मुझे भी ऐसे माल का लुक-छिप कर लेने वाला कोई गाहक समझा ! इसलिए उनसे जान छुड़ानी मुश्किल हो गई !! वह चुपके से अपना माल दिखाने और रुपए पीछे सिर्फ़ पौने तीन आने मुनाफ़ा लेने का वचन देकर, अपने साथ ले चलने के लिए हठ पर हठ—हठ पर हठ करने लगे ! तब अपने राम ने घबड़ा कर कहा कृपा-निधान ! किसी और को फाँसिए अपने राम तो इस बात का पता लगाने निकले थे, कि इस बड़े दिन के अवसर पर लाट-साहब हमारे सम्पादक जी को कौन सा उपहार देंगे। मेरी किरकिरी बात सुन कर सेठ जी बड़ी व्यग्रता से बोले—"आहा ! तुम नहीं जानते ? साढ़े दस हज़ार वलायती थान हमारी दूकान से लिए गए हैं, उसी का एक-एक कोट इनाम में बाँटा जाएगा ! इसी से कहता हूँ, चलो उसी कपड़े का तुम भी एक सिलवा लो।" बड़ी ख़ैरियत हो गई सम्पादक जी, कि किसी जूते वाले से मुलाक़ात नहीं हुई, वरना यही हाल था तो वह भी अपनी ही ऐसी कहता !
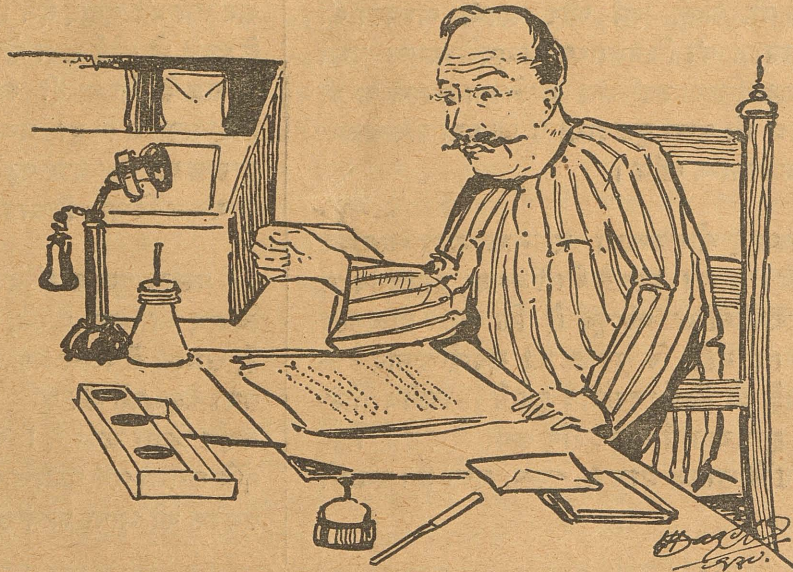
पत्र-सम्पादक—या अल्लाह ! यह एक बकरा कहाँ-कहाँ हलाल होगा ?
न जाने किस समय प्रेस-ऑर्डिनेन्स रूपी शैतान आ धमके !!

मरता-खपता घर पहुँचा, तो लल्ला की महतारी पाजामे से बाहर मिलीं। उनका हाल कुछ न पूछिए। उन्हें ऐसा नशा चढ़ा था, कि उन्होंने पहिले तो मुझे चोर समझ कर मेरी आवभगत की। बिना द्वार खोले ही आँगन में ऐसी चिल्ल-पों मचाई कि सारा मुहल्ला मेरे द्वार पर डण्डा ले-लेकर फट पड़ा ! किसी तरह घर में पहुँच हुई, तो "रात-रात भर बाहर घूमने" के विरोध में लल्ला की महतारी की कर्कश रागनी जो आरम्भ हुई, तो सुबह तक वह अपने सम पर ही नहीं पहुँची ! उस समय अपने राम बारम्बार यही प्रार्थना करते रहे, कि हे ईश्वर ! हमारे बड़े लाट-साहब को ऐसी सुबुद्धि दो, कि वह चलते-चलते कोई ऐसा क़ानून बना दें, (यदि क़ानून बनाने की क्षमता न हो, तो एक ऑर्डिनेन्स ही पास करते जायँ) जिससे लल्ला की महतारी की ज़बान एकदम बन्द हो जाए !

लेकिन सम्पादक जी ! विश्वास नहीं होता, कि लाट-साहब दूबे जी की इस विनम्र प्रार्थना पर ध्यान देंगे और यदि वे ऑर्डिनेन्स पास कर भी दें, तो इसका फल कुछ होगा भी, मुझे इस बात का बड़ा दगदगा है ! सम्पादक जी, सच जानिए, लल्ला की महतारी की ज़बान ठीक उसी तरह चलती है, जिस तरह आपकी 'दईमारी' लेखनी !! यदि आप प्रेस-ऑर्डिनेन्स का तिरस्कार कर जेल जायँ, तो वह अपनी जिह्वा-रूपी कतरनी की रक्षार्थ जेल जाने को तैयार है !

हाँ, तो सम्पादक जी, अपने राम की तो स्पष्ट-सम्मति है कि लगाइए आग इन अख़बारों को ! चलिए इस बार गर्मियों में काश्मीर चला जाय; लेकिन नहीं, ठहरिए, ठहरिए ; सम्पादक जी ! नशे में कह गया—वहाँ का भी तो बुरा हाल है, आज मैंने पत्रों में पढ़ा है, वहाँ भी पुस्तकें ज़ब्त होने लगी हैं—और आप जैसे कई लोग जेल में डाल दिए गए हैं ! फिर कहाँ चलिएगा ? कोई ऐसी जगह ढूँढ़ कर लिखिए, जहाँ न "भविष्य" जाता हो और न 'चाँद'—पर ऐसी जगह है कौन ? तो चलिए चित्रकूट के जङ्गलों में चला जाय; जहाँ एक बार श्रीरामचन्द्र महाराज को भी जाना पड़ा था, याद है वह ज़माना—

चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर!
तुलसीदास प्रभु चन्दन रगड़े, तिलक देत रघुबीर !!

सम्पादक जी ! एक बात और कीजिए, प्रेस-ऑर्डिनेन्स के विरोध-स्वरूप अपना छापाख़ाना लॉर्ड इर्विन के नाम लिख दीजिए। बेचारे भारतवर्ष की इतनी अधिक सेवा करके जा रहे हैं, घर के लोग पूछेंगे ही, कि 'सोने की चिड़िया' वाले देश से क्या कमा कर लाए ? यदि बेचारों के पास थोड़ी सी पूँजी बनी रहेगी, तो वहाँ कमा-खायँगे, नहीं तो सिवा 'मटरगश्ती' के, बेचारे वहाँ करेंगे क्या ? कार-बार सब वैसे ही चौपट हो गया है; लगान वग़ैरह से थोड़ा-बहुत 'टॉप-इन्कम' का सहारा था, वह अपने राम 'ज्ञान-चक्षु' से देख रहे हैं, जाने चाहता है, फिर आख़िर ये बेचारे करेंगे ही क्या ? विलायती कपड़ों के व्यवसाय में केवल थोड़ा-बहुत सहारा रह गया है, वह भी ख़ुदा कलकत्ते के मारवाड़ी सेठों को सलामत रक्खे, नहीं तो यार लोग कहीं के न रहते—'न दीन के, न दुनिया के।' यह बेचारे मारवाड़ी भाइयों के 'जीव-दया' वाले अटल सिद्धान्त का ही फल है, कि यार लोग आज भी गुलछर्रे उड़ा रहे हैं, नहीं तो न जाने मुक़द्दर अब तक क्या दिखाता। हरे, हरे ! सम्पादक जी, अपने राम तो बेचारों की हालत देख कर एक बार ही सिहर उठते हैं। यदि आपमें परोपकार का कुछ भी अंश शेष है, जिसकी आशा अपने राम को नहीं है—तो प्रतिज्ञा कीजिए कि आज से आप केवल विदेशी वस्त्रों और वस्तुओं का ही प्रयोग करेंगे। अपने राम ने तो लल्ला की महतारी के सर पर दोनों हाथ धर कर शपथ खा ली है, कि अब जब कभी मिर्ज़ई बनवाने की नौबत आई, जिसकी बहुत कम सम्भावना है—तो ख़ास वलायती कपड़ा ख़रीदेंगे, और वह भी उसी मारवाड़ी मित्र से, जो उस दिन रात को कटकटाती हुई सर्दी में लावारिस बच्चे की तरह भटकता हुआ मिला था ; नहीं तो अर्द्ध-नग्न अवस्था में ही शेष जीवन बिता देंगे ! कहिए आपने क्या निश्चय किया !

(३४वें पृष्ठ का शेषांश)

"महाराज का और मेरा शरीर कोई शत्रु न छुए, उसकी अन्त्येष्टि कोई ब्राह्मण करे। देखते हो—मेरे सब वीर स्वर्ग जा चुके !"

"महारानी की इच्छा पूर्ण होगी"

"धन्यवाद, शत्रु-श्रेष्ठ"

(वही कटार सीने में मार कर महाराज की लोथ पर जा गिरती है।)

* * *

सम्पादक जी, आपको क़सम है मेरी इस परिपक्क बुढ़ौती की, जैसे ही ज़मानत माँगी जाय, १) रु० का इलाहाबादी अमरूद (सफ़ेदा) ख़रीद कर भेजिएगा और उसी पार्सल में चित्रकूट वाला टाइमटेबुल रख दीजिएगा, ताकि मैं ठीक समय पर आपसे मिल सकूँ—कुशल-क्षेम लिखते रहिएगा !

भवदीय,

—विजयानन्द (दुबे जी)

पुनश्चः—

सम्पादक जी ! अभी-अभी मद्रास के एक बड़े भारी ज्योतिषी मुझसे मिलने आए थे, मैंने उनसे वही मसला पूछा, जिसकी आजकल मुझे चिन्ता है। उन्होंने जो कुछ कहा, वह समझ में आने वाली बात थी—उन्होंने मेरे कमरे में से लल्ला की महतारी को बाहर निकाल कर, सारे दरवाज़ों को बन्द करके, मेरे कान में धीरे से—बहुत धीरे से कहा है, कि "जिस तरह 'मोहमडन ला' में कहा गया है, कि यदि कोई मुसलमान-पति सोते-सोते तीन बार 'तलाक़, तलाक़, तलाक़' कह दे, तो 'तलाक़' हो जाता है। ठीक उसी प्रकार जिस समय लाट-साहब की ज़बान से 'ऑर्डिनेन्स' निकले—उसी समय से वह पास समझा जाता है—चाहे ऑर्डि-

पूँजी भी गई घर की बेटे की पढ़ाई में !

[कविवर "बिस्मिल" इलाहाबादी]

"फ़ादर" का हुआ नुक़सान इस फ़र्ज़-अदाई में,
पूँजी भी गई घर की, बेटे की पढ़ाई में !
मज़लूम की ख़ामोशी, फ़रियाद से बढ़ कर थी,
मशहूर हुआ ज़ालिम, वह सारी ख़ुदाई में !
आएँगे "डिनर" खाने, अङ्गरेज़ यहाँ शब को,
मसरूफ़ हूँ मैं दिल से, बँगले की सफ़ाई में !
हिन्दू से कोई पूछे, मुसलिम से कोई पूछे,
मिल जायगा क्या तुमको, आपस की लड़ाई में ??
क्या-क्या न सितम तोड़े, बन्दों ने ख़ुदाई पर !
क्या-क्या न ख़ुदाई की "यूरुप" ने ख़ुदाई में !!
'बिस्मिल' की नसीहत से, मिल-जुल के रहें बाहम,
अहबाब न उभरेंगे, आपस की लड़ाई में !

* * *

नेन्स किसी भी प्रकार का हो; और तुरन्त काम में लाया जाने लगता है। मैंने भी धीरे से ज्योतिषी जी का कान पकड़ कर पूछा, कि "फिर 'प्रेस-ऑर्डिनेन्स' अब तक काम में क्यों नहीं लाया गया ?" पहले तो वह बुक्की फाड़-फाड़ कर हँसते रहे, फिर उन्होंने मुझे धीरे से समझाया कि लॉर्ड इर्विन ने प्रेस-ऑर्डिनेन्स पास तो कर दिया, लेकिन बाबा आदम, यानी 'वलायती महाप्रभुओं' ने तार देकर इसे काम में लाने से रोक दिया—उनका कहना है, कि "एक ऑर्डिनेन्स दूसरी बार पास नहीं हो सकता, नहीं तो घृणा और भी फैल जायगी, इसलिए दस-पाँच दिन और सब्र करो, एसेम्बली में क़ानून ही क्यों नहीं बनवा लेते, सदा का टण्टा ही जाता रहे।" सो सम्पादक जी, इसीलिए यह ऑर्डिनेन्स अभी काम में नहीं लाया जा रहा है, और आप भी चैन की बंसी बजा रहे होंगे। लेकिन देखिए यह बात बहुत गुप्त है, किसी से कहिएगा मत ! नहीं तो व्यर्थ ही में चलते-चलाते हमारे परम शुभचिन्तक लॉर्ड इर्विन महाशय की बदनामी हो जायगी, समझे !

—विजयानन्द (दुबे जी)

* * *

इन्द्रप्रस्थ गर्ल्स स्कूल और कॉलेज

[श्री० नवीनचन्द जी, बी० ए०]

भारतवर्ष में शिक्षित मनुष्यों की संख्या ज्यों-ज्यों बढ़ती जा रही है (दुर्भाग्यवश यह संख्या बहुत ही धीरे-धीरे बढ़ रही है), त्यों-त्यों स्त्री-शिक्षा के अभाव के कारण उत्पन्न होने वाली बुराइयों का रूप अधिकाधिक भयावह होता जा रहा है। पति महाशय बी० ए०, एल्-एल्० बी० पास सुयोग्य वकील हैं, तो पत्नी महाशया चक्की चलाने में बी० ए० और गोबर पाथने में एल्-एल्० बी० परीक्षोत्तीर्ण फूहड़ गृहस्वामिनी हैं ! इस प्रकार की अनमेल और हास्यास्पद जोड़ियों का भारतवर्ष में अभाव नहीं है। इससे उत्पन्न होने वाली बुराई भी प्रत्यक्ष है। कोई बी० ए० अथवा एम० ए०, एल्-एल्० बी० साहब अपनी अपढ़ पत्नी के फूहड़पन से ऊब कर दूसरा विवाह कर लेते हैं, तो कोई दुराचार का मार्ग पकड़ते हैं। दोनों अवस्थाओं में अशिक्षित पत्नी का सर्वनाश ही होता है। यह मानी हुई बात है कि पत्नी जब तक विद्या और बुद्धि में पति के समान न होगी, तब तक पति उसको अपनी अर्द्धाङ्गिनी और सहधर्मिणी किसी भी प्रकार नहीं समझ सकता। इस स्वाभाविक नियम के विरुद्ध शिकायत करना मूर्खता है। प्राकृतिक नियमों को मान कर चलने से ही मनुष्य अपनी परिस्थिति का स्वामी बन सकता है, अन्यथा नहीं।

पति-पत्नी की जोड़ी मिलाने में यदि विवेक से काम लिया जाय तो भारतीय समाज की बहुत सी समस्याएँ अनायास ही हल हो सकती हैं। इसके लिए स्त्री-शिक्षा की सब से बड़ी आवश्यकता है। मूर्ख पुरुषों के लिए देश में मूर्खा स्त्रियों का अभाव नहीं है; पर शिक्षित पुरुषों के योग्य स्त्रियों का मिलना बहुत ही कठिन हो गया है। पुरुषों की बराबर संख्या में ही जब तक स्त्रियाँ भी शिक्षित नहीं की जायँगी तब तक यह समस्या हल नहीं हो सकती। स्त्रियों की शिक्षा का क्या स्वरूप होना चाहिए, इस विषय पर मतभेद हो सकता है; किन्तु इसमें कोई शङ्का नहीं कि समाज में यदि पारिवारिक शान्ति की स्थापना करना अभीष्ट है, तो स्त्रियों के लिए किसी न किसी प्रकार की शिक्षा का प्रबन्ध करना ही पड़ेगा। आज पाठकों को हम एक ऐसी संस्था का परिचय देना चाहते हैं, जो अपनी परिस्थिति के अनुसार स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही है।

दिल्ली का इन्द्रप्रस्थ हिन्दू गर्ल्स स्कूल और इण्टरमीजियट कॉलेज एक ऐसी संस्था है, जिसके लिए भारतवासी अभिमान कर सकते हैं। इस स्कूल ने आज से २५ वर्ष पहले एक भाड़े के मकान में केवल ९ लड़कियों को लेकर अपना कार्य आरम्भ किया था; पर चौथाई शताब्दी के अथक परिश्रम और निरन्तर अध्यवसाय के बाद आज यह स्कूल एक प्राइमरी पाठशाला की स्थिति से उठ कर इण्टरमीजियट कॉलेज की श्रेणी तक पहुँच गया है। जिस स्कूल में आरम्भ में केवल नौ लड़कियाँ पढ़ती थीं, उसमें आज ५५० से अधिक लड़कियाँ शिक्षा पा रही हैं। उपयुक्त स्थान का अभाव, आर्थिक कठिनाइयाँ तथा प्रोत्साहन का अभाव आदि अनेक कठिनाइयों के होते हुए भी स्कूल के प्रबन्धकों ने जिस उत्साह और तत्परता का परिचय दिया है, उसके लिए यह संस्था बधाई की पात्र है। स्कूल के प्रबन्धकों में जो सब से प्रशंसनीय गुण है, वह यह है कि स्कूल के इतनी उन्नति कर चुकने के बाद भी वे सन्तुष्ट होकर नहीं बैठ गए हैं; वे अपनी संस्था को इण्टरमीजियट कॉलेज की श्रेणी से भी ऊपर उठा कर उपाधि विद्यालय (Degree College) के पद तक पहुँचाने का प्रयत्न कर रहे हैं। स्कूल ने गत २५ वर्षों में किस प्रकार धीरे-धीरे, किन्तु निश्चित गति से उन्नति की है, इसका इतिहास बहुत ही मनोरञ्जक है।

श्रीमती एनी बिसेण्ट के स्त्री-शिक्षा-सम्बन्धी विचारों से प्रोत्साहित होकर स्वर्गीय लाला बालकिशन दास जी ने इस स्कूल की स्थापना की। आज दिल्ली नगरी को इस बात पर गर्व हो सकता है कि उसके लगभग प्रत्येक मुहल्ले में लड़कियों का एक स्कूल है; किन्तु जिस समय लाला बालकिशन जी ने इस स्कूल की स्थापना की थी, उस समय दिल्ली में हिन्दुओं के द्वारा स्थापित अपने ढङ्ग की यह सर्व-प्रथम संस्था थी। उस समय का कट्टर हिन्दू-समाज स्त्री-शिक्षा के नाम से ही घबराता था। जनता की सहानुभूति होने के कारण प्रबन्धकों को क़र्ज़ लेकर स्कूल का काम चलाना पड़ता था। सन् १९०७ ई० में जिस समय स्कूल के संस्थापक लाला बालकिशन दास जी की मृत्यु हुई, उस समय स्कूल पर लगभग एक हज़ार रुपयों का क़र्ज़ था। तब स्कूल में केवल ८२ लड़कियाँ पढ़ती थीं। धीरे-धीरे विद्यार्थिनियों की संख्या बढ़ने लगी और उनके लिए स्थान की कमी का अनुभव होने लगा। बहुत दिनों तक स्कूल का काम इसके उदार संस्थापक के मकान में चलाया गया। इसके बाद जब स्कूल के लिए नया मकान बन गया, तब स्कूल उसमें चला गया।

सन् १९११ ई० में यह स्कूल मिडिल कक्षा तक पहुँच गया और जिन लड़कियों की इच्छा होती थी, उन्हें अङ्गरेज़ी भी पढ़ाई जाने लगी। सन् १९१३ ई० में प्रथम बार इस स्कूल की ३ लड़कियाँ मिडिल की परीक्षा में सम्मिलित हुईं और तीनों उत्तीर्ण हुईं। विद्यार्थिनियों की संख्या जब ३०० तक पहुँच गई, तब एक छात्रावास की आवश्यकता प्रतीत होने लगी और अगले ही वर्ष एक छोटे से छात्रावास का प्रबन्ध भी हो गया। सन् १९१६ में छोटे-छोटे बच्चों की शिक्षा के लिए इस स्कूल में किण्डरगार्टन की प्रणाली का प्रवेश कराया गया और मिस जेम्स बड़ी ही योग्यतापूर्वक इस प्रणाली से लड़कों को शिक्षा देने लगीं। दुर्भाग्यवश सन् १९२६ ई० में मिस जेम्स की मृत्यु हो जाने से स्कूल को बड़ी हानि पहुँची और आज तक उनके स्थान की पूर्ति नहीं हो सकी है। सन् १९१६ ई० में स्कूल को हाई स्टैण्डर्ड तक पहुँचाने के अभिप्राय से धन इकट्ठा करने का एक कार्य-क्रम प्रस्तुत किया गया। अगले दो ही वर्षों में प्रबन्धकों और सहायकों के उत्साह और तत्परता के फल-स्वरूप आवश्यक धन एकत्र हो गया और सन् १९१८ ई० में प्रथम बार एक विवाहित लड़की ने इस स्कूल से मैट्रिकुलेशन की परीक्षा पास की। इसके बाद इस होनहार कन्या ने बनारस हिन्दू-युनिवर्सिटी से बी० ए० की उपाधि प्राप्त की और आजकल वे पटना में स्त्री-शिक्षा के क्षेत्र में बहुत ही प्रशंसनीय कार्य कर रही हैं।

सन् १९१७ ई० में स्कूल की सुयोग्य प्रिन्सिपल मिस गमाइनर के राजनीतिक कार्यों से असन्तुष्ट होकर सरकार ने स्कूल को सहायता देना बन्द कर दिया; पर स्कूल के प्रबन्धक लेश-मात्र भी हतोत्साह नहीं हुए। वे स्कूल का काम पहले की भाँति ही सफलतापूर्वक चलाते रहे। सन् १९२२ ई० में कई प्रसिद्ध और प्रतिष्ठित महानुभावों ने स्कूल का निरीक्षण किया और स्कूल का काम देख कर वे बहुत प्रसन्न भी हुए। दर्शकों में हिज़ हाइनेस महाराज कोटा, हिज़ हाइनेस महाराज झाला-

वाद, श्रीमती एनी बिसेण्ट, लोकमान्य तिलक, सेठ घनश्यामदास जी बिड़ला आदि के नाम विशेष उल्लेखनीय हैं। सन् १९२४ ई० में यह स्कूल इण्टरमीजियट कॉलेज के पद तक पहुँच गया। सरकार ने इसकी सेवाओं से प्रसन्न होकर सन् १९२१ ई० में इसे पुनः सहायता देना आरम्भ कर दिया था और भारत-सरकार ने हाल ही में कुछ विशेष शर्तों पर इसे अपना "अलीपुर हाउस" नामक विशाल भवन देने का भी वचन दिया है। संस्था के प्रबन्धकगण इस मकान में कॉलेज-विभाग का प्रबन्ध करना चाहते हैं।

स्कूल में विज्ञान तथा गृहशिल्प की शिक्षा का भी प्रबन्ध है। लड़कियों को घरेलू आवश्यकता की सभी बातों की शिक्षा दी जाती है। भोजन बनाना, कपड़े पर बेल-बूटा काढ़ना, सिलाई करना, रोगियों की सेवा, प्रारम्भिक चिकित्सा, शरीर-विज्ञान और स्वास्थ्य-विज्ञान से लेकर कपड़े धोना तथा बरतन साफ़ करने तक की शिक्षा का बहुत ही उत्तम प्रबन्ध किया गया है। इस स्कूल का परीक्षा-फल विशेष रूप से अच्छा होता है। इस समय तक यहाँ की पढ़ी हुई बहुत सी लड़कियाँ युनिवर्सिटी की डिग्री प्राप्त कर चुकी हैं और आज भी पञ्जाब तथा यू० पी० की प्रायः सभी युनिवर्सिटियों में यहाँ की लड़कियाँ पढ़ रही हैं। स्कूल की प्रिन्सिपल मिस गमाइनर हाल ही में छुट्टी लेकर ऑस्ट्रेलिया गई हैं और उनके स्थान पर इस स्कूल की ही पढ़ी हुई एक प्रतिभाशालिनी छात्रा कुमारी राजदुलारी शर्मा, बी० ए० (ऑनर्स) बड़े मनोयोग से प्रिन्सिपल का कार्य सञ्चालन कर रही हैं। इस स्कूल की स्थापना के एक वर्ष बाद ही मिस गमाइनर ऑस्ट्रेलिया से भारतवर्ष आई थीं और उसी समय उन्होंने स्कूल के प्रिन्सिपल का कार्य-भार स्वीकार किया था। उस समय से लेकर अब तक बराबर मिस गमाइनर जिस उत्साह और लगन से इस स्कूल की सेवा करती आ रही हैं, उसके लिए वे भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं।

भारत की राजधानी दिल्ली जैसी विशाल नगरी में स्त्रियों के लिए एक पृथक डिग्री कॉलेज की बहुत ही आवश्यकता है। स्वर्गीय लाला लाजपतराय जी ने इस आवश्यकता की ओर सरकार का ध्यान भी आकर्षित किया था। इन्द्रप्रस्थ स्कूल के सुयोग्य सञ्चालकों ने भी इस आवश्यकता का अनुभव किया है और वे अपने कॉलेज-विभाग में बी० ए० तक की पढ़ाई जारी करने का प्रयत्न कर रहे हैं। विगत २५ वर्षों में उन्होंने जिस परिश्रम और उत्साह से स्कूल का काम चलाया है, उसे देखते हुए हम विश्वासपूर्वक कह सकते हैं कि उनकी शुभाकांक्षा अवश्य ही सफलीभूत होगी। स्कूल की प्रशंसनीय सफलता का अधिकांश श्रेय इसकी सुयोग्य प्रिन्सिपल मिस गमाइनर तथा उत्साही प्रबन्धकों, विशेष कर प्रबन्ध-समिति के अध्यक्ष रायबहादुर लाला सुल्तानसिंह जी को है।

एक ऐसी उपयोगी संस्था के सामने आर्थिक कठिनाइयों का उपस्थित होना वास्तव में देश की दुरवस्था और स्त्री-शिक्षा के प्रति जनता की उदासीनता का ही परिचायक है। सहृदय पाठकों को यह जान कर कष्ट हुए बिना नहीं रह सकता कि इस संस्था की उपयोगिता ज्यों-ज्यों बढ़ती जा रही है, त्यों-त्यों इसकी आर्थिक कठिनाइयाँ भी वृहत रूप धारण करती जा रही हैं। सूद की दर के गिर जाने और व्यापार की मन्दी के कारण धनाढ्य महानुभावों से प्राप्त होने वाले चन्दे और सहायता में कमी हो जाने के कारण एक तो इस संस्था की मासिक आय योंही कम हो गई थी, उस पर स्थानीय म्युनिसिपल-कमिटी से मिलने वाली सहायता के बन्द हो जाने के कारण उसमें ३००) मासिक की और भी कमी हो गई है। एक ओर संस्था की आय इस प्रकार घटती जा रही है, दूसरी ओर संस्था के कार्यों का विस्तार होने के कारण उसके व्यय में वृद्धि हो रही है। अभी "अलीपुर हाउस" को प्राप्त करने तथा उसका खज़ाना लगान चुकाने के लिए, सरकार ने जो ६०,०००) की सहायता दी है, उसके अतिरिक्त १,२५,०००) की और आवश्यकता है। यह धन एकत्र करने के लिए एक योजना प्रस्तुत की गई है, जिसका विवरण इस प्रकार है। १६ महानुभावों से, प्रत्येक से ५,०००) के हिसाब से ८०,०००) और ६० महानुभावों से, प्रत्येक से ५००) के हिसाब से ४५,०००); कुल १,२५,०००) चन्दे से एकत्र किया जाय। सौभाग्यवश पाँच-पाँच हज़ार देने वाले १६ महानुभावों में ११ और पाँच-पाँच सौ रुपयों का दान करने वाले ९० सज्जनों में ६१ की सहायता अथवा वचन प्राप्त हो गए हैं। धनवान महानुभावों का यह पवित्र कर्त्तव्य है कि वे शेष आवश्यकता की पूर्ति शीघ्र करके इस परमोपयोगी संस्था को आर्थिक कठिनाइयों से मुक्त करें।

स्कूल ने हाल ही में अपनी रजत-जयन्ती का उत्सव बड़े समारोह और सफलता के साथ मनाया है। हम आशा करते हैं कि इस संस्था को इसी प्रकार अनेक रजत और स्वर्ण-जयन्तियाँ मनाते हुए दीर्घ काल तक समाज की सेवा करते रहने का सौभाग्य प्राप्त होगा।

* * *

(४०वें पृष्ठ का शेषांश)

संसार की शान्ति तथा सुख के लिए यह आवश्यक है, कि किसी भी देश की विदेशी नीति इतनी गुप्त न रक्खी जावे, कि वहाँ की जनता अपने शत्रु तथा मित्रों तक को न जान सके। जहाँ प्रजातन्त्र है, वहाँ जनता को राष्ट्र की नीति को जानने का पूरा अधिकार है। राष्ट्र के शासकों को चाहिए, कि वे बिना उसकी इच्छा के कभी भी ऐसी सन्धियाँ न करें। यदि इस सिद्धान्त को कार्य-रूप दिया गया, तो आशा है कि निकटवर्ती-भविष्य में संसार में अवश्य शान्ति का साम्राज्य रहेगा। यदि विदेशी नीति पर जनता को अधिकार दिया गया, तो निशस्त्रीकरण आन्दोलन भी सफल हो सकेगा। सामान्य जनता को युद्ध से बहुत घृणा हो गई है, वह चाहती है कि युद्ध सम्बन्धी सारी चीज़ें इस संसार से उठ जावें। यदि यूरोप के वर्तमान प्रजातन्त्र राष्ट्र वास्तव में प्रजातन्त्र होते, तो हम विश्वासपूर्वक कह सकते थे कि निकटवर्ती-भविष्य में युद्ध होने की सम्भावना बिलकुल नहीं है।

पर दुर्भाग्य से वे आदर्श प्रजातन्त्र नहीं हैं। जनता की इच्छा का वे पूरी तरह से पालन नहीं करते हैं। तब भी जनता बहुत कुछ कर सकती है। उसे चाहिए कि वह अपने अधिकारों को बलिष्ठ करने का प्रयत्न करे और भविष्य में कभी भी युद्ध-प्रेमियों का साथ न दे। सन्धि के दिन उन्हें यह याद करना चाहिए कि यदि गत युद्ध में मरे हुए मनुष्य दस-दस की पंक्ति बना कर चलें, तो रात-दिन चल कर एक निश्चित स्थान से निकलने के लिए उन सबको चार महीने लग जायेंगे !!!

* * *

तरलाग्नि

[प्रोफ़ेसर चतुरसेन जी शास्त्री]

(गताङ्क से आगे)

वह तरलाग्नि!

निःशङ्क प्रवाहित होकर अप्रतिहत गति से भारत के गम्भीर गर्भ में व्याप्त हो गई। करोड़ों मनुष्यों की ज्वलन्त आकांक्षाएँ भस्म हुईं।

करोड़ों मनुष्यों के आत्म-बलिदान के मनोरथ पूर्ण हुए।

करोड़ों मनुष्यों के बद्ध मस्तिष्क खुले।

करोड़ों मनुष्यों ने अपने आपको सँभाला, उस अलौकिक अग्नि-समुद्र के उज्ज्वल आलोक में बहुतों ने बहुत-कुछ देखा।

पराई विद्या के बैल—

* * *

पराई विद्या के बैल—

और पराई बुद्धि के दलाल, जो अर्ध शताब्दी तक अपने को प्रकाण्ड पण्डित समझ रहे थे।

अपने आप पर लज्जित हुए।

उन्होंने तरलाग्नि में स्नान कर प्रायश्चित्त किया।

गौरवशालिनी महिलाएँ—जो नैतिक पतन के पथ पर दूर तक यात्रा करके मात्र प्रदर्शन की वस्तु हो रही थीं—कर्मठ माता और पत्नियाँ बनीं।

यह ज्योतिर्मय अग्नि-समुद्र में स्नान का चमत्कार था।

कोकिला—

* * *

कोकिला—

जो अविकसित वसन्त के प्रस्फुटित रसाल-कुसुमों के सौरभ से मत्त होकर सदा कुहू-कुहू करती थी।

इस, इस अग्नि-रूप पर चकोरी की तरह लोट-पोट हो गई।

सागर के हृदय को विदीर्ण करके सीलोन और अफ़्रीका का सुदूर आकाश उसकी पञ्चम तान पर कम्पायमान हुआ।

वह पौरुषमय स्त्रीत्व भारत में दर्शनीय था।

सहस्रों नेत्र कौतूहल से देख रहे थे।

तेज—

* * *

(क्रमशः)

["एक शान्ति का उपासक"]

विगत १२ नवम्बर को, महायुद्ध का सन्धि-दिवस मनाया गया था ! संसार के सब राष्ट्रों ने इस-में भाग लिया, पर क्या केवल सन्धि-दिवस मनाने से हम संसार को सुखी रख सकते हैं ? हम गत युद्ध में मरे हुए वीरों की याद करते हैं और उन्हें मान देते हैं, पर इसके साथ ही साथ संसार के राजनीतिज्ञों को चाहिए, कि वे जीवित जनता की भलाई पर ज़्यादा ध्यान रक्खें। उसे फिर से युद्ध में फँसने से बचावें।

गत महायुद्ध से यूरोप की साधारण जनता ने जो सबक़ सीखा है, वह उसे बहुत दिनों तक याद रहेगा। परन्तु यूरोप के राजनीतिज्ञ अभी तक चौकन्ने नहीं हुए हैं। जनता ने जो वियोग, दुःख, आर्थिक कष्ट तथा शारीरिक पीड़ा पाई है, उससे वह युद्ध से घृणा करने लगी है। परन्तु राजनीतिज्ञों की बात दूसरी है, वे अभी भी पुरानी युद्ध-वीरता तथा राष्ट्र-गौरव आदि भावों से प्रेम रखते हैं। यूरोप के एक प्रसिद्ध यात्री जॉनगिबन्स, जिन्होंने हाल ही में यूरोप की पैदल यात्रा की है, लिखते हैं, कि "यूरोप में जहाँ-जहाँ मैं गया और जहाँ-जहाँ मैं बात कर सका, मुझे मज़दूर जातियों तथा मध्यम श्रेणी का एक भी ऐसा प्राणी नहीं मिला, जिसका हृदय गत महायुद्ध का स्मरण करके काँप न उठा हो। मुझे ऐसा कोई मनुष्य नहीं मिला, जो सदा ईश्वर से यह प्रार्थना न करता हो, कि उसके बच्चों को और बच्चों के बच्चों को भी भविष्य में युद्ध में भाग न लेना पड़े। यूरोप की साधारण जनता अखण्ड शान्ति चाहती है।

"कहीं-कहीं आपको बहुधा कोई श्रमजीवी, सराय-वाला अथवा स्कूल-मास्टर मिलेगा—वे सब एक ही कथा सुनावेंगे। 'युद्ध में इतने पति, इतने भाई, इतनी स्त्रियाँ व बच्चे मारे गए।' युद्ध-स्थलों में कितने ही सुखी घरों का नाश हुआ है, कितने ही सुखी कुटुम्ब मिट्टी में मिल गए हैं। कई और तरह की भी बातें सुनने में आती हैं। कई पुरुष मरे नहीं हैं, पर युद्ध में उनकी आत्मा का नाश हो गया है। ऑस्ट्रिया का एक लड़का युद्ध में शत्रु-दल द्वारा पकड़ा गया। वह चार साल तक शत्रु का बन्दी रहा। उसके कुटुम्ब वाले मर-घुट कर किसी तरह पैसा इकट्ठा कर करके, पाई-पाई बचा कर, उसके पास धन भेजते रहे। पर चार साल तक ख़राब सङ्गति में रहने के कारण वह चोर और साथ ही जुआरी हो गया। अब वह कई ख़राब कामों द्वारा अपना पेट भरता है। उसकी माँ रोती है कि यह युद्ध में क्यों नहीं मार डाला गया ! ऐसी कई कहानियाँ सुनाई पड़ती हैं। ऐसे ही कई आत्म-पतन के क़िस्से स्त्रियों के विषय में भी सुनाई देते हैं।

"युद्ध में जिनके अङ्ग-भङ्ग हो गए हैं, ऐसे लङ्गड़े-लूलों की संख्या का तो अन्दाज़ लगाना तक मुश्किल है। फ़ान्स तथा इटली की ट्राम-गाड़ियों तथा रेलगाड़ियों में युद्ध के लूले-लङ्गड़े सैनिकों के लिए अलग टिकट-घर रहता है। वहाँ की गाड़ियों पर ऐसे मनुष्य सैकड़ों की संख्या में मिलते हैं। उनकी दशा कितनी दयनीय है। गत युद्ध में करोड़ों मनुष्यों ने प्राण खोए और करोड़ों अभी भी अधमरी अवस्था में जीवित हैं।

"ऑस्ट्रिया के कई भागों में युद्ध में आहत लोगों की संख्या बहुत ज़्यादा होने के कारण, उन लोगों को इतनी कम पेन्शन मिलती है, कि वे उससे जीवित नहीं रह सकते। इसलिए वहाँ की सरकार ने उन्हें इतवार को गिरजों के सामने भीख माँगने की आज्ञा दे दी है। पर वे कुछ बोल नहीं सकते। जब आप किसी गिरजे से लौटते हैं, आपको हज़ारों लूले-लङ्गड़े चुपचाप बैठे मिलते हैं। यह गत महायुद्ध का पुरस्कार है। ये किसी के पति हैं, किसी के पुत्र, किसी के भाई और किसी के पिता। इस शोचनीय दशा को देखते हुए क्या उनके सम्बन्धी फिर कभी युद्ध छेड़ने की इच्छा रख सकते हैं ?"

यह रही सामान्य जनता की बात, पर बड़े-बड़े राजनीतिज्ञों की बात अलग है। उनके हृदय को जानना अति कठिन है। न वे ये सब दृश्य देखते हैं, न उन्हें देख कर उनका हृदय ही पसीजता है। वे आत्म-सम्मान तथा युद्ध-वीरता के रङ्ग में रँगे रहते हैं। सत्य को छिपाना और अपने हृदय के भावों को न दर्शाना, यही आजकल के राजनीतिज्ञों का आदर्श है !

जब गत महायुद्ध छिड़ा, इङ्गलैण्ड के लोगों ने यह जानने का बहुत प्रयत्न किया, कि इसमें उनका देश भाग लेगा या नहीं, पर यह बात बिलकुल छिपा कर रक्खी गई। इङ्गलैण्ड की जनता को धोखा दिया गया। फिर बाद को झूठे-मूठे कारण बता कर सारा देश युद्धाग्नि में झोंक दिया गया ! तारीख़ १० मार्च, १९१३ को इङ्गलैण्ड में किसी को भी युद्ध का ध्यान न था। कुछ पार्लामेण्ट के सदस्यों को अवश्य सन्देह हुआ था और उन्होंने इस विषय पर प्रश्न भी किए थे। लॉर्ड ह्यू सेसिल ने प्रधान सचिव से पूछा कि "इङ्गलैण्ड की जनता में यह बड़े ज़ोरों की ख़बर है कि इङ्गलैण्ड के मन्त्रि-मण्डल ने फ़ान्स को सहायता देने का वचन दिया है। क्या यह ख़बर सच है ?" प्रधान-सचिव मिस्टर एसक्विथ ने कहा कि "यह ख़बर बिलकुल ग़लत है।" थोड़े ही दिनों बाद सर विलियम बाईल्स ने प्रधान-सचिव से यही प्रश्न किया। प्रधान सचिव ने उत्तर में कहा कि "बार-बार कहा जा चुका है, कि इङ्गलैण्ड ने किसी भी देश के साथ ऐसा सम्बन्ध नहीं किया है कि जिससे उसे किसी युद्ध में सहायता देनी पड़े।"

पर ये सब बातें झूठ थीं। अब सारे संसार को मालूम है, कि वे फ़ान्स को सहायता देने का वचन दे चुके थे। और ३ अगस्त, १९१४ को सर एडवर्ड ग्रे ने पार्लामेण्ट में सुनाया कि अपने देश के मान की रक्षा के लिए हमें फ़ान्स को सहायता देना पड़ेगा। हम लोग सन् १९०६ से फ़ान्स से सलाह कर रहे हैं और हमने उसे सहायता का वचन दे दिया है। कौन जान सकता है कि आज किस देश को किस वक़्त युद्ध में भाग लेना पड़े। जनता युद्ध से घृणा करती है, पर देश के शासक अभी तक युद्ध से नहीं थके हैं। कौन कह सकता है कि वे कैसे राजनीतिक षड्यन्त्रों में फँसे हों ?

(शेष मैटर ३९वें पृष्ठ के दूसरे कॉलम के नीचे देखिए)

आदर्श चित्रावली

THE IDEAL PICTURE ALBUM

The Hon'ble Justice Sir B. J. Dalal of the Allahabad High Court, says :

Dear Mr Saigal,

Your album is a production of great taste & beauty & has come to me as a pleasant surprise as to what a press in Allahabad can turn out. Moon worshipped & visit to the Temple are particularly charming pictures, life-like & full of details. I congratulate you on your remarkable enterprise & thank you for a present which has given & will continue to give me a great deal of pleasure.

Yours sincerely
B. J. Dalal.

The Hon'ble Mr. Justice Lal Gopal Mukerjea of the Allahabad High Court :

. . . The Pictures are indeed very good and indicate, not only the high art of the painters, but also the consumate skill employed in printing them in several colours. I am sure the Album ADARSH CHITTRAWALI will be very much appreciated by the public.

The Hon'ble Sir Grimwood Mears, Chief Justice Allahabad High Court :

. . . I am very glad to see that it is so well spoken of in the Foreign Press.

The Indian Daily Mail :

. . . The Album ADARSH CHITTRAWALI is probably the one of its kind in Hindi—the chief features of which are excellent production, very beautiful letterpress in many colours, and the appropriate piece of poem which accompanies each picture.

W. E. J. Dobbs, Esq., I. C. S., District Magistrate and Collector, Allahabad :

I am glad that Allahabad can turn out such a pleasing specimen of the printers art.

Sam Higginbottom, Esq., Principal Allahabad Agricultural Institute :

. . . I think it is beautifully done. Most of the guests who come into the Drawing room pick it up and look at it with interest.

A. H. Mackenzie, Esq., Director of Public Instruction, U. P. :

. . . I congratulate your press on the get-up of the Album, which reveals a high standard of fine Art Printing.

मूल्य केवल ४) रु०
डाक-व्यय अतिरिक्त

व्यवस्थापक 'चाँद' कार्यालय, चन्द्रलोक, इलाहाबाद

Price Rs. 4/- Nett.
Postage extra.

Registered No. A—2085

Printed and Published by R. SAIGAL—(Editor), at the Fine Art Printing Cottage,
28, Edmonstone Road, Chandralok—Allahabad.